राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण

पटना और रांची से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 8 अकं : 600 पटना (बिहार),बुधवार , 30 अक्टूबर 2024 पेज - 12 मूल्य: 1 R.N.I. No:- BIHHIN/ 2016/72168

एक नजर

चट्टी बरियातू कोयला खनन परियोजना के द्वारा वोटर को जागरूकता अभियान का आयोजन किया

संवाददाता: केरेडारी

केरेडारी चट्टी बरियातू कोयला खनन परियोजना ने मंगलवार को पगार हाई स्कूल में रश्एएढ (सिस्टमैटिक वोटर्स एजुकेशन एंड इलेक्टोरल पार्टिसिपेशन) के तहत मतदाता जागरूकता अभियान का आयोजन किया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री मिथलेश कुमार ने शिक्षकों और छात्रों को मतदाता की शपथ दिलाई। परियोजना ने स्कूल के बच्चों और शिक्षकों को मतदान के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए रंगोली कला के माध्यम से किए गए प्रयासों के लिए दिल से धन्यवाद दिया। हजारीबाग जिला प्रशासन के निर्देश पर, चट्टी बरियातू कोयला खनन परियोजना हजारीबाग और बड़कागाँव में विभिन्न मतदाता जागरूकता अभियान आयोजित कर रही है। रश्एएढ भारत के निर्वाचन आयोग का एक प्रमुख कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य चुनावों में मतदाता शिक्षा और भागीदारी को बढ़ावा देना है। झारखंड में हजारीबाग विधानसभा क्षेत्र राज्य के चौबीस जिलों में से एक है. यहां 5 विधानसभा क्षेत्र- बरकट्ठा, बरही, बड़कागांव, मांडू और हजारीबाग। इसके साथ ही, सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत ह्लसत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धिह्व थीम पर पगार हाई स्कूल में बच्चों के बीच नारे लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह हर साल उस सप्ताह मनाया जाता है, जिसमें सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती (31 अक्टूबर) होती है।

नीरा यादव ने चलाया जन संपर्क अभियान, पक्ष में वोट की अपील

कोडरमा विजय यादव

चुनावी शंखनाद के बाद मंगलवार को कोडरमा विधायक ने कई गांवों का सघन जन संपर्क अभियान चला कर भाजपा के पक्ष में वोट मांगा। नीरा यादव ने लोहासिकर, बाघरेटोला, बेलगढ़ा, चिगलबर, सलैया, बेकोबर, खरखरो, डुमरडीहा, सौंदेडीह, पथलडीहा आदि ग्रामों में जन संपर्क अभियान चला कर अपने पक्ष में किए गए कार्यों के बदले वोट मांगा। गांवों में लोगों ने नीरा यादव को समर्थन करने का वादा किया। महिला और पुरुषों में विधायक के प्रति जोश और उमंग देखा गया। खास कर महिलाएं नीरा यादव को पुनः जीता कर हैट्रिक करने का आश्वासन दिया उनलोगों में गजब का उत्साह देखा गया । मौके पर नीरा यादव ने लोगों से मैं आपके समक्ष कई जनहित कार्यों को किया है उसी के बदले मेरी झोली में पुनः वोट देकर मेरी हाथों को मजबूत करें, तभी और कई विकास के अधूरे कार्य अगले कार्यकाल में पूरे कर पाएंगे। क्षेत्र भ्रमण के दौरान कोडरमा ग्रामीण मंडल अध्यक्ष सुनील पंडित, पूर्व उप प्रमुख विजय सिंह, दिनेश सिंह, पूर्व प्रमुख राजकुमार यादव, सुनील मंडल, संजीव यादव, प्रभात दास, पप्पू मंडल, मुखिया रमेश यादव, अर्जुन यादव, पंचायत समिति सदस्य बासुदेव यादव, मुखिया प्रतिनिधि सदानंद यादव, मिथलेश सिंह, मनोज यादव, दिलीप प्रसाद, दिनेश राणा, रंजीत पंडित, प्रकाश पांडे, अवधेश पांडे, अजय पांडे, शिबू राणा, बिनोद यादव, राजेश यादव, दर्शन शर्मा, पिंटू शर्मा, रामू साव, मुकेश मंडल आदि दर्जनो भाजपा कार्यकर्ता एवं सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित थे।

1.52 लाख बाढ़ पीड़ितों को 101 करोड़, CM नीतीश ने सीधे खाते में भेजा रुपया

विशेष संवाददाता द्वारा

पटना : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 1 अणे मार्ग स्थित 'संकल्प' में आयोजित कार्यक्रम में बाढ़ प्रभावित 1 लाख 52 हजार किसानों को डीबीटी (डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर) के द्वारा सीधे उनके खाते में कुल 101 करोड़ रुपए की राशि आज भेज दिया. इस वर्ष सितम्बर महीने में हुई बारिश एवं बाढ़ के कारण फसलों का काफी नुकसान हुआ था. क्षति के प्रतिवेदन के आधार पर हुआ ट्रांसफर : बाढ़ के कारण हुई क्षति का प्रतिवेदन सभी प्रभावित जिलों से प्राप्त करने के बाद कृषि इनपुट अनुदान योजना के अन्तर्गत प्रभावित किसानों को क्षतिपूर्ति की राशि राज्य सरकार द्वारा दी जा रही है. आज यह राशि प्रथम चरण के लिये वितरित की गयी है. बाकी प्रभावित किसानों को भी राशि जल्द ही वितरित की जायेगी. "बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लोगों को राज्य सरकार हरसंभव सहायता उपलब्ध कराती है. हमलोग आपदा पीड़ितों की सहायता के लिये लगातार तत्पर रहते हैं. आज प्रथम चरण में आयी बाढ़ से प्रभावित किसानों के खाते में राशि अंतरित की गयी है. शेष प्रभावित किसानों के खाते में राशि यथाशीघ्र अंतरित करायें."- नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री, बिहार 2 हेक्टेयर तक फसल क्षति का सरकार दे रही अनुदान : कार्यक्रम के दौरान कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से जानकारी देते हुए बताया कि गंगा एवं अन्य नदियों में जलस्तर बढ़ने के फलस्वरूप प्रथम चरण में आयी बाढ़ से 16 जिले के 66 प्रखण्ड और 580 पंचायत का कृषि क्षेत्र प्रभावित हुआ. अत्यधिक वर्षापात एवं कोसी, गंडक एवं बागमती सहित अन्य नदियों के जलस्तर के बढ़ने के फलस्वरूप दूसरे चरण में आयी बाढ़ के कारण 16 जिले के 69 प्रखण्ड और 580 पंचायतों का कृषि क्षेत्र प्रभावित हुआ. "प्रभावित प्रति किसान को सिंचित क्षेत्र के लिये 17 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर, असिंचित क्षेत्र के लिये 8500 रुपए प्रति हेक्टेयर तथा शाश्वत फसल के लिये 22 हजार 500 रुपए प्रति

हेक्टेयर का कृषि इनपुट अनुदान दिया जा रहा है. प्रति किसान अधिकतक दो हेक्टेयर के लिये अनुदान दिया जा रहा है."- संजय कुमार अग्रवाल, सचिव, कृषि विभाग रबी महा अभियान का शुभारंभ : इसके साथ मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आज 1, अणे मार्ग से रबी महाभियान- 2024-25 का शुभारंभ भी किया. इस अवसर पर किसान जागरुकता वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया. कार्यक्रम के दौरान चार कृषि ज्ञान वाहन एवं 18 किसान जागरुकता वाहनों को रवाना किया गया. क्या है लक्ष्य? : इस महाभियान में किसानों को रबी मौसम से संबंधित कृषि विभाग द्वारा संचालित योजनाओं की जानकारी दी जायेगी, साथ ही फसल अवषेष प्रबंधन एवं खेतों में फसल अवशेष को जलाने से मिट्टी एवं पर्यावरण को होनेवाले नुकसान के प्रति जागरूक किया जायेगा. किसानों को रबी फसलों की तकनीकी जानकारी, जैविक खेती को प्रोत्साहन, मौसम के अनुकूल कृषि कार्यक्रम एवं फसल विविधिकरण से संबंधित जानकारी दी जायेगी. किसानों को चतुर्थ कृषि रोड मैप के विभिन्न आयामों की भी जानकारी दी जायेगी. कार्यक्रम में दोनों उपमुख्यमंत्री भी थे मौजूद : बिहार में इस साल आई बाढ़ के कारण किसानों को फसल की काफी क्षति हुई है. कृषि विभाग के अधिकारियों के अनुसार 491 करोड़ के करीब फसल का नुकसान हुआ है, लेकिन सत्यापन होने के बाद ही किसानों को अगले चरण में राशि दी जाएगी. आज के कार्यक्रम में दोनों उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और विजय कुमार सिन्हा के साथ मुख्यमंत्री सचिवालय और कृषि विभाग के अधिकारी भी मौजूद थे.

2025 में फिर से नीतीश? बिहार में अगली पारी का बिगुल, विपक्षी खेमे में खलबली

विशेष संवाददाता द्वारा

पटनाः बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के सभी घटक दलों के नेताओं को एक साथ बैठाकर कई निशाने साध लिए। इसमें कोई शक नहीं है कि पिछले कई सालों से बिहार में सरकार किसी भी गठबंधन की रही हो लेकिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही रहे हैं।दरअसल, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को मुख्यमंत्री आवास में एनडीए की एक बैठक बुलाई थी। इस बैठक में एनडीए में शामिल घटक दलों के प्रमुख नेता शामिल हुए थे। इस बैठक में हालांकि पूर्व केंद्रीय मंत्री पशुपति कुमार पारस की पार्टी को आमंत्रित नहीं किया गया था। इस बैठक में नीतीश कुमार ने अगले साल होने वाला विधानसभा चुनाव उनके नेतृत्व में लड़ा जाएगा, इसके लिए उपस्थित सभी दलों की सहमति प्राप्त की। वैसे, इससे पहले भी भाजपा सहित अन्य दलों के नेता इससे संबंधित बयान देते रहते थे,

लेकिन बैठक में सभी ने एक स्वर में इसकी पुष्टि कर दी। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल कहते भी हैं कि नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही एनडीए 2025 का विधानसभा चुनाव लड़ेगी। उन्होंने यह भी कहा कि हम बेहतर समन्वय के साथ चुनाव मैदान में उतरेंगे, इसमें किसी को गलतफहमी नहीं पालनी चाहिए। इस बैठक के जरिये जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतीश कुमार ने विरोधियों को भी एनडीए के एकजुट होने की ताकत दिखाई। बैठक में एकजुटता पर सबसे अधिक जोर रहा और सभी ने एक स्वर में साझा कार्यक्रम चलाने और एनडीए के कार्यकताओं में बेहतर समन्वय बनाने की बात कही। बैठक में एनडीए के नेताओं को बिहार की 243 विधानसभा सीटों में से 220 से 225 सीटों पर जीत का लक्ष्य देते हुए नारा दिया गया, श2025 में 225, फिर से नीतीशश। इस नारे ने साफ कर दिया कि अगला विधानसभा चुनाव नीतीश के ही नेतृत्व में लड़ा जाएगा। बिहार की राजनीति के जानकार अजय कुमार भी कहते हैं कि नीतीश कुमार की पहचान एक कुशल राजनीतिज्ञ ही नहीं एक रणनीतिकार के रूप में होती है। उनकी बिहार के प्रति समझ गजब की है। गौर से देखें तो वह समय-समय पर अपनी रणनीतियों में बदलाव करते रहते हैं। एक बार फिर एक रणनीति के तहत एनडीए की बैठक बुलाकर न केवल एकजुटता का संदेश दिया बल्कि अपनी स्थिति भी मजबूत कर ली। हालांकि विपक्ष ने इस बैठक को फ्लॉप बताया है। राजद की सांसद मीसा भारती कहती हैं कि कई घटक दलों के अध्यक्ष ही इस बैठक में उपस्थित नही थे। उन्होंने कहा कि सीनियर नेता ही नहीं आए तो यह किस तरह की बैठक थी। इसका मतलब यह हुआ कि अंदरखाने में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। बैठक में गिरिराज सिंह, नित्यानंद राय, सम्राट चौधरी की उपस्थिति पर उन्होंने कहा कि गिरिराज सिंह आजकल बड़े नेता थोड़े नहीं हैं। सम्राट चौधरी को तो पार्टी ने खुद साइड लाइन करके रखा है। उनके बारे में क्या बात की जाए। उन्होंने दावा करते हुए

सावरकर के वंशज हैं विजय सिन्हा, लालू यादव को भारत रत्न की जरूरत नहीं' :सुधाकर सिंह

प्रमोद कुमार

कैमूरः बक्सर से राष्ट्रीय जनता दल (राजद) सांसद सुधाकर सिंह और बिहार के डिप्टी सीएम विजय सिंहा के बीच लालू यादव को 'भारत रत्न' देने को लेकर जुबानी जंग छिड़ गई है। राजद कार्यकताओं की ओर से लालू यादव को भारत रत्न देने की मांग वाले पोस्टर पर विजय सिंहा ने लालू यादव को 'जंगलराज का पुरोधा' और 'भ्रष्टाचार का मसीहा' बताया था। इसके जवाब में सुधाकर सिंह ने विजय सिंहा पर पलटवार करते हुए उन्हें 'सावरकर का वंशज' करार दे दिया। मामला तब शुरू हुआ जब राजद कार्यकताओं की ओर से लालू यादव को 'भारत रत्न' देने की मांग वाले पोस्टर लगाए गए। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए राज्य के डिप्टी सीएम और बीजेपी नेता विजय सिंहा ने कहा था, 'लालू यादव जंगलराज के पुरोधा और भ्रष्टाचार के मसीहा हैं। उनके कारण हमारे राज्य के लोग दूसरे राज्यों में शर्मिन्दा होते हैं। ऐसे लोगों के लिए भारत रत्न की मांग

करने वालों को शर्म आनी चाहिए।'

विजय सिंहा के इस बयान पर अब बक्सर सांसद सुधाकर सिंह ने पलटवार किया है। बक्सर सांसद सुधाकर सिंह ने कहा, 'विजय सिंहा सावरकर के वंशज हैं। यह लोग जो अंग्रेजों के लिए मुखबिरी करने का काम किया करते थे, जो आजादी के खिलाफ थे, उनके लिए जीवन भर भारत रत्न मांगने का काम करते रहे हैं। लालू यादव को किसी से कोई सर्टिफिकेट लेने की जरूरत नहीं है। लालू यादव भारत रत्न हैं। जब-जब लालू यादव इन लोगों के सपने में आते हैं, तब इन लोगों को दुख होता है।' वहीं कैमूर में पत्रकार के भाई की गोली मारकर हत्या पर राजद सांसद सुधाकर सिंह ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधते हुए कहा कि राज्य में रोज हत्याएं हो रही हैं, लेकिन मुख्यमंत्री माफी नहीं मांगेंगे। उन्होंने कहा, 'इस राज्य में किस दिन हत्याएं नहीं हो रही हैं। बिहार में रोजाना दर्जनों हत्याएं हो रही हैं, फिर भी इस राज्य के मुख्यमंत्री माफी नहीं मांगेंगे, क्योंकि वह गृह मंत्री भी हैं तो कभी वो माफी नहीं मांगेंगे। उनका दिमाग काम नहीं कर रहा है।'

बिहार विधानसभा उपचुनाव में प्रशांत किशोर का दावा फेल ! उम्मीदवारों की डिग्री पर सियासी घमासान

संवाददाता द्वारा

पटना : चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर ने चार सीटों पर उप चुनाव लड़ने का फैसला किया. जन सुराज ने चारों सीटों पर उम्मीदवार भी खड़े किए. जिसमें दो सीटों पर प्रशांत किशोर को उम्मीदवारी वापस लेनी पड़ी, जिन उम्मीदवारों को जंगे मैदान में उतर गया है, उसपर भी सियासी घमासान है.चार सीटों पर प्रशांत किशोर ने खड़े किए उम्मीदवार : प्रशांत किशोर ने 2 अक्टूबर को राजनीतिक दल का गठन किया था. ठीक एक महीने बाद उपचुनाव में लड़ने का फैसला ले लिया. प्रशांत किशोर ने चारों सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए हैं. इमामगंज से डॉक्टर जितेंद्र पासवान. बेलागंज से मोहम्मद अमजद, तरारी से किरण देवी और रामगढ़ से सुशील कुमार कुशवाहा को मैदान में उतारा गया है. प्रशांत किशोर के उम्मीदवारों की डिग्री को लेकर सवाल उठ रहे हैं. राजनीतिक दलों ने मुद्दा भी बना लिया है. दो सीटों पर प्रशांत किशोर ने बदले उम्मीदवार : प्रशांत किशोर ने जल्दबाजी में चुनाव लड़ने का फैसला लिया. इसका असर भी उपचुनाव में देखने को मिला. दो सीटों पर प्रशांत किशोर को उम्मीदवार बदलने पड़े. तरारी सीट पर प्रशांत किशोर ने लेफ्टिनेंट जनरल एसके सिंह को उम्मीदवार बनाया था, लेकिन एसके सिंह का

नाम वोटर लिस्ट में नहीं था. जिस वजह से उन्हें मैदान छोड़ना पड़ा. दूसरा विवाद बेलागंज विधानसभा सीट पर हुआ जहां प्रशांत किशोर ने पहले खिलाफत हुसैन को टिकट दिया, बाद में उनकी जगह मोहम्मद अमजद को मैदान में उतारा. बेलागंज में सभा के दौरान विवाद खड़ा हुआ था और कुर्सियां तक चली थीं. डॉ जितेंद्र पासवान नहीं हैं 'डॉक्टर' : प्रशांत किशोर ने जिन उम्मीदवारों को चारों सीटों पर खड़ा किया है उनकी डिग्री सवालों के घेरे में है. चारों सीटों पर प्रशांत किशोर ने नॉन ग्रेजुएट उम्मीदवार खड़े किए हैं. मतलब किसी ने ग्रेजुएशन की डिग्री हासिल नहीं की है. बेलागंज के उम्मीदवार डॉक्टर जितेंद्र पासवान ने इंटरमीडिएट की डिग्री हासिल की है. जितेंद्र पासवान एमबीबीएस डॉक्टर नहीं हैं, बावजूद इसके जितेंद्र पासवान को डॉक्टर जितेंद्र पासवान के रूप में प्रचारित किया जा रहा है. जितेंद्र पासवान ने इंटरमीडिएट तक पढ़ाई की है. तीन सीटों पर उम्मीदवार इंटरमीडिएट से कम : बेलागंज सीट पर प्रशांत किशोर ने मोहम्मद अमजद को उम्मीदवार बनाया है. मोहम्मद अमजद के खिलाफ जहां आपराधिक मामले दर्ज हैं. वहीं मोहम्मद अमजद ने इंटरमीडिएट तक ही पढ़ाई की है. तरारी सीट पर प्रशांत किशोर ने किरण देवी को उम्मीदवार बनाया है. किरण देवी बारहवीं तक पढ़ाई की है. इंटर तक पढ़े हैं रामगढ़ उम्मीदवार : रामगढ़ सीट पर सुशील कुशवाहा को प्रशांत किशोर ने उम्मीदवार बनाया है सुशील कुशवाहा ने इंटरमीडिएट तक पढ़ाई की है. चारों उम्मीदवार ऐसे हैं जिन्होंने इंटर से अधिक की पढ़ाई नहीं की है. जबकि प्रशांत किशोर लगातार यह दावा कर रहे थे कि वह अपने से बेहतर उम्मीदवार आपके बीच से लाएंगे. बीजेपी ने कसा पीके के प्रत्याशियों पर तंज : भाजपा के वरिष्ठ नेता और विधान पार्षद अनिल शर्मा ने कहा है कि प्रशांत किशोर इतने दिन परिक्रमा किया लेकिन उन्हें उम्मीदवार नहीं मिला. इमामगंज से उन्होंने झोलाछाप डॉक्टर को खड़ा किया. बाकी के उम्मीदवार इंटर से अधिक नहीं पढ़े लिखे हैं. आने वाले दिनों में प्रशांत किशोर अपराधी, लफंगा और ठेकेदार को चुनाव के मैदान में खड़े करेंगे. आने वाले दिनों में राष्ट्रीय जनता दल और प्रशांत किशोर की पार्टी में कोई अंतर नहीं रहेगा. 'पीके की राजनीति में फेल' : राष्ट्रीय जनता दल प्रवक्ता एजाज अहमद ने कहा है कि "प्रशांत किशोर मजिस्ट्रेट चेकिंग में पकड़े गए. तरारी से उनके उम्मीदवार का नाम वोटर लिस्ट में नहीं था. बेलागंज से उम्मीदवार बदलना पड़ा. इमामगंज में जिसको प्रशांत किशोर डॉक्टर बता रहे हैं वह इंटर पास हैं. प्रशांत किशोर बिहार की राजनीति में फेल साबित होने वाले हैं." चार सीट पर बेहतर प्रदर्शन करेंगे- खर : जनसुराज पार्टी के प्रवक्ता संजय ठाकुर ने कहा है कि "हमारी पार्टी ने बेहतर उम्मीदवार दिए हैं. हमने परिवार की राजनीति नहीं की है. स्वच्छ छवि के नेता को मैदान में उतारा है. हमें जनता का समर्थन मिल रहा है. जहां तक मुकदमे का सवाल है तो राजनीतिक लोगों पर मुकदमे दर्ज होते रहते हैं. हम चारों सीटों पर बेहतर प्रदर्शन करेंगे." क्या कहते हैं जानकार? :

वरिष्ठ पत्रकार प्रवीण बागी का मानना है कि प्रशांत किशोर ने

पप्पू के बाद अब केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह को जान से मारने की धमकी

क्राइम संवाददाता द्वारा

पटना :: देश के अंदर इन दिनों एक नया ट्रेंड चल पड़ा है। अब माफिया गैंग ने आम नहीं बल्कि सांसदों को धमकी देना शुरू कर दिया है। पहले पूर्णिया के सांसद पप्पू यादव को कथित तौर से लॉरेंस बिश्नोई गैंग की तरफ से धमकी मिलने के बाद अब बिहार के एक और सांसद को धमकी दी गई है। इस बार निशाने पर बेगूसराय से सांसद और बीजेपी के फायर ब्रांड नेता गिरिराज सिंह हैं। जानकारी के अनुसार केंद्रीय मंत्री और सांसद गिरिराज सिंह को हँ३२स्त्रस्त्र कॉल के जरिए धमकी दी गई है। गिरिराज सिंह को फोन पर जान से मारने की धमकी दी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक ह्यअमजद 1531ह्ल नाम से आए एक व्हाट्सऐप कॉल के जरिए उनको धमकी दी गई है। इस मामले में बाद हडकंप का माहौल बन गया है। वहीं, धमकी मिलने के बाद गिरिराज सिंह ने इस मामले में उल्लह्ल को जानकारी दी है और बताया है कि उन्हें फोन कर धमकी दी गई है। हाल ही में गिरिराज सिंह ने अपनी हिंदू स्वाभिमान यात्रा खत्म की है। इस यात्रा के दौरान वो अपने बयानों से लगातार चर्चा में रहे। ऐसे में अब गिरिराज सिंह को धमकी दिए जाने के मामले ने सबको चौंका दिया है। केंद्रीय मंत्री को धमकी देने वाले के बारे में अब तक कुछ भी पता नहीं चल सका है। आपको बता दें कि इससे पहले भी गिरिराज सिंह के सांसद प्रतिनिधि को जान से मारने की धमकी दी गई थी। मोदी सरकार में मंत्री और बिहार के बेगूसराय से सांसद गिरिराज सिंह को पाकिस्तान से धमकी मिली है. यह धमकी गिरिराज सिंह के सांसद प्रतिनिधि रहे अमरेंद्र कुमार अमर के मोबाइल पर वॉट्सऐप कॉल करके दिया गया है।

नौकरी को लेकर बवाल, ललन सिंह ने किया बड़ा दावा

संवाददाता द्वारा

पटनाः केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह उर्फ ललन सिंह मंगलवार को राजद नेता तेजस्वी यादव के नौकरी दिए जाने के दावे पर भड़कते हुए कहा कि बोलना और करना दो अलग-अलग चीजें हैं। कुछ लोग बोलने का काम करते हैं और कुछ लोग करने का काम करते हैं। उन्होंने पटना में पत्रकारों से चर्चा के दौरान कहा कि केंद्र में नरेंद्र मोदी सरकार और बिहार की नीतीश सरकार रोजगार सृजन को लेकर काम कर रही है। नौजवानों को रोजगार के मौके उपलब्ध हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि मंगलवार को ही प्रधानमंत्री मोदी ने 51 हजार लोगों को नियुक्ति पत्र सौंपा, इसमें बिहार के भी 217 लोग शामिल हैं। रोजगार सृजन के क्षेत्र में नए-नए अवसर आए हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी राज्य में लाखों नौकरियां दे रहे हैं। कुछ दिन पहले ही 2.25 लाख शिक्षकों की बहाली हुई। इसी तरह से पुलिस सेवा में बड़े स्तर पर नौकरी दी गई है। उन्होंने कहा कि बिहार में अगले कुछ समय में 12 लाख लोगों को नौकरी देने का लक्ष्य है। कुछ लोगों को अपनी बातें भी याद कर लेनी चाहिए। उन्होंने बिना तेजस्वी यादव का नाम लेते हुए कहा कि जो लोग आजकल नौकरी देने की बात करते हैं, उन्हें अपने माता-पिता से पूछना चाहिए कि 15 साल के शासनकाल में उन्होंने कितने लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया था। उन्होंने बिना किसी का नाम लिए तेजस्वी यादव पर निशाना साधते हुए कहा कि जब वे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में काम कर रहे थे, तब उनकी आवाज नहीं निकलती थी। अब वे नौकरी देने का दावा करते हैं।

संक्षिप्त समाचार

झामुमो में शामिल हुए दर्जनों से अधिक लोग, जिला अध्यक्ष शाहजंहा अंसारी ने सभी का किया स्वागत

मंडरो: मंडरो प्रखंड अंतर्गत अम्बाड़िहा पंचायत के ग्राम अम्बाडीहा में मो ० नईम अंसारी के निजी आवास में झामुमो जिला अध्यक्ष शाहजहाँ अंसारी एवं मड़रो प्रखंड के संजोजक मडली के सदस्य मो० सुभानी और मो शरीफ अंसारीके द्वारा एक बैठक आयोजित की गई इसी बीच में मो जब्बार अंसारी के नेतृत्व में 200 दो सौ पुरुष एवं महिलाओं के साथ झामुमो पार्टी के बैठक में शामिल हुए झामुमो के जिला अध्यक्ष शाहजहाँ अंसानी के द्वारा सभी झामुमो पार्टी के पट्टा पहनाकर पार्टी शामिल किया गया। जैसे बड़कू मुर्मू प्रेम सोरेन भगवान हाँसदा विनय हाँस्दा विषु बास्की मो मंजर अंसारी मेरी मुरमू अंजली हाँसदा मय मुरमू गुलाव अंसारी जाहिद मो समीद मजी बुल अंसारी फरीद अंसारी समीर जमीरुदीन ललीता बास्की मौलवी हुरमुज अंसारी आदि कार्यकत्ताओं पार्टी में शामिल हुए।

सामान्य प्रेक्षक गौतम सिंह ने मतदान केंद्र का किया निरीक्षण

साहिबगंज: बोरियो (अ0ज0जा0) विधानसभा क्षेत्र के लिए निर्वाचन आयोग द्वारा प्रतिनियुक्त सामान्य प्रेक्षक गौतम सिंह ने उ0म0वि0 गदाई, मोतीझरना के मतदान केंद्र संख्या 186 एवं 187 का निरीक्षण किया। उनके द्वारा उ0म0वि0 अम्बाडीहा, सकरीगली के मतदान बूथ संख्या 183 का निर-ीक्षण करते हुए बी0एल0ओ0 अमूल कुमार के साथ एवं स्कूल के प्रधानाध्यापक के साथ मतदान केंद्र संबंधी सुविधाओं पर विचार विमर्श किया गया। इसके पश्चात बोरियो विधानसभा में चल रहे नामांकन प्रक्रिया का अवलोकन हेतु निवार्ची कार्यालय में भ्रमण किया।

जनता दरबार में शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के लोगों ने उपायुक्त के समक्ष रखी अपनी समस्या

साहिबगंज:समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय प्रकोष्ठ में जिला निर्वाचन पदाधिकारी -सह- उपायुक्त हेमंत सती ने जनता दरबार के माध्यम से आमजनों की समस्याएं सुनी। जनता दरबार में जिले के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों ने अपनी समस्याओं से उपायुक्त महोदय को अवगत कराया। उपायुक्त महोदय ने उपस्थित मरियम हांसदा, रजनी देवी, नीलू खातून, गुलबदन खातून, एवं अन्य लोगों से एक-एक कर उनकी समस्याएं सुनी। साथ ही उनके सामाधान को लेकर उन्हें आश्वस्त कराया। संज्ञान में आए हुए शिकायतों की जांच कराते हुए जल्द से जल्द समाधान करने की बात कही ।गौरतलब है कि जनता दरबार के दौरान शिकायत के रूप में आए आवेदन विभिन्न विभागों से संबंधित एवं असंबंधित रहे ।जनता दरबार में शिकायतकर्ता की समस्याएं को सुनने के पश्चात उपायुक्त महोदय ने संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को उनका समाधान करने को लेकर निर्देशित किया। सभी आवेदनों की भौतिक जांच करते हुए उसका समाधान जल्द से जल्द सभी संबंधित पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि शिकायतों पर त्वरित कार्रवाई करते हुए प्रतिपुष्टि उपायुक्त कार्यालय को समर्पित करें।

हिरणपुर कांग्रेस ने विधानसभा चुनाव में इंडिया गठबंधन प्रत्यासी हेमलाल मुर्मू को जिताने के लिए की बैठक

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ हिरणपुर प्रखंड के मोहनपुर में कांग्रेस प्रखंड कमेटी की बैठक प्रखंड अध्यक्ष मनोवर आलम की अध्यक्षता में की गई बैठक में कार्यकताओं ने एकजुटता दिखाते हुए कहा की हमलोग अपने अपने बूथ में इंडिया गठबंधन प्रत्यासी हेमलाल मुर्मू को अधिक मत मिले इसके लिए कार्य करेंगे प्रखंड अध्यक्ष मनोवर आलम ने कहा की कांग्रेस के सभी कार्यकर्ता जेएमएम के साथ मिलकर काम करना है जो कुछ थोड़ी बहुत त्रुटि रही है उसे साथी दल के साथ मिलकर हमलोग ठीक करेंगे और एक बड़ा जीत के लिए हमलोग काम करेंगे साथ ही पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी निशात आलम जी के लिए भी काम करना है हमलोग का जो क्षेत्र है उसमे हमलोग जहा मदद कर सकते है वहा करेंगे और वोट दिलाएंगे साथ ही कार्यकताओं ने इंडिया गठबंधन प्रत्यास हेमलाल मुर्मू जी से मिलने की इच्छा जाहिर की है जिसपर बात कर जल्द ही मिला जायेगा और एक एक वोट जेएमएम को मिले इसके लिए काम करना होगा बैठक में लिट्टीपाड़ा प्रखंड अध्यक्ष मुर्शीद आलम मुस्ताक मोमिन मुजामिल अंसारी आबिद इस्लाम मन्नाफ मोमिन अलीहुसेन अंसारी सत्तार मोमिन सहित अन्य उपस्थित थे.

मांडर, ऑब्जर्वर ने मांडर में किया मतदान केंद्रों का निरीक्षण

मांडर- विधानसभा चुनाव को लेकर जेनरल ऑब्जर्वर एन गिरी ने मंगलवार को मांडर प्रखंड के करगे व तिगोईअम्बा टोली स्थित मतदान केंद्र संख्या 154, 155, 156 एवं 141,142 व 143 का निरीक्षण किया. इस दौरान उन्होंने यहां मतदान को लेकर उपलब्ध सुविधाओं का जायजा लिया और सभी मतदान केंद्रों में बिजली, पानी, शौचालय, रैंप आदि की व्यवस्था को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिये. ऑब्जर्वर ने स्थानीय पदाधिकारियों को बुजुर्ग एवं दिव्यांग मतदाताओं को घर से ही मतदान की सुविधा उपलब्ध कराने को लेकर उचित व्यवस्था करने के अलावा अचार संहिता का सख्ती से अनुपालन कराने की बात भी कही. मौके पर बीडीओ मनोरंजन कुमार, मनान अंसारी, बीएलओ आदि मौजूद थे!

त्यौहारी भीड़ के दौरान पू. सी. रेलवे ने यात्रियों की सुरक्षा और सुखद के लिए पहल की

मालीगांव,

पूर्वोत्तर सीमा रेलवे ने इस त्यौहा-री सीजन में यात्रियों की सुरक्षा और आराम सुनिश्चित करने के कई पहल किए हैं, ताकि सेवा की गुणवत्ता से कोई समझौता न हो। यात्रियों की भीड़ को देखते हुए, पूर्वोत्तर सीमा रेलवे के क्षेत्राधिकार से आवाजाही हेतु कुल 44 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा हैं, जिनमें 500 से अधिक फेरें शामिल हैं। निर्धारित यात्री ट्रेनों के अलावा ये स्पेशल ट्रेनें दिवाली और छठ पूजा के लिए पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य जैसे देश के पूर्वी और उत्तरी हिस्सों की ओर प्रमुख गंतव्यों को जोड़ने हेतु चलाई जा रही हैं। त्यौहारों के दौरान पू. सी. रेलवे ने अपने क्षेत्राधिकार में आने वाले सभी प्रमुख स्टेशनों और ट्रेनों में योजनाबद्ध तरीके से सुरक्षा उपाय बढ़ा दिए हैं। सभी प्रमुख और महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशनों पर भीड़ नियंत्रण के व्यापक प्रबंध किए गए हैं, जहां त्यौहारों को मनाने के लिए विभिन्न स्थानों को जाने हेतु भारी भीड़ पहुंचने की संभावना है। इन स्टेशनों पर भीड़ को व्यवस्थित तरीके से नियंत्रित करने के लिए सभी गतिविधियों की निगरानी हेतु वाणिज्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारी को तैनात किया गया हैं। भारी भीड़ के दौरान भगदड़ जैसी स्थिति से बचने के लिए भीड़ को सुचारू रूप से नियंत्रित करने के लिए प्लेटफार्मों, फुट-ओवर ब्रिज और सकुर्लेटिंग क्षेत्रों में रेलवे सुरक्षा बल और राजकीय रेलवे पुलिस को मुस्तैद किया गया है। इसके अतिरिक्त, भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों पर कड़ी नजर रखने और यात्रियों को वास्तविक

समय पर सहायता प्रदान करने के लिए सीसीटीवी नियंत्रण कक्ष स्थापित किए गए हैं। ट्रेनों के प्रारंभिक स्टेशनों पर सामान्य कोचों में प्रवेश के लिए कतार प्रणाली अपनाई गई है। ट्रेनों/कोचों के बारे में उचित घोषणा समय पर सुनिश्चित की जाती है, ताकि यात्रियों को प्लेटफॉर्म के स्थान के बारे में पता चल सके, जहां से ट्रेनें रवाना होगी। प्रारंभिक और गंतव्य स्टेशनों पर ट्रेनों में आसानी से चढ़ने और उतरने की व्यवस्था की गई है। त्यौहारी सीजन के दौरान ट्रेनों में यात्रा करते समय यात्रियों को जागरूक करने के लिए नियमित आधार पर पू. सी. रेलवे द्वारा विशेष अभियान चलाया जा रहा है। पू. सी. रेलवे ऐसे भीड़-भाड़ वाले सीजन के दौरान सभी यात्रियों के लिए सुरक्षित एवं सुखद यात्रा अनुभव को प्राथमिकता देने के लिए प्रतिबद्ध है। समय-समय पर प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के माध्यम से विभिन्न प्रकार के जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं।

महेशपुर विधानसभा भाजपा प्रत्याशी नवनीत हेंब्रम ने भरा नामांकन

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:महेशपुर विधानसभा के प्रत्याशी नवनीत हेंब्रम ने मंगलवार को अनुमंडल कार्यालय परिसर में अपना नामांकन पत्र भरा. नामांकन के बाद उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि जब वे पुलिस सेवा में थे, तब भी उन्होंने जनसेवक के रूप में लोगों की मदद की है. नवनीत ने कहा, ह्वयहां के लोगों का अपार स्नेह मिला है. उन्होंने मुझे कई समस्याओं के समाधान के लिए मैदान में उतारने का काम किया है. शिक्षा और रोजगार जैसी कई समस्याएं हैं, जिनका अब तक कोई समाधान नहीं हो पाया है. लोग आज भी दर-दर की ठोकर खा रहे हैं.ह्व उन्होंने आगे कहा कि वे राजनीति में इसलिए आए हैं क्योंकि जनता सर्वोपरि होती है. यदि जनता का सहयोग मिला, तो वे जनसेवक बनकर आगे भी काम करना जारी रखेंगे.

बेंगवारी में लक्ष्मी पूजा समिति के द्वारा किया जा रहा है झारखंड विधानसभा भवन की आकार जैसा भव्य पंडाल का निर्माण

बेंगवारी में करीब 36 वर्षों से लगातार की जा रही है लक्ष्मी पूजा

संवाददाता: ज्ञान कुमार पास-वान केरेडारी:

केरेडारी प्रखण्ड के बेंगवरी में लक्ष्मी पूजा को लेकर कई दिन पहले से ही महालक्ष्मी पूजा समिति बेंगवरी के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य तैयारी में जुट गए हैं। लक्ष्मी पूजा के शुभ अवसर पर झारखंड विधानसभा भवन के आकार जैसा भव्य पंडाल का निर्माण किया जा रहा है जो आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। विधानसभा भवन आकार का भव्य पंडाल को कारीगरों के द्वारा अंतिम रूप दिया जा रहा है। वहीं महालक्ष्मी पूजा समिति के कोषाध्यक्ष मनोज कुमार साव बताते हैं कि बेंगवारी में लगभग 36 वर्षों से मां लक्ष्मी का पूजा अर्चना की जा रही है एवं बेंगवरी का पंडाल इस वर्ष पूरे बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र में

आकर्षण का केंद्र बना रहेगा। हमारे यहाँ झारखंड विधानसभा भवन के जैसा ही पंडाल का निमार्ण किया जा रहा है जिससे बेंगवरी में ही झारखंड विधानसभा भवन की एक झलक देखने को मिलेगा। बताया कि इस-ाकी तैयारी में पूजा सिमिति के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य अपने मन तन से लग गए है। वहीं सचिव कैलाश साव बताते है कि बेंगवरी में 1988 से माँ लक्ष्मी की पूजा अर्चना होती आ रही है। मौके पर पूजा समिति के अध्यक्ष सुरेश राणा, सचिव कैलाश साव, कोषाध्यक्ष मनोज कुमार साव समेत पूजा समिति के सभी सदस्यगण उपस्थित थे।

दिल्ली पब्लिक स्कूल पाकुड़ में दिवाली के पूर्व संध्या पर सजा राम दरबार

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:दिल्ली पब्लिक स्कूल, पाकुड़ में दिवाली की पूर्व संध्या पर राम दरबार की झाँकी प्रस्तुत की गई। विद्यालय के छात्रों ने इस अवसर पर राम दरबार की झाँकी प्रस्तुत करने में सक्रिय रूप से भाग लिया और राम के चरित्र से संबंधित कविता पाठ के साथ नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत किया। इस नाटिका का मूल उदेश्य था राम के जीवन के त्याग और उनके आदर्शो से बच्चों को परिचित कराना। ताकि बच्चों में नैतिकता को बढ़ावा मिले।

इसके साथी विद्यालय में मोमबत्ती और दिया सजाओ तथा अंतर सदनीय रंगोली प्रतियोगिता भी हुई। रंगोली के माध्यम से बच्चों ने आगामी मतददान के लिए सन्देश, महिलाओं की सु-रक्षा और सशक्तिकरण के लिए मतदान जरुरी , अनेकता में एकता, बेटी पढ़ाओ बेटी

बचाओ, एक भारत श्रेष्ठ भारत आदि थीम के द्वारा समाज को सन्देश दिया। विद्यालय के प्रधानाचार्य, श्री जे.के शर्मा ने कहा, ₹राम के चरित्र से हमें जीवन के मूल्यों की शिक्षा मिलती है। उनकी निष्ठा, धैर्य और सत्य के प्रति समर्पण से हमें सीखने का अवसर मिलता है।₹ श्री शर्मा ने आगे कहा, ₹हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों को न केवल शिक्षा देना है, बल्कि उन्हें अच्छे नागा-रक बनाना भी है।इस तरह के क्रिया कलापो (रंगोली, दिया सजाना, राम जैसे आदर्श चरित्र के मंचन से हमें यह सीखने का अवसर मिलता है कि कैसे हम अपने जीवन में त्याग के साथ सत्य, निष्ठा और धैर्य को अपनाएं।₹ कार्यक्रम के अंत में, श्री शर्मा ने विद्यार्थियों और उनके परिवार को धनतेरस,दीपावाली और छठ की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित की ।

दीपावली के अवसर पर ग्रीनलैंड पब्लिक स्कूल में रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन

रंग-बिरंगी सजावट और प्रतियोगिता से बच्चों ने मनाई दीपावली

संवाददाता : चौपारण

पांडेयबारा चपरीकला स्थित ग्रीनलैंड पब्लिक स्कूल में दीपावली के शुभ अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। यह कार्यक्रम बच्चों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था, ताकि वे दीपावली जैसे विशेष पर्व पर अपनी कला का प्रदर्शन कर सकें और त्योहार की खुशियों को साझा कर सकें। रंगोली प्रतियोगिता में छात्रों को चार अलग-अलग ग्रुपों में बाँटा गया जिससे उनकी रचनात्मकता को एक टीम के रूप में दिखाने का अवसर मिल सके। चारों ग्रुपों ने अपनी-अपनी रचनाओं में अनोखे और रंग-बिरंगे डिजाइनों का प्रदर्शन किया, जो न केवल उनकी कला को दशार्ते थे,

बल्कि उनके उत्साह और पर्व के प्रति उनकी भावना को भी प्रकट कर रहे थे। सभी समूहों ने एक से बढ़कर एक सुंदर रंगोली बनाई, जिनमें दीपावली के प्रतीकों, फूलों और पारंपरिक डिजाइनों का अनोखा समावेश था। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तरन्नुम ग्रुप, द्वितीय स्थान पर सौम्या ग्रुप एवं तीसरे स्थान पर शशांक ग्रुप रही। प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों में तरन्नुम प्रवीण, सादिया खातून, मीनाक्षी कुमारी, आफरीन प्रवीण शामिल रहें। स्कूल के निदेशक पंचम कुमार पांडेय ने बच्चों की रंगोली देख उनकी सराहना की और कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएं बच्चों के अंदर छिपी प्रतिभा को उजागर करती हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों को रंगोली प्रतियोगिता में भाग लेते हुए देखकर यह महसूस हुआ कि हमारे छात्र काफी रचनात्मक हैं। इस प्रकार के आयोजन से उनकी कला को निखारने का मौका मिलता है और यह उनके आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है। उन्होंने दीपावली के त्योहार के महत्व पर भी प्रकाश डाला और छात्रों को अपने पारंपरिक त्योहारों से जुड़ने का संदेश दिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में धनंजय कुमार, अंजली सिंह, सोहानी कुमारी, अंजना सिंह, रीता कुमारी, रशिक सिंह, राजा गुप्ता आदि शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने बच्चों को रंगोली बनाने में मार्गदर्शन किया और उनके साथ मिलकर प्रतियोगिता को सफलतापूर्वक संपन्न कराया।

आजसू प्रत्याशी अजहर इस्लाम के जनसभा में लोगों का उमड़ा जन सैलाब

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ मंगलवार को पाकु-ड़ विधानसभा क्षेत्र में आजसू के जनसभा मे लोगो की ताबड़तोड़ भीड़ देखी गई, एनडीए प्रत्याशी अजहर इस्लाम के रोड शो में आजसू सुप्रीमो सुदेश महतो भी उपस्थित हुए एनडीए गठबंधन आजसू के द्वारा हरिण्डाँगा हाइस्कूल मैदान मे एक जन सभा का आयोजन किया गया था जिसमे आजसू सहित एनडीए के सहयोगी भाजपा के जिला अध्यक्ष सहित ज़िलें और प्रदेश के पदाधिकारी मौजूद थे इस मंच से आजसू के जिला अध्यक्ष ने कहा अब पाकुड़ की जनता जाग चुकि है अब नहीं बटेगी जाति धर्म और संप्रदाय पर बात होंगी पाकुड़ विद्यानसभा की विकास पर आप सभी जानते है पाकुड़ विधानसभा का विकास के नाम पर केवल कमीशन खोरी हुई है जिसे मे नहीं एक स्वतंत्र जांच एजेंसी ईडी कहती है इस जनसभा को सम्बोधित करते हुए यहाँ तक कह डाला इस बार परिवर्तन नहीं किया तो और मौका नहीं मिलेगा आजसू प्रत्याशी अजहर इस्लाम ने कहा वोट के समय एन आर सी और बांग्लादेशी याद आता है और वोटर को अपने तरफ खींचते है इस बार ऐसा नहीं होगा

राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी जिला इकाई की महत्वपूर्ण बैठक आवासीय कार्यालय में हुई

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़:पाकुड़ मंगलवार को राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी जिला इकाई की महत्वपूर्ण बैठक आवासीय कार्यालय धनुष पूजा में की गई. जिसमें राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के जिला अध्यक्ष रंजीत कुमार सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी एनडीए के सहयोगी दल है तथा सहयोगी दल को एनडीए के प्रत्याशी जिले में तीनों विधानसभा चुनाव लड़ रहे हैं. तीनों विधानसभा में विधानसभा प्रभारी भी बनाई गई है राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी से तीनों विधानसभा के गरीब, मजदूर, किसान अंतिम व्यक्ति के वोटर जुड़े हुए हैं. वही राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी को नजर अंदाज की गई. बीते दिनांक 25.10.2024 को एनडीए के घटक दल आजसू पार्टी ने पाकु-ड़ के बस स्टैंडमें प्रेस कॉन्फ्रेंस की गई. लेकिन सहयोगी दल होने के नाते मुझे नहीं बुलाई गई. तथा 26.10.2024 को

भाजपा के द्वारा प्रत्याशी का अभिनंदन समारोह में भी नहीं बुलाई गई. लिट्टीपाड़ा-महेशपुर में भी एनडीए का कई कार्यक्रम की गई. परंतु राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी को वहां भी आमंत्रित नहीं की गई. एनडीए के घटक दल होने के नाते एनडीए के प्रत्याशी के पक्ष में ग्रामीण एवं शहरी इलाकों में वोट पड़े परंतु 29.10.2024 को पाकुड़ एनडीए के पाकुड़ प्रत्याशी तथा महेशपुर विधानसभा क्षेत्र के एनडीए के प्रत्याशी के द्वारा नामांकन में राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी को नजर अंदाज किया गया. पार्टी के कार्यकर्ता के सम्मान हेतु राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी उसी उम्मी-दवार को तीनों विधानसभा में वोट करवाएगी. जो किसान मजदूर गरीब अंतिम व्यक्ति को बातों को सुने तथा क्षेत्र की विकास करें पानी, बिजली, सड़क, आवास सभी को मुहैया करवायी. इस प्रत्याशी को जोर-शोर से प्रचार प्रसार कर जीत दिलवाएंगे.

बिहार में फर्जी IPS के बाद अब फर्जी दारोगा गिरफ्तार

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

पटना / बिहार के पटना जिले के रामकृष्णानगर थाने में एक और चौंकाने वाला मामला सामने आया है, जहां एक शख्स ने खुद को फर्जी दारोगा के रूप में पेश कर लोगों को धोखा दिया। इस घटना ने पूरे क्षेत्र में सनसनी मचा दी है और पुलिस की सतर्कता पर सवाल खड़े कर दिए हैं। यह घटना एक युवक से जुड़ी है जिसे पुलिस की वर्दी पहनने का बेहद शौक था। उसने इस शौक को पूरा करने के लिए कई बार पुलिस भर्ती परीक्षाओं में हिस्सा लिया, लेकिन सफल नहीं हो पाया। लगातार दो साल असफल होने के बाद उसने खुद ही पुलिस की वर्दी सिलवाई और खुद को दारोगा साबित करने का नाटक शुरू कर दिया। इस युवक ने पुलिस की वर्दी पहनकर और रौबदार मूंछें रखकर खुद को एक सच्चा दारोगा दिखाने का प्रयास किया। उसने एक बुलेट मोटरसाइकिल भी खरीदी और पूरे रौब से शहर में घूमने लगा। उसकी वर्दी और बुलेट ने उसे एक असली दारोगा की तरह दिखाया,

जिससे लोग उसकी पहचान पर शक नहीं कर पाए। इस फर्जी दारोगा का भंडाफोड़ तब हुआ जब रामकृष्णानगर थाने की पुलिस को उस पर शक हुआ। पुलिस ने उसकी गतिविधियों पर नजर रखी और जब जांच की तो पाया कि वह असली पुलिसकर्मी नहीं है। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया और उसकी वर्दी, बुलेट और अन्य वस्त्र जब्त कर लिए। यह घटना एक महत्वपूर्ण चेतावनी है कि हमें फर्जी पुलिसकर्मियों से सतर्क रहना चाहिए। ऐसी घटनाएं अक्सर सामने आती हैं और लोगों को धोखा देने का काम करती हैं। पुलिस प्रशासन को भी ऐसे मामलों पर सख्त नजर रखने की जरूरत है ताकि कोई और व्यक्ति इस तरह का अपराध न कर सके। इस घटना ने पटना और आसपास के क्षेत्रों में खलबली मचा दी है और लोग पुलिस की वर्दी पहनने वाले व्यक्तियों की पहचान को लेकर अधिक सतर्क हो गए हैं। पुलिस प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत सूचना दें ताकि ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

संक्षिप्त समाचार

37 साल पुरानी वाद में अभियुक्तगण को कोर्ट ने रिहा किया

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद / व्यवहार न्यायालय में एडिजे पांच उमेश कुमार के कोर्ट में देवकुंड थाना कांड संख्या -23/1987,एस टी आर-341/90 में साक्ष्य के अभाव में 08 अभियुक्तों को भार्दवि धारा 364,366 में दोषमुक्त किया है, अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि इस वाद के अभियुक्त रंगनाथ दुबे, मुसाफिर यादव, मंगरू यादव, रामविलास यादव की मृत्यु हो गई है , अभियुक्त राजू यादव, राजेश्वर यादव, बागेश्वरी शर्मा, त्रिलोकी दुबें, जनार्दन प्रसाद वर्मा, विजय यादव,रामईकबाल महतो, रामनरेश यादव को दोषमुक्त किया गया है बाकी तेरह अन्य अभियुक्तों के कुर्की के आदेश के वावजूद अनुपस्थित रहने व भविष्य में उपस्थित न होने के सम्भावना देखते हुए फरार घोषित करते हुए सभी फरार तेरह अभियुक्तों को वाद पृथक किया गया है, एपीपी धर्मराज शर्मा ने बताया कि पीड़ित परिवार के गोपाल साव बुधाईकला उपहरा ने अपने गवाही में कहा था घटना में शामिल लोगों को नहीं चिन्हते है घटना में एक बच्चे का अपहरण हुआ था जो पुलिस के सहयोग से घटना के छः माह बाद बरामद कर परिवार को सुपुर्द किया गया था।

अवैध महुआ चुलाई व शराब निर्माण एवं बिक्री स्थलों को किया गया ध्वस्त

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर.आसन्न विधान सभा चुनाव के मद्देनजर अधीक्षक उत्पाद, देवघर के निदेर्शानुसार अवैध शराब के उत्पादन एवं बिक्री के रोकथाम हेतु छापामारी अभियान चलाया गया। छापामारी के क्रम में *करों* थाना अंतर्गत *भोरंडीहा* व *पथरोल थाना* अंतर्गत *हड़हंजा* में स्थित अवैध महुआ चुलाई शराब निर्माण एवं बिक्री स्थलों को ध्वस्त किया गया। अवैध महुआ चुलाई शराब के निर्माण एवं बिक्री में संलिप्त फरार व्यक्तियों को चिन्हित कर संबंधित के विरुध्द विधिसम्मत कार्यवाई की जाएगी। जप्त प्रदर्श का विवरण निम्न है जावा महुआ - 700.00 डॅअवैध महुआ चुलाई शराब - 130.00 लीटर जबकि छापामारी दल माणिकांत कुमार - अवर निरीक्षक उत्पाद. किशोर कुमार - अवर निरीक्षक उत्पाद .मिथिलेश कुमार- अवर निरीक्षक उत्पाद शामिल थे.

विद्यालयों में मनाया गया आयुर्वेद दिवस, स्वस्थ जीवनशैली के लिए आयुर्वेद अपनाएं -दिलीप

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

सारठ/ भारत सरकार आयुष मंत्रालय एवं विभागीय निदेर्शानुसार मंगलवार को सारठ प्रखंड अंतर्गत सभी विद्यालयों में धनवंती ऋषि के जन्म दिवस पर विद्यालय में आयुर्वेद दिवस के रूप में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन कर छात्र-छात्राओं को औषधीय गुण वाली पौधे का संरक्षण संवर्धन के बारे में जानकारी दी गई। आयुर्वेद के प्रति जागरूकता फैलाने का शपथ, वाद विवाद प्रतियोगिता हस्तलेखन चित्रांकन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बीपीओ उदय शंकर सिंह ने बताया कि स्कूली बच्चों के स्वास्थ्य को लेकर विभागीय स्तर पर क ई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। आज सभी विद्यालयों में आयुर्वेद दिवस समारोह आयोजित करने का निर्देश दिया गया था। वहीं उत्क्रमित उच्च विद्यालय बेलवरना के सहायक शिक्षक दिलीप कुमार राय ने बताया कि बच्चों को अभी से स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है। सभी स्कूलों में आरोग्य दूत बनाया गया है। पूर्व से विद्यालय स्वास्थ्य कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। मौके पर प्रभारी प्रधानाध्यापक विश्वनाथ पंडित, राजेश्वर सिंह,ललन साह, अंकिता सिन्हा समेत अन्य बच्चे उपस्थित थे।

पुनः खोल दिया गेस्ट हाउस में अलमीरा व सोफे आदि का दुकान, डीडीसी ने खाली करवाया था दुकान

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

बाजार स्थित गेस्ट हाउस में अलमीरा और सोफे आदि का दुकान पुनः खोल दिया। जबकि पहले भी अलमीरा और सोफे आदि का दुकान खोल कर रखा था। इसकी जानकारी देवघर डीडीसी को होने पर उक्त दुकान खाली करवाया था। जबकि यह देवीपुर का एक मात्र गेस्ट हाऊस है। जहां लोगों का गेस्ट हाउस जैसे सभी सुविधाएं से लैश है। लेकिन अलमीरा और सोफे आदि का दुकान खोलकर इस-ाका पूरे स्वरूप और उद्देश्य को बदल कर रख दिया है। आखिर पुनः दुकान किसके सह पर खोल दिया! यह जांच का विषय है।

बरकट्ठा में भाजपा को छोड़कर दर्जनों लोग झामुमो में हुए शामिल

संवाददाता: बरकट्ठा

झामुमो आवसीय कार्यलय में पूर्व पंसस महेन्द्र प्रसाद के नेतृत्व में दर्जनों भाजपा कार्यकर्ता पार्टी छोड़कर झामुमो में शामिल हो गये। झामुमो प्रत्याशी जानकी प्रसाद यादव, प्रखंड अध्यक्ष कुदुस अंसारी केन्द्रीय सदस्य बासुदेव महतो ने सभी को पार्टी का सदस्यता ग्रहण कराया। शामिल लोगों ने झामुमो की सरकार को गरीबों का मसीहा बताया। सरकार ने गरीबों को लिए कई कल्याणका-री योजनाएं जैसे बिजली बिल माफी, दो सौ युनिट बिजली फ्री, केसीसी ऋण माफ जैसे कई योजनाएं लाई जिसमें हम गरीब को लाभ मिल रहा है। हम सभी हेमंत सोरेन कि सरकार बनाने के लिए झामुमो प्रत्याशी जानकी प्रसाद यादव को वोट देकर विजय बनाएंगे। झामुमो में शामिल होने वालों में ग्राम गयपहाडी निवासी राजू राणा, ध्रुव नारायण पासवान, केदार प्रसाद, खगेन्द्र प्रसाद, महेंद्र पंडित, राजेंद्र प्रसाद, राजकुमार प्रसाद, महबूब अंसारी, संतोष कुमार, श्यामलाल प्रसाद, रुपलाल पंडित समेत अन्य हैं।

हुसैनाबाद उत्तरी ज़िप सदस्य राजू मेहता ने रक्तदान कर एक मरीज की बचाई जान

हुसैनाबादः कृष्णा यादव

हुसैनाबाद उत्तरी ज़िप सदस्य राजू मेहता उर्फ.एस पी मेहता ने मंगलवार को रक्त दान कर एक मरीज की जान बचाई। प्राप्त जानकारी के अनुसार रांची निवासी संतोष पासवान की पुत्री प्रियंका कुमारी का तबीयत खराब हो गई। उन्हें एबी ब्लड ग्रुप की आवश्यकता थी।काफी खोजबीन के बाद भी उन्हें एबी ग्रुप का ब्लड नहीं मिला।प्रियंका के परिजनों ने इसकी सूचना जिप सदस्य राजू मेहता को दिया। जिसके बाद जिप सदस्य राजू मेहता ने रक्त दान कर उस-ाकी जान बचाई। प्रियंका के परिजनों ने हुसैनाबाद ज़िप सदस्य राजू मेहता के प्रति आभार जताया। राजू मेहता ने कहा की रक्त दान को महा दान कहा जाता है। समय पर रक्त नहीं मिलने से कई मरीजों का जान चला जाता है।रक्त दान कर आप किसी व्यक्ति की जान बचा सकते हैं साथ ही रक्तदान करने से आपका शरीर भी स्वस्थ्य रहता है।उनके द्वारा किए गए इस कार्य से क्षेत्र के लोग उनकी सराहना कर रहे हैं।

कांग्रेस प्रत्याशी निसात आलम के नामांकन में जनसभा का हुआ आयोजन

कांग्रेस समर्थकों का जनशैलाब देख विपक्षी दलों के उड़े होश

रिपोर्ट- अविनाश मंडल

पाकुड़ः पाकुड़ विधानसभा क्षेत्र में मंगलवार को इंडिया गठबंधन प्रत्याशी आलमगीर आलम की धर्मपत्नी निसात आलम ने अपना नामांकन पत्र दाखिल किया इस अवसर पर पाकुड़ नगर स्थित रानी ज्योतिर्मयी स्टेडियम में एक जनसभा का आयोजन भी किया गया था . जहां कांग्रेस समर्थकों का जनसैलाब उमड़ पड़ी जनसभा में कांग्रेस और झारखंड मुक्ति मोर्चा के कार्यकताओं और पदाधिकारी ने मंच साझा किया मुख्य अतिथि के रूप में लोहरदगाह के कांग्रेस सांसद एवं झा-रखंड मुक्ति मोर्चा के राजमहल लोकसभा से सांसद विजय हसदा और कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुखदेव भगत मौजूद रहे. कांग्रेस प्रत्याशी आलमगीर आलम की पत्नी निसात आलम ने कहा कि पाकुड़ की जनता का हमें सपोर्ट चाहिए। मेरे पति ने पाकुड़ के विकास के लिए हमेशा तत्पर और गंभीर रहे रहे हैं ,उनके अधूरे काम को हमें आगे बढ़ाना है। जनता हमे सहयोग करे मौका दे निश्चित रूप से पाकुड़ में विकास की गंगा बहेगी. पाकुड़ के लोगों का अपार समर्थन और सहयोग हमे मिल रहा है, निश्चित रूप से पाकुड़ के लोग हमें जिताकर विधानसभा भेजने का काम करेंगे. जनसभा में राजमहल सांसद विजय हांसदा ने कांग्रेस प्रत्याशी निसात आलम को अपनी मां से संबोधित करते हुए कहा कि मैं अपनी मां के लिए वोट मांगने आया हूं। मैं खुशकिस्मत हूं कि एक मां के लिए आप सबों से वोट मांग रहा हूं। मेरी जीत के लिए इस मां ने जितनी मेहनत की है, मैं खुश हूं कि उस मां के लिए मुझे मेहनत करने का मौका मिल रहा है। सांसद विजय हांसदा ने कहा कि आपने पिछले लोकसभा चुनाव में जिस तरीके से मुझे जीताने का काम किया है, उससे भी ज्यादा ताकत से इंडिया गठबंधन प्रत्याशी को जिताना है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी को निशाने पर लिया और कहा कि भाजपा के लोग हेमंत सोरेन की सरकार की मंईयां सम्मान योजना से घबरा गई है। इसलिए भाजपा वाले गोगो दीदी योजना लाने की बात कर रही है। मैं बीजेपी वालों से कहना चाहता हूं कि आप सिर्फ झारखंड में ही क्यों, पूरे देश में गोगो दीदी योजना लाएं। क्योंकि केंद्र में आपकी सरकार है और आपको रोकने वाला कोई नहीं है। मौके पर कांग्रेस प्रदेश महासचिव तनवीर आलम व उदय लखवानी, कांग्रेस पाकुड़ जिला अध्यक्ष श्रीकुमार सरकार, कांग्रेस पाकुड़ प्रखंड अध्यक्ष मंसारुल हक, साहिबगंज जिला अध्यक्ष बरकत खान, झारखंड मुक्ति मोर्चा पाकुड़ जिला अध्यक्ष श्याम यादव, यूथ कांग्रेस जिला अध्यक्ष तस्लीम आरिफ बुलेट, अधेर्दु शेखर गांगुली उपस्थित रहे. मंच का संचालन अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष शाहीन परवेज द्वारा किया गया...

मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से सेल्फी पॉइंट का हुआ उद्घाटन

हस्ताक्षर अभियान में शामिल होकर मतदाताओं ने मैं मतदान करूंगा बोर्ड पर किया हस्ताक्षर

दिव्य दिनकर:जिला ब्यूरो,कुन्दन पासवान

चतराः समाहरणालय परिसर में मंगलवार को स्वीप कार्यक्रम के तहत जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त चतरा रमेश घोलप,सामान्य प्रेक्षक सिमरिया पट्टानशेट्टी रवि शुभाष, सामान्य प्रेक्षक चतरा अमरुतेश कालिदास, व्यय प्रेक्षक बुद्धक गणेश बालासाहेब, पुलिस प्रेक्षक बी नवीन कुमार, पुलिस अधीक्षक विकास कुमार पांडेय द्वारा संयुक्त रूप से सेल्फी पॉइंट का उद्घाटन किया गया। मौके पर उपस्थित जिले के वरीय अधिकारी समाहरणालय परिसर के कर्मी, मतदाताओं ने सेल्फी पॉइंट के साथ सेल्फी खिचाई। वहीं उक्त मौके पर उपस्थित पदाधिकारियों एवं कर्मियों को जिला निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा मतदाता शपथ दिलाई गई। साथ ही आयोजित हस्ताक्षर अभियान में सभी ने शामिल होकर मैं मतदान करूंगा बोर्ड पर हस्ताक्षर किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य जिले के मतदाताओं को जागरूक कर अधिक से अधिक मतदान कराना है। उक्त कार्यक्रम में उप विकास आयुक्त अमरेंद्र कुमार सिन्हा, अपर समाहर्ता अरविंद कुमार, अनुमण्डल पदाधिकारी चतरा जहूर आलम, अनुमण्डल पदाधिकारी सिमरिया सन्नी राज, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी चतरा/सिमरिया समेत अन्य संबंधित पदाधिकारी/कर्मी उपस्थित थे।

तम्बाकू मुक्त युवा अभियान 2.0 को लेकर चलाया गया जागरूकता अभियान

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण कार्यक्रम अंतर्गत सिविल सर्जन, देवघर डॉ० युगल किशोर चौधरी एवं जिला कुष्ठ निवारण पदाधिकारी सह- नोडल पदाधिकारी एन०सी०डी० कोषांग देवघर के निदेर्शानुसार दिनांक 29/10/2024, दिन मंगलवार को, संत कोलोम्बस स्कूल,बिलासी टाउन,देवघर में तंबाकू निषेद पर कार्यशाला का आयोजन किया गया ।जिसमे डॉ०मनीष शेखर के द्वारा बतलाया गया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों को तंबाकू के हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूक करना और उन्हें इस खतरनाक आदत से दूर रखना है। इस कार्यक्रम में बच्चो को तम्बाकू से होने वाले बीमारियों जैसे कैंसर, अस्थमा, लकवा, श्वास संबंधित बीमारी के बारे में चर्चा की गयी, तथा इससे होने वाले आर्थिक और सामाजिक दुष्प्रभाव के बारे मे भी बतलाया गया । विद्यालयों के अंदर और बाहर दोनों स्थानों पर साका-रात्मक परिवर्तन लाने के लिए का प्रयास किया गया साथ ही साथ कोटपा 2003 अधिनियम से संबंधित प्रावधनों को लेकर कार्यशाला का आयोजन किया गया इसमे बतलाया गया की तंबाकू नियंत्रण अधिनियम कोटपा-2003 के मुख्यतः चार धाराओं के बारे में बिस्तर से बताया गया । सर्व प्रथम धारा 4 के बारे में बतलाया गया कि तंबाकू नियंत्रण अधिनियम की धारा 4 के अनुसार किसी भी स-ार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान करना प्रतिबंधित है तथा इसके उल्लंघन करने पर □200 तक का जुमार्ना वसूला जा सकता है । धारा 5 में बतलाया गया कि तंबाकू नियंत्रण अधिनियम की धारा 5 के अनुसार किसी भी तंबाकू उत्पादकों के प्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष विज्ञापन प्रोत्साहन एवं तंबाकू कंपनियों द्वारा किसी इवेंट का प्रयोजन करना अथवा स्पॉन्सरशिप करना प्रतिबंध है, इसके उल्लंघन करने पर □1000 तक का जुमार्ना अथवा 2 साल तक का करवास अथवा दोनों हो सकता है । धारा 6 ए, तंबाकू नियंत्रण अधिनियम की धारा 6ए के अनुसार किसी भी अवयस्क या बच्चों को तंबाकू उत्पादन बेचना या उसके द्वारा बेचवाना प्रतिबंध है इसके लिए उल्लंघन करता को □200 तक का जुमार्ना लिया जा सकता है । तंबाकू नियंत्रण अधिनियम की धारा 6बी के अनुसार किसी भी शिक्षण संस्थान के 100 गज के दायरे में तंबाकू उत्पादन बेचना अपराध है, तथा उल्लंघन करता के द्वारा □200 तक का जुमार्ना वसूला जा सकता है । तंबाकू नियंत्रण अधिनियम की धारा 7 के अनुसार किसी भी तंबाकू उत्पादकों के पैकेट के मुख्य भागों पर 85% हिस्से पर चित्रित स्वास्थ्य चेतावनी के बिना नहीं बचा जा सकता है तथा ऐसे उल्लंघन करने पर 5000 तक का जुमार्ना तथा 2 वर्ष तक का कारावास या दोनों हो सकता है । कार्यक्रम के दौरान स्कूली बच्चों को तंबाकू दुष्परिणाम के बारे में बड़े ही रोचक तरीके से समझाया गया, साथ ही साथ बच्चों के बीच तम्बाकू निषेद पर भाषण प्रतियोगिता कराई गई एवं प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चे बैभव कुमार,आदर्श कुमार एवं सिमरन खावारे को एन०सी०डी० कोषांग, देवघर द्वारा पुरष्कृत किया गया ।

भाजपा नेता ने कहा जरूरतमंद लोगों को पीएम आवास की सूची में नाम जोड़ें

दिव्य दिनकर,संवाददाता रोहित कुमार

चकाईःभाजपा नेता मनोज पोद्दार अपने क्षेत्र भ्रमण के दौरान जब आदिवासी गांव आमाटांड़ पहुंचे तो ग्रामीणों ने उन्हें घेर कर अपनी पीढ़ा सुनाते हुए कहा देख लीजिए भैया हमारे घर किस प्रकार टूटे फूटे हुए हैं और इस गांव के अधिकांश लोगों की माली हालत दयनीय है घर के अभाव में बारिश के दिनों में बड़ी तकलीफ होती है। मौके पर मौजुद ग्रामीण आदिवासी महिला चमेली किस्कू ने कहा हमें अपने हक का अधिकार दिलाईये पीएम आवास योजना का लाभ हमें नहीं मिल पा रहा है, हमारे साथ भेदभाव होता है। वहीं बड़की हांसदा, छोटकी टुडू, मुन्नी मरांडी, फुलमुनी हांसदा ने भी अपने अधिकार की बात कही। ग्रामीणों की बातों को सुनकर मनोज पोद्दार भावुक हुए और फॉरेन चकाई पंचायत के आवास सहायक को फोन लगाया और कहा जरुरत मंद लोगों का नाम सूची में शामिल करें भेदभाव करने की शि-ाकायत मिल रही है जवाब में सहायक ने आश्वाशन देते हुए कहा आमाटांड़ गांव से 25 लोगों को जोडने हेतू चिन्हित किया है उन्हें जोड़ लिया जाएगा। पोद्दार ने ग्रामीणों को आश्वासन देते हुए कहा कहा कि वे इस विषय पर प्रखंड विकास पदाधिकारी चकाई से मुलाकात कर पर बात करेंगे ताकि ग्रामीणों को इस-ाका उचित लाभ मिल सके। मौके पर भाजपा मंडल अध्यक्ष सूरजमल मुर्मू ग्रामीण भोला मुर्मू, तन्नू मुर्मू, निकोलस मुर्मू, जुगल मुर्मू, सुरेश मुर्मू, सुमन मुर्मू सहित कई लोग मौजूद थे।

संदीपनी पब्लिक स्कूल में प्री प्राइमरी के बच्चों ने मनाई दीपावली

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

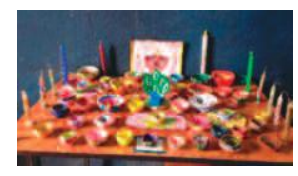

झौसागढ़ी,स्थित संदीपनि पब्लिक स्कूल में प्री प्राइमरी वर्ग के बच्चों के बीच दीपावली उत्सव का उल्लासपूर्वक आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभी बच्चे रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधानों में सजकर आए और पबच्चे अपने अभिभावकों की सहायता से एक-एक सुंदर दीपक सजाकर लाए थे। कार्यक्रम की श-ुरूआत मां लक्ष्मी और भगवान गणेश को पुष्प अर्पित कर की गई, जिसके पश्चात शिक्षिकाओं ने बच्चों को दीपावली के महत्व के बारे में जानकारी दी। शिक्षिकाओं ने बच्चों को बताया कि दीपावली का त्यौहार भगवान श्रीराम के अयोध्या आगमन की खुशी में मनाया जाता है। लंका विजय के बाद, भगवान श्रीराम ठीक 20 दिनों के पश्चात अयोध्या वापस लौटे थे और उसे दिन अमावस्या थी काली अंधेरी रात थी और उनके के स्वागत हेतु अयोध्यावासियों ने अपने-अपने घरों के द्वारों पर दीपक जलाकर पूरे नगर को प्रकाशित किया था। यह त्यौहार पाँच दिनों का होता है, जिस-ाकी शुरूआत धनतेरस से होती है और समापन भाई दूज पर होता है। बच्चों को दीपावली के समय पटाखों से सावधानी बरतने की सलाह दी गई और इको-फ्रेंडली दीपावली मनाने के सुझाव भी दिए गए। शिक्षिकाओं ने बच्चों को बताया कि दीपावली का धार्मिक एवं स्वास्थ्य से संबंधित महत्व भी है। पुराने समय में कच्चे मकान होते थे और बरसात के बाद उन्हें मरम्मत की जरूरत होती थी रंगा पुताई की जरूरत होती थी साथी की पतंगे भी बहुत ज्यादा बढ़ जाते थे तो दीपावली से पूर्व घरों की सफाई और दीयों के प्रकाश से कीट-पतंगों को दूर किया जाता था, ताकि घर स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्धक रहे। धनतेरस के दिन भगवान धन्वंतरि की पूजा कर आरोग्यता का वरदान माँगा जाता है, जबकि दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन एवं काली पूजा का भी आयोजन होता है। बच्चों को पटाखे जलाते समय सूती कपड़े पहनने, पूरी बाजू के वस्त्र पहनने, और जलते हुए पटाखों से दूरी बनाए रखने के बारे में समझाया गया। साथ ही, आग से संबंधित कोई भी दुर्घटना होने पर तुरंत बाल्टी में पानी या रेत का उपयोग करने का सुझाव भी दिया गया। दीपावली के दौरान मिठाइयों और उपहारों के आदान-प्रदान की परंपरा का महत्व बताते हुए शिक्षिकाओं ने बच्चों को समझाया कि इस त्योहार पर अपने रिश्तों में मिठास बढ़ाने, गरीबों की सहायता करने और समाज में समृद्धि लाने का भी संदेश छिपा है। कार्यक्रम के अंत में भगवान गणेश और लक्ष्मी की आरती उतारी गई और सभी को प्रसाद में लड्डू वितरित किया गया। सभी बच्चे और शिक्षकगण खुशी-खुशी अपने घर को विदा हुए।

हुसैनाबाद प्रतिनिधि

हुसैनाबाद नगर प्रशासन ने सड़क जाम कर रहे दुकानदारों पर की कार्रवाई,18 लोगों पर 45,000 रुपए का लगा जुमार्ना

हुसैनाबादः कृष्णा यादव

नगर पंचायत हुसैनाबाद क्षेत्र में अतिक्रमण के विरुद्ध बीते दिन सघन अभियान चलाया गया, जिसमें सड़क को अवरुद्ध कर रहे ठेला एवं दुकानदारों द्वारा लगाए गए अस्थाई शेड को हटाया गया और उन पर जुमार्ना भी लगाया गया। नगर प्रश-ासन ने इस कार्रवाई के दौरान साफ संदेश दिया कि क्षेत्र को अतिक्रमण और यातायात को जाम से मुक्त रखना सभी की जिम्मेदारी है। पुनः शिकायत मिलने पर कठोर कदम उठाए जाएंगे। इस अभियान में नगर पंचायत के साथ सिटी मिशन मैनेजर राकेश कुमार सिंह, थाना प्रभारी संजय यादव और पुलिस बल की उपस्थिति रही। कनीय अभियंता आशीष कुमार सिंह, अभिजीत दुबे, अजीत राज, सुधांशु तिवारी, गुलशेर अंसारी और बृजलाल यादव ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नगर पंचायत के कर्मी उमेंद्र ठाकुर, रविकांत पटेल, विकास, अवधेश और संजीत भी इस अभियान का हिस्सा बने।जमाव को हटाने के लिए जेसीबी मशीन का उपयोग किया गया, जिससे सड़क पर लगे ठेले एवं अन्य अस्थाई अतिक्रमणों को हटाया जा सका। कुल 18 लोगों पर 45,000 रुपए का जुमार्ना लगाया गया। अभियान के दौरान सभी व्यापारियों को चेतावनी दी गई कि भविष्य में अतिक्रमण की पुनरावृत्ति होने पर सख्त कदम उठाए जाएंगे।नगर पंचायत ने इस अभियान के जरिए स्पष्ट संदेश दिया कि हुसैनाबाद को अतिक्रमण मुक्त बनाने में सभी व्यवसायियों एवं स्थानीय निवासियों का सहयोग महत्वपूर्ण है।

बरकट्ठा विधानसभा में एवीएम नेता अनूप भाई का तूफानी दौरा, तीसरे विकल्प को मिल रहा समर्थन

इचाक झ

बरकट्ठा विधानसभा में एवीएम (अटल विचार मंच) के प्रत्याशी अनूप भाई ने जनसंपर्क अभियान के तहत दारू प्रखंड के विभिन्न गांवों का दौरा किया। अमली, गाड़ी पुणे, गाड़ी सदम, मेढ़कुरी कला और मेढ़कुरी खुर्द में जनसभाओं के दौरान महिलाओं की सक्रिय भागीदारी देखी गई। ग्रामीणों ने अनूप भाई के नेतृत्व में बदलाव की उम्मीद जताई है। अनूप भाई ने जनता के हित में शिक्षा, रोजगार, और बुजुर्गों के सम्मान पर अपने एजेंडे को प्राथमिकता देने की बात कही। बरकट्ठा में तीसरे विकल्प के रूप में उन्हें व्यापक समर्थन मिलता नजर आ रहा है। जनता, पुराने नेताओं से निराश होकर अनूप भाई को ईमानदार नेतृत्व के रूप में देख रही है।

आम्रपाली परियोजना में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का किया गया आयोजन

जीएम अमरेश सिंह ने दिलाई सत्यनिष्ठा की शपथ

दिव्य दिनकर:जिला ब्यूरो,कुन्दन पासवान

चतराः आम्रपाली कोल परियोजना क्षेत्र के जीएम कार्यालय परिसर में सोमवार को सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहां महाप्रबंधक अमरेश कुमार सिंह द्वारा अधिकारियों, कामगारों, विद्यार्थियों व ग्रामीणों को जीवन में ईमानदारी, विधिसम्मत कर्तव्यों का निर्वहन, भ्रष्टाचार मुक्त आचरण,जनहितों के प्रति समर्पण तथा भ्रष्टाचार उन्मूलन हेतु सत्यनिष्ठा की शपथ दिलाई गई।जीएम श्री सिंह ने कहा कि देश की आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक प्रगति में भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा है, जिसे सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों को हीं अपनाकर मुक्त किया जा सकता है। दूसरी ओर,परियोजना क्षेत्र के कुरहापतरा खेल मैदान में बॉलीवॉल तथा क्रिकेट का सद्भावना मैच खेला गया। जिसमें परियोजना उच्च विद्यालय टंडवा बनाम उत्क्रमित उच्च विद्यालय सेरनदाग के हुवे मैच में टंडवा विजयी हुआ।जबकि सीसीएल बनाम पत्रकार एकादश के बीच हुवे क्रिकेट मैच में पत्रकारों को हार का सामना करना पड़ा। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों द्वारा भ्रष्टाचार पर केंद्रित नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति दी गई, जहां मौजूद लोगों ने जमकर तालियां बजाये । सीसीएल महाप्रबंधक श्री सिंह ने विजेता व उप-विजेता टीम को ट्रॉफी,जर्सी तथा मेडल देकर सम्मानित किया। इस मौके पर परियोजना पदाधिकारी मो. एकराम, सीएसआर अधिकारी मोहसिन रजा, सीसीएल के तमाम अधिकारी व कर्मी, पत्रकारों समेत विस्थापित- प्रभावित क्षेत्र के सैंकड़ों ग्रामीण मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

सड़क दुर्घटना में पत्नी की मौत, पति जख्मी

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद / जिले के फेसर थाना क्षेत्र में अज्ञात पिकअप वैन की टक्कर से स्कूटी सवार दंपत्ति जख्मी हो गए जिसमें इलाज के दौरान पत्नी की मौत हो गई। वहीं जख्मी पति का एक निजी अस्पताल में इलाज करवाया गया। घटना फेसर थाना क्षेत्र के देवरियां गांव के समीप की हैं। मृतका की पहचान थाना क्षेत्र के बगइया गांव निवासी अरुण कुमार की 30 वर्षीय पत्नी पूजा कुमारी के रूप में की गई है। जानकारी के मुताबिक मृतिका इंदौर से जीएनएम की पढाई कर रही थी। सोमवार की शाम वह प्रायोगिक परीक्षा से संबंधित खरीदारी को लेकर स्टेशनरी दुकान अपने पति के साथ जिला मुख्यालय औरंगाबाद जा रही थीं तभी उस जगह एक अनियंत्रित पिकअप वैन ने स्कूटी सवार दंपत्ति को टक्कर मार दी जिसमें दोनों जख्मी हो गए। इसके बाद स्थानीय लोगों की मदद से महिला को सदर अस्पताल ले जाया गया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। वहीं इस घटना में जख्मी उसके पति का इलाज एक निजी अस्पताल में किया गया। इधर घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों को सौंप दिया गया। मृतका के दो बेटे 12 वर्षीय तेजस्वी और 10 वर्षीय विराट हैं। इस घटना से परिजनों में शोक व्याप्त है। सूचना पर पहुंचे जिला पार्षद अनिल यादव, राजद प्रवक्ता डॉ रमेश यादव एवं पोखराहा पंचायत मुखिया प्रतिनिधि अभिषेक कुमार सहित अन्य ने मृतका के पीड़ित परिजनों से मुलाकात की और इस दुःख की घड़ी में ढांढस बंधाया। उन्होंने जिला प्रशासन से मुआवजे की मांग की हैं।

आहर से मिला शव, जांच में जुटी पुलिस

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद/ जिले के दाउदनगर में आहर से एक व्यक्ति का शव मिलने से आसपास सनसनी फैल गई जिसमें दाउदनगर पुलिस मामले की छानबीन में जुट गई है। मामला थाना क्षेत्र अंतर्गत बिरई गांव के आहर की हैं। प्रथम दृष्टया से ऐसा प्रतीत होता है कि उस व्यक्ति को गोली मार कर हत्या कर दी गई है और शव यहां आहर में फेक दिया गया है। मृतक की पहचान थाना क्षेत्र के चौरी गांव निवासी विकास चौधरी के रूप में की गई है। दाउदनगर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी कुमार ऋषि राज ने बताया कि एक व्यक्ति का शव बरामद किया गया है। मामले में एफएसएल टीम का गठन किया गया है और जांच पड़ताल की जा रही हैं, प्रथम दृष्टया के अनुसार व्यक्ति को गोली लगने से मौत हुई है।

सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत, लोगों ने की सड़क जाम

रिपोर्ट- निशांत कुमार

औरंगाबाद / हसपुरा प्रखंड के पचरुखिया - गया पथ पर कोइलवां मोड़ के पास मोटरसाइकिल से दुर्घटनाग्रस्त होने की वजह से एक व्यक्ति की मौत होने का समाचार है। बताया जाता है कि मृतक रामस्वरूप वर्मा रफीगंज प्रखंड के सिमरा ग्राम के रहने वाले थें,जो मोटरसाइकिल से कोइलवां की तरफ पचरुखिया मोड़ की तरफ आ रहे थें । मोटरसाइकिल उनका भतीजा चला रहा था। कोइलवां मोड़ पर जैसे हीं उनकी मोटरसाइकिल मुड़ी,वैसे हीं देवहरा की तरफ से तेज रफ्तार से मोटरसाइकिल सवार ने इतने जोर से धक्का मारा कि पीछे बैठे रामस्वरूप वर्मा मोटरसाइकिल से सड़क पर फेंका गए जिसकी वजह से उनका सिर फट गया । फलस्वरुप देखते हीं देखते उनकी घटनास्थल पर हीं मौत हो गई। फिर उनकी लाश पचरुखिया मोड़ लाई गई, जहाँ आक्रोशित भीड़ ने सड़क जाम कर दिया और मुआवजे की मांग करने लगी। सूचना हसपुरा की पुलिस आई । समाचार लिखे जाने तक जाम नहीं हटा है ।

वेलफेयर बिल्डिंग इस्टेट प्रा लिमिटेड ने लौटाई जामा राशि

रिपोर्ट- प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद/ जिला उपभोक्ता अदालत के माध्यम से आज एक वेलफेयर बिल्डिंग इस्टेट प्रा लिमिटेड में पांच साल में दोगुना राशि के झांसे में आई हुई कोशल्या देवी इमामबाड़ा ओबरा को कुल जामा मूलधन राशि लोटा दी गई है और राशि प्राप्ति के लिए वाद चल रही है, अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि शिकायत वाद संख्या -03/22 के सुचक कोशल्या देवी ने मार्च 2022 में वेलफेयर बिल्डिंग प्रा लिमिटेड के प्रधान कार्यालय, शाखा कार्यालय और इंचार्ज पर केस की थी जिसमें आज वेलफेयर बिल्डिंग कम्पनी ने जिला उपभोक्ता अदालत के सदस्य बद्रीनारायण सिंह, बचाव पक्ष के अधिवक्ता जगनरायण सिंह के उपस्थित में कोशल्या देवी को नबे हजार का चेक प्रदान किया इससे पूर्व 2लाख50 हजार रुपए कम्पनी द्वारा सूचक को लोटाई गई है, सूचक ने नो लाख अस्सी हजार रुपए के लिए जिला उपभोक्ता अदालत में वाद प्रस्तुत किया है।

जयंती पर स्वर्गीय कार्तिक उरांव को श्रद्धांजलि

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

झारखंड प्रदेश कांग्रेस सेवादल के प्रदेश उपाध्यक्ष अजय कुमार ने जयंती पर स्वर्गीय कार्तिक उरांव को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे सफल अभियंता और राजनेता के साथ-साथ झारखंड आंदोलन के सूत्रधार भी थे। उन्होंने आदिवासियों को आदिवासी विकास परिषद के माध्यम से एकजुट होकर राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने का काम किया। छोटानागपुर क्षेत्र के काला हीरा कहलाने वाले कार्तिक उरांव पहले ऐसे राजनेता थे जिनके पास इंजीनियरिंग की डिग्री थी। आदिवासी समाज का विकास कार्तिक उरांव का सपना था। आदिवासियों की धर्म, संस्कृति और जमीन की रक्षा के लिए समाज को शिक्षित और संगठित करना उनका लक्ष्य, उनकी सोच व उनका सपना था। राष्ट्रीय विचारधारा के प्रतीक स्वर्गीय कार्तिक उरांव आदिवासियों को आम लोगों के हितों के लिए जीवन के अंतिम क्षणों तक संघर्ष करते रहे।

कोइलवा गाँव के मध्य विद्यालय में हुई शिक्षिका की पिटाई,ग्रामीण हुयें आक्रोश

ग्रामीणों ने जातिगत भेदभाव, अभद्रता का भी लगाया आरोप

राजू भारती, हसपुरा / औरंगाबाद

हसपुरा प्रखंड के कोइलवा गाँव के मध्य विद्यालय में एक चौंकाने वाली घटना घटी है । एक प्रखण्ड शिक्षिका द्वारा बीपीएससी शिक्षिका को बेरहमी से पिटाई करने का आरोप लगाया गया हैं । सूचना पर पहुँचे पीड़ित शिक्षिका के परिजनों ने उन्हें इलाज कराने को लेकर सामुदायिक स्वाथ्य केंद्र हसपुरा पहुंचाया,जहाँ के चिकित्सकों ने प्रारम्भिक इलाज के बाद बेहतर इलाज कराने को लेकर सदर अस्पताल औरंगाबाद रेफर कर दिया हैं । घटना सोमवार की दोपहर की हीं बताई जा रही हैं । इस घटना की लिखित शिकायत हसपुरा थाना में पीड़िता के द्वारा दिया गया, लेकिन दूसरे दिन तक कोई कार्यवाई नहीं हुई तो ग्रामीणों ने विद्यालय में पहुंचकर बच्चो के साथ प्रदर्शन किया । प्रदर्शन की सूचना मिलते हीं हसपुरा प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रदीप कुमार चौधरी घटनास्थल पर पहुंचे और ग्रामीणों से वातार्लाप कर उचित कार्यवाई का भरोषा देते हुए ग्रामीणों को शांत कराया । प्रदर्शन कर रहे छात्र शशिकांत कुमार,दीपू कुमार,अंकित कुमार, हरिओम कुमार,गीतांजलि कुमारी,निक्की कुमारी,प्रिया कुमारी,श्वेता कुमारी,नेहा कुमारी,सुधा कुमारी,मनीषा कुमारी,सोनाली कुमारी,अस्मिता कुमारी,अराधना कुमारी,खुशी कुमारी,छाया कुमारी के साथ सैकड़ो ग्रामीणों का कहना था कि जब तक इस विद्यालय में प्रधानाध्यापक जितेंद्र शर्मा,कुमकुम कुमारी,उमावती कुमारी एवं वहीं पर हाई स्कूल में पदस्थापित शिक्षक उपेंद्र कुमार इस विद्यालय में रहेंगे तब तक यह विद्यालय राजनीति का अखाड़ा बना रहेगा और हमेशा शिक्षक - शिक्षकों में मारपीट होती रहेगी । बच्चों ने कहा कि प्रधानाध्यापक के साथ यह चारों शिक्षक कार्यालय में बैठकर टाइम पास करते रहते हैं । वहीं बच्चों ने कहा कि जब से इस विद्यालय में बीपीएससी शिक्षिका पुष्पांजलि कुमारी आई हैं,तब से इस विद्यालय में उनके द्वारा हम लोग को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिया जा रहा है । कहा की वो पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ अपनी ड्यूटी निभाती हैं। बच्चों ने यह भी आरोप लगाया की पुष्पांजलि मैम को उमावती मैम हमेशा मारपीट व दुर्व्यवहार करती रहती हैं । यहाँ तक की उमावती कुमारी के पति भी विद्यालय में पहुंचकर पुष्पांजलि मैम को भद्दी भद्दी गालियां देकर चले जाते हैं । कई बार शिकायत करने के बावजूद भी आज तक कोई कार्यवाई नही हुई हैं। ग्रामीणों ने बीडीओ के समक्ष कहा की यदि प्रधानाध्यापक जितेंद्र सहित इन चारों शिक्षकों को सस्पेंड नही किया जाएगा,तो हम लोग विद्यालय में तालाबंदी कर कार्रवाई की मांग करेंगे । ग्रामीणों ने हाई स्कूल के शिक्षक उपेंद्र के ऊपर भी गर्मी आरोप लगाए । दोनों आरोपित शिक्षिका के ऊपर जातिवाद भेदभाव करने का भी गंभीर आरोप लगाया गया । बीडीओ प्रदीप कुमार चौधरी ने ग्रामीणों को समझा-बुझाकर मामला शांत कराया। उन्होंने ग्रामीणों से वातार्लाप कर कहा की जो भी शिक्षक दोषी पाये जाएंगे,उन पर विधि संवत कार्रवाई की जाएगी । उन्होंने कहा की जो भी शिक्षक बच्चों के बीच जाति का भेदभाव रखते हैं, उन पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी । बीपीएससी शिक्षिका के साथ हुई मारपीट पर उन्होंने पीड़ित शिक्षिका के भाई को उचित न्याय का भरोषा दिया, इधर प्रधानाध्यापक जितेंद्र ने भी कहा कि जनवरी से चल रही है अनबन, प्रधानाध्यापक जितेंद्र शर्मा ने बताया कि जनवरी से अब तक विद्यालय में अक्सर शिक्षकों के बीच मारपीट होती रहती है। छात्र-छात्राओं ने आरोप लगाया कि शिक्षिका कुमकुम और उमावती जाति के आधार पर बच्चों से दुर्व्यवहार करती हैं । उस पर उन्होंने कहा की इसको लेकर कई बार हम डाट फटकार लगाए हैं। उन्होंने कहा की अगर फिलहाल ऐसा हो रहा हैं तो उच्च अधिकारी को करवाई के लिए लिखा जाएगा । वहीं शिक्षिका उमावती कुमारी ने बताया कि गुट बाजी को लेकर विवाद हुई थी । हम दोनों के बीच मारपीट भी हुई है । हमारे शरीर में भी दर्द है । वहीं उनके पति की आने की बात पर उन्होंने कहा कि हमें विद्यालय तक छोड़ने वो प्रत्येक दिन आते हैं ' आरोप बेबुनियाद हैं, डीइओ ने कहा की जाँच कर होगी उचित कार्रवाई जिला शिक्षा पदाधिकारी ने कहा की जाँच कर उचित कार्रवाई की जायेगी । उन्होंने कहा की अगर बीपीएससी शिक्षिका की पिटाई हुई है तो जांच करा कर दोषियों के ऊपर विभागीय कार्रवाई की जाएगी।

महागठबंधन की बैठक संपन्न सुभाष को जीताने का लिया संकल्प

कोडरमा -विजय यादव

कोडरमा विधानसभा महागठबंधन प्रत्याशी सुभाष यादव की जीत सुनिश्चित करने को लेकर झुमरी तिलैया स्थित सुभाष यादव के आवास के समक्ष इंडिया महागठबंधन की बैठक आयोजित की गई बैठक की अध्यक्षता राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष सह जिला परिषद अध्यक्ष रामधन यादव ने किया जबकि संचालन रविंद्र शांडिल्य पूर्व प्रत्याशी विधानसभा कोडरमा झामुमो ने किया बैठक में महागठबंधन के प्रत्याशी की जीत सुनिश्चित को लेकर रणनीति बनाई गई इस अवसर पर सुभाष यादव की धर्मपत्नी लालती देवी भाई अशोक यादव पुत्र नीतीश यादव ने सुभाष यादव को जीत दिलाने की अपील की बैठक को संबोधित करते हुए रामधन यादव ने कहा कि सुभाष यादव एक जिंदादिल इंसान है गरीबों के मसीहा के रूप में उभरता हुआ व्यक्तित्व है इन्हें हम सबों को जिताने के लिए जनता के बीच जाना है वहीं रविंद्र शांडिल्य ने अपने संबोधन में कहा कि हेमंत सरकार में किए गए कल्याणकारी कार्यों को हम सबों को जनता के बीच प्रचारित करने की आवश्यकता है और यही प्रचार प्रत्याशी की जीत का सूत्रधार है साथ ही सुभाष यादव की व्यक्तित्व मतदाताओं को आकर्षित करेगी जिलाध्यक्ष वीरेंद्र पांडेय ने कहा कि महागठबंधन की जीत को लेकर कोडरमा में हवा बह चुकी है कांग्रेस जिला समिति के अध्यक्ष भागीरथ पासवान ने कहा कि सुभाष यादव की जीत ही हम सबों की जीत है बैठक को रामबचन यादव संजय पांडेय झामुमो महेश यादव मोहम्मद मुबारक मोहम्मद अनवारूल हक संजय कुमार साजन रघुनाथ दास मनोज रजक विजय यादव घनश्याम तुरी दीपक विश्वकर्मा निर्मला तिवारी मंजू देवी बेबी देवी मेनकी देवी राजू सिंह प्रदीप सिंह प्रभात राम अर्चना सिंह श्रवन सिंह गणेश स्वर्णकार विजय यादव दामोदर यादव जिला अध्यक्ष आम आदमी पार्टी प्रेम प्रकाश वामदल कन्हैया यादव महेश यादव सीमा पंडित शंकर यादव बहादुर यादव आशीष पांडे मंटू यादव भी यादव मोहम्मद साजिद दिलीप चंद्रवंशी आदि दर्जनों नेताओं ने बैठक को संबोधित किया। इस अवसर पर महागठबंधन के सैकड़ो कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे

रांची में ब्रिटिश डेप्युटी हाई कमिश्नर ने C.R.Y. चाइल्ड एक्टिविटी सेंटर का दौरा किया

रांची उत्कर्ष तिवारी

ब्रिटिश डेप्युटी हाई कमिश्नर डॉक्टर एंड्रयू फ्लेमिंग ने बीते मंगलवार को उ.फ. (चाइल्ड राइट्स एंड यू) द्वारा संचालित चाइल्ड एक्टिविटी सेंटर, कड़रूपुल टोली, रांची का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने बच्चों के साथ बातचीत की और उनके अनुभवों को साझा किया।डॉक्टर एंड्रयू फ्लेमिंग ने पहले भी बच्चों से वादा किया था कि वह उन्हें भारत-इंग्लैंड क्रिकेट मैच के दौरान इंग्लैंड क्रिकेट टीम से मिलाएंगे। दौरे में डॉक्टर एंड्रयू फ्लेमिंग ने बच्चों के साथ गाना गाया और झूमे। उन्होंने बच्चों में हुए सुधार और उनके अनुभवों को जानने के लिए बातचीत की। उन्होंने रांची विजिट के दौरान फिर से बच्चों से मिलने की इच्छा जताई। इस अवसर पर उ.फ. के मैनेजर सब्यसाची चटर्जी, प्रोजेक्ट कोऑर्डिनेटर अविनाश कुमार दुबे, और शिक्षक अंकिता कुमारी नायक और सनी कुमार राम उपस्थित रहे।

निर्दलीय प्रत्याशी हर्ष अजमेरा ने की समाजसेवी मंजीत यादव की हत्या की कड़ी निंदा

हजारीबाग-

युवा नेता सह निर्दलीय प्रत्याशी हर्ष अजमेरा ने समाजसेवी मंजीत यादव की निर्मम हत्या की कड़ी निंदा की है। उन्होंने इस घटना को समाज के लिए एक बड़ी क्षति करार देते हुए कहा कि मंजीत यादव न केवल समाज सेवा में समर्पित थे, बल्कि रामनवमी महासमिति के पूर्व अध्यक्ष के रूप में भी उन्होंने अमूल्य योगदान दिया। मंजीत यादव ने वर्ष 2008 से 2011 तक चार वर्षों तक महासमिति का नेतृत्व किया, जिसमें उन्होंने समाज के धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हर्ष अजमेरा ने इस दुखद घटना पर गहरा शोक प्रकट किया है, उन्होंने कहा, मंजीत यादव जैसे समर्पित समाजसेवियों की हत्या न केवल उनके परिवार के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए एक बड़ा आघात है। उनका समाज सेवा में योगदान अमूल्य था, और उनकी अनुपस्थिति एक खालीपन छोड़ गई है जिसे भरना कठिन होगा। उन्होंने प्रशासन से मांग की कि इस हत्या की निष्पक्ष और त्वरित जांच हो ताकि दोषियों को कठोरतम सजा दी जा सके और समाज में ऐसा संदेश जाए कि अपराधियों को बख्शा नहीं जाएगा। अजमेरा ने यह भी बताया कि ऐसे समय में समाज के सभी वर्गों को एकजुट होकर काम करना चाहिए ताकि पीड़ित परिवार को न्याय मिल सके और समाज में अपराध को जड़ से समाप्त करने की दिशा में कदम बढ़ाए जा सकें।

निर्दलीय प्रत्याशी सुरेन्द्र भाई मोदी ने प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न गांवों में भ्रमण कर लोगों से मांगा आशीर्वाद

संवाददाता बरकट्ठा

बरकट्ठा। बरकट्ठा विधानसभा क्षेत्र से निर्दलीय प्रत्याशी सुरेंद्र भाई मोदी ने प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न गांवों में जनसंपर्क अभियान चलाकर मतदाताओं से आशीर्वाद मांगा। उन्होंने प्रखंड क्षेत्र के ग्राम छुतहरी कटिया, बरकंनगांगों, चुगलामो, तुर्कबाद, केन्दुआ, बनपुरा, घसकोडीह, गैंडा, बसरामो एवं डुमरीया टांड़ में अपने समर्थकों के साथ जाकर मतदाताओं से अपने पक्ष वोट देने कि अपील किया देकर आशीर्वाद मांगा। सुरेंद्र मोदी ने कहा कि इस बार क्षेत्र की जनता बदलाव चाहती है और विकास को प्राथमिकता देने वाले नेतृत्व का समर्थन कर रही है। सुरेंद्र मोदी ने अपने विकास एजेंडे को जनता के सामने रखा और कहा कि यदि उन्हें जनता का समर्थन और आशीर्वाद मिलता है तो वे क्षेत्र के हर प्रखंड में एक डिग्री कॉलेज की स्थापना सुनिश्चित करेंगे। इसके साथ ही उन्होंने प्रत्येक प्रखंड के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों को सदर अस्पताल के स्तर का बनाने की बात कही, ताकि लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें। सुरेंद्र मोदी ने सूर्यकुंड को आस्था का केंद्र मानते हुए इसे एक प्रमुख पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है, जिससे क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा मिल सके और स्थानीय लोगों को रोजगार के नए अवसर मिलें। जनसंपर्क अभियान में भगवानी सिंह, मणिलाल मंडल, इजरायल खान, श्यामसुंदर सिंह, बीरेंद्र मोदी, प्रमिला बर्नवाल, ईश्वर मोदी, सुनील कुमार, सकलदेव बर्नवाल, रामदेव मंडल, रंजीत सिंह, नईम खान समेत अन्य लोग शामिल थे।

डीआईजी के निर्देश पर गठित टीम ने अवैध मवेशी लदा तीन ट्रक को पकड़ा. चालक को जेल

संवाददाता बरकट्ठा

बरकट्ठा। बरकट्ठा पुलिस ने अवैध मवेशी लदा तीन ट्रक को पकड़ा है। डीआईजी हजारीबाग के निर्देश पर टीम गठीत कर कार्रवाई किया गया। बरकट्ठा थाना प्रभारी राजेश कुमार भोक्ता ने टीम के साथ मिलकर थाना के समीप जांच अभियान चलाया। इस दौरान बरही की ओर से आ रही अवैध पशु लदा ट्रक नंबर डब्ल्यूबी 11 डी 6995, यूपी 61 बीटी 7012, डब्ल्यूबी 11 डी 2265 को पकड़ा। तीनों ट्रकों की जांच करने पर चालक और व्यापारी के द्वारा किसी तरह का वैध कागजात नहीं दिया गया। पकड़े गए ट्रक चालकों ने बताया कि सभी पशु बिहार से बंगाल ले जाया जा रहा है. तीनों ट्रकों में 54 भैंस लदा था जिसकी देखभाल के लिए हजारीबाग गौशाला भेज दिया गया। इस बाबत बरकट्ठा थाना में कांड संख्या 199/24 के तहत मामला दर्ज किया गया है। तीनों ट्रक चालकों को गिरफ्तार कर जेल भेजने की प्रक्रिया की जा रही थी। वहीं टीम के द्वारा बताया गया कि कई ट्रक जिसपर अवैध पशु लदा था हमलोगों को चकमा देकर भाग गये। जिसकी सूचना बगोदर थाना को दे दी गई है। जानकारी हो कि झारखंड में पशु तस्करी पर पूर्णतः रोक लगाई गई है। इसके बावजूद भी प्रत्येक दिन जीटी रोड़ के रास्ते बिहार से बंगाल की दर्जनों ट्रक अवैध पशु को लाद कर गुजती है। चोरदाहा चेकपोस्ट पर चौबीस घंटे पुलिस की जांच होने के बाद भी अवैध पशु लदा पास कैसे होती है यह प्रश्न बना हुआ है। आखिर चौपारण, बरही, बरकट्ठा पुलिस के रहते कौन है इस धंधे का मास्टर माइंड जो जानवरों को बेखौफ होकर पास करवाता है। ग्रामीणों का कहना है कि इस धंधे में खादी और खाकी की मिलि भगत से धंधा फल-फूल रहा है। आखिर डीआईजी की टीम यह ट्रक को कैसे पकड़ती है जबकि संबंधित थाना नहीं पकड़ पाती है।

हजारीबाग सदर विधानसभा के भाजपा विधायक प्रत्याशी ने आशीर्वाद यात्रा के माध्यम से कटकमदाग मंडल में दौरा किया

जनहित के कार्य के लिए हमेशा तत्पर रहता हूँ - प्रदीप प्रसाद

हजारीबाग

हजारीबाग सदर विधानसभा के कटकमदाग मंडल के शंकरपूर, बघमारवा, बेस, हारम, कुरलूगवाँ, हुरूदाग, पुंदरी, फतहा, ओदरना जमवारी, सिसोई, सिरका, कसुम्भा, चिची, कुबा, पुरनी अडरा, अडरा, केशवारिया, झगरबाँध, उदयपूर, बेंदी सहित दर्जनों गाँवों मे अशीर्वाद यात्रा के माध्यम से हजारीबाग सदर विधानसभा भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद ने 13 नवंबर को कमल निशान पर बटन दबाकर भाजपा सरकार बनानें की अपील किया। प्रदीप प्रसाद ने अशीर्वाद यात्रा में देवतुल्य जनता को सम्बोधित करते हुवे कहा कि हजारीबाग मेरा परिवार है। आशा है आप सभी का अशीर्वाद मिला तो विधानसभा क्षेत्र का सम्पूर्ण विकास करेगें। ठगबंधन की सरकार नें झारखंड की भोली भाली जनता को बेवकूफ बनानें का काम किया है। अब जनता मन बना चूँका है कि पूरे प्रदेश में कमल खिलेगा ओर भाजपा की सरकार बनेगी। डबल इंजन की सरकार से झारखंड समृद्ध व खुशहाल होगा। हजारीबाग के लिए भाजपा का साथ देनें का आग्रह किया। इस आशीर्वाद यात्रा में भाजपा के वरिष्ठ नेता टौनी जैन, भाजपा नेता कमल गोप, अजय साहु, कटकमदाग प्रभारी मंडल अध्यक्ष अरूण राणा, पूर्व मंडल अध्यक्ष कविन्द्र यादव , कटकमदाग मुखिया संघ अध्यक्ष राजेश गुप्ता, उप प्रमुख विमल गुप्ता, पूर्व प्रमुख अशोक यादव, शिवपाल यादव,पंकज ठाकुर, संजु पासवान, विनोद प्रसाद, राजेन्द्र प्रसाद, पूर्व मुखिया कामेश्वर दास, पूर्व मुखिया पिन्टु रानी, पूर्व जिप सदस्य प्रियंका कुमारी, वार्ड पार्षद विषु विश्कर्मा,, वासुदेव गोप, कुन्दन राम, पंकज ठाकुर सहित सैकेडो संख्या मे लोग उपस्थित थे।

समान्य प्रेक्षक व जिला निर्वाचन पदाधिकारी की मौजूदगी में द्वितीय रेंडमाजेशन प्रक्रिया संपन्न

कोडरमा - विजय यादव

झारखंड विधानसभा आम चुनाव -2024 के निमित्त कोडरमा जिला के 19 कोडरमा विधानसभा क्षेत्र चुनाव के लिए चल रही तैयारियों के क्रम में चुनाव आयोग के साफ्टवेयर में 19 कोडरमा विधानसभा क्षेत्र के लिए मतदान कर्मीयों का द्वितीय रेंडमाजेशन प्रक्रिया 19 कोडरमा के समान्य प्रेक्षक माल सिंह भयडिया, जिला निर्वाचन पदाधिकारी -सह-उपायुक्त मेघा भारद्वाज, उप विकास आयुक्त ऋतुराज, निवार्ची पदाधिकारी सह अनुमंडल पदाधिकारी रिया सिंह मौजूद की उपस्थिति में सम्पन्न किया गया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया की सभी महत्वपूर्ण कार्य दायित्व की शैक्षणिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण सभी कर्मियों को मुहैया कराया जाए. उन्होंने कहा कि सभी प्रपत्रों का गंभीरतापूर्वक अध्ययन करके जिला कोडरमा में निष्पक्ष, शांतिपूर्ण व सुरक्षित चुनाव संपन्न कराना सुनिश्चित करेंगे। इस मौके पर जिला आपूर्ति पदाधिकारी अविनाश पूर्णेन्दु, उप निर्वाचन पदाधिकारी प्रिंस गोडविन कुजुर, जिला सूचना एवं विज्ञान पदाधिकारी सुभाष यादव, जिला शिक्षा पदाधिकारी अविनाश राम, कार्यपालक अभियंता लघु सिंचाई विभाग, ई.डी.एम राजदेव महतो समेत अन्य मौजूद रहे।

ग्रीन वैली में दीपोत्सव के साथ मतोत्सव की अनूठी पहल, बच्चों ने की मतदाता जागरूकता की अपील

हजारीबाग झ्र

हजारीबाग-बड़कागांव मार्ग स्थित ग्रीन वैली पब्लिक स्कूल, जमुआरी गांव में दीपावली उत्सव के दौरान बच्चों ने मतदाता जागरूकता के लिए अनोखी पहल की। बच्चों ने 13 नवंबर के मतदान को ध्यान में रखते हुए मतदाता जागरूकता कार्ड बनाए और उन्हें अपने पड़ोस में बांटकर वोट देने की अपील की।स्कूल के प्रिंसिपल विश्वेन्दु जयपुरियार ने बताया कि यह प्रयास मतदाताओं को जागरूक करने के लिए है। बच्चों द्वारा बनाए गए कार्ड्स में पहले मतदान फिर जलपान, बनो देश के भाग्य विधाता, जैसे स्लोगन लिखे गए थे। इससे पहले लोकसभा चुनाव के दौरान भी बच्चों ने डुगडुगी बजाकर और रिपोर्ट कार्ड के साथ स्लोगन वाली पर्चियां देकर वोटिंग के प्रति जागरूक किया था।

आईएएस अधिकारी विपिन कुमार ने एएआई के अध्यक्ष का पदभार संभाला

एजेंसी

नई दिल्ली। बिहार कैडर के 1996 बैच के आईएएस अधिकारी विपिन कुमार ने भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) के अध्यक्ष का पदभार संभाल लिया। एएआई ने आज सोशल मीडिया एक्स पर आज यह जानकारी साझा की। एएआई के मुताबिक विपिन कुमार इससे पहले शिक्षा मंत्रालय के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग में अतिरिक्त सचिव थे। बिहार में अपनी तैनाती के दौरान उन्होंने राज्य के कई जिलों में जिला मजिस्ट्रेट के रूप में काम किया। वह बिहार पुल निर्माण निगम के अध्यक्ष, बिहार दुग्ध सहकारी संघ (सुधा) के प्रबंध निदेशक और मिड-डे स्कीम-बिहार के निदेशक भी रहे। विपिन कुमार के पास इलेक्ट्रॉनिक्स एवं संचार इंजीनियरिंग की डिग्री है।

हरियाणा के कारण प्रदूषित हो रहा दिल्ली का हवा-पानी : विनय मिश्रा

एजेंसी

नई दिल्ली। 'आप' विधायक विनय मिश्रा ने औपचारिक रूप से दिल्ली जल बोर्ड के उपाध्यक्ष का पद संभाल लिया।उन्होंने अरविंद केजरीवाल के मार्गदर्शन में दिल्लीवासियों को स्वच्छ और मुफ्त पानी उपलब्ध कराने का भरोसा दिलाया। विनय मिश्रा ने कहा कि भाजपा ने अपनी गंदी राजनीति के चलते दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) को एक साल से अपंग बना दिया था, पानी की सप्लाई और सीवर की सफाई के काम ठप थे। केजरीवाल के दिशा-निर्देश में जल बोर्ड फिर पटरी पर लौटेगा। उन्होंने कहा, ÷हम दिल्लीवासियों की पानी और सीवर की समस्या को जल्द हल कर देंगे। छठ पूजा हमारे लिए एक बहुत बड़ा आयोजन है। आप सरकार हर साल की तरह इस बार भी यमुना नदी पर छठ पूजा के अच्छे इंतजाम करेगी। हरियाणा में जलने वाली पराली और वहां से यमुना में छोड़े जाने वाले औद्योगिक कचरे की वजह से दिल्ली में वायु और जल प्रदूषण हो रहा है। मैंने मुख्यमंत्री आतिशी से अपील की है कि वह हरियाणा सरकार से बात करके वहां से आ रहे औद्योगिक कचरे को रुकवाएं ताकि हम दिल्ली वालों को साफ पानी मिल सके। विनय मिश्रा ने कहा कि दिल्ली पिछले एक साल से चुनौतियों का सामना कर रही है। सबसे पहले इन्होंने दिल्ली के उपमुख्यमंत्री को गिरफ्तार करवाया और फिर अरविंद केजरीवाल को भी गिरफ्तार करवाया ताकि दिल्ली के विकास कार्यों को रोका जा सके।

रेलरेस्ट्रो एप से ट्रेन सीट पर भोजन पहुंचाने की सुविधा 450 स्टेशनों तक पहुंची

एजेंसी

नई दिल्ली। ट्रेन फूड एप रेलरेस्ट्रो ने कहा है कि वह अब देश भर में 450 से अधिक रेलवे स्टेशनों पर रेल यात्रियों को उनकी सीट पर भोजन की आपूर्ति की सुविधा प्रदान कर रहा है। यह जानकारी रेलरेस्ट्रो की एक विज्ञप्ति में दी गयी। रेलरेट्रो के संस्थापक मनीष चंद्रा ने कहा, हम अपने एप की सुविधा को लेकर यात्रियों के भरोसे को देखकर काफी खुश हैं, हमारा लक्ष्य यात्रियों को खाने को लेकर अच्छा से अच्छा अनुभव प्रदान करना चाहते हैं।

दिल्ली के लोगों पर हुए अन्याय के खिलाफ कांग्रेस 'न्याय यात्रा' निकाल रही है : पवन खेड़ा

एजेंसी

नई दिल्ली । कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने कांग्रेस की 'न्याय यात्रा' और वायनाड लोकसभा सीट पर हो रहे उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी प्रियंका गांधी के नामांकन के दौरान दिए एफिडेविट पर भाजपा के आरोपों पर प्रतिक्रिया दी है।कांग्रेस द्वारा न्याय यात्रा निकालने के पीछे उद्देश्य क्या है? इस पर कांग्रेस नेता ने कहा, पिछले 10 सालों में दिल्ली के साथ जो अन्याय हुआ है, चाहे वह केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा हो या राज्य की आम आदमी पार्टी सरकार द्वारा किया गया हो, न्याय यात्रा के माध्यम से उसका विरोध किया जा रहा है। न्याय यात्रा को दिल्ली के लोग बहुत उम्मीदों के साथ देख रहे हैं। प्रियंका गांधी पर अपनी संपत्ति के बारे में पूरी जानकारी न देने के भाजपा के आरोप पर कांग्रेस नेता ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा, वह चुनौती दें, हम जवाब देंगे। आरोप लगाकर भागने का क्या औचित्य है। बता दें कि 26 अक्टूबर को भाजपा प्रवक्ता गौरव भाटिया ने केरल के वायनाड से कांग्रेस की लोकसभा उम्मीदवार प्रियंका गांधी वाड्रा के हलफनामे पर सवाल उठाए थे। भाटिया ने कहा था कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के मुताबिक, हर उम्मीदवार को अपने आपराधिक इतिहास के साथ ही अपने और अपने जीवनसाथी की संपत्तियों तथा देनदारियों की जानकारी देनी होती है। लेकिन, प्रियंका गांधी वाड्रा ने इसे लेकर अपने हलफनामे में विस्तृत विवरण नहीं दिया है, कई जानकारियों और तथ्यों को छुपाया है।

सरदार पटेल की जयंती के कार्यक्रम में कार्यकर्ता बढ़चढ़ कर भाग लें : नड्डा

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा ने पार्टी के कार्यकर्ताओं का देश के प्रथम उप प्रधानमंत्री भारत रत्न सरदार वल्लभ पटेल की 150वीं जयंती को धूमधाम से मनाने और मंगलवार को होने वाली रन फॉर यूनिटी में बढ़ चढ़ कर भाग लेने का आह्वान किया है।

श्री नड्डा ने आज यहां एक बयान में कहा कि भाजपा, भारत के लौह पुरुष, आजादी के बाद भारतवर्ष के एकीकरण के सूत्रधार, दूरद्रष्टा एवं देश के पहले उप प्रधानमंत्री भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती को पूरे हर्षोल्लास के साथ देश भर में मनाती है। 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के पश्चात केंद्र सरकार पूरे देश में आदर एवं सम्मान के साथ सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती आदर एवं सम्मान के साथ मनाई जाती है।भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि सरदार पटेल की 143वीं जयंती के अवसर पर

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 31 अक्टूबर 2018 को दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' का अनावरण किया था। इस दिन केंद्र सरकार की ओर से 'रन फॉर यूनिटी' सहित कई कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं और सरदार पटेल को नमन कर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के आह्वान पर हम 2014 से सरदार पटेल की जयंती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाते हैं।उन्होंने कहा, 'इस वर्ष सरदार पटेल जी जयंती का 150वां वर्ष शुरू हो रहा है। इस अवसर पर मोदी सरकार द्वारा अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। मेरा पार्टी के कार्यकर्ताओं से विनम्र अनुरोध है कि आप इन कार्यक्रमों में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दें। साथ ही, भारत रत्न सरदार पटेल जी से जुड़े विचार और कार्य भी आप सोशल मीडिया पर सरदार150 हैशटैग के साथ साझा कर उनके विचारों, आदर्शों को प्रचारित एवं प्रसारित करें। श्री नड्डा ने कहा कि श्री मोदी ने अपने लोकप्रिय कार्यक्रम ÷मन की बात' के 115वें संस्करण में कहा है कि इस बार 31 अक्टूबर को सरदार पटेल की जयंती के दिन ही दीपावली का पर्व भी है। हम हर साल 31 अक्टूबर 'राष्ट्रीय एकता दिवस' पर 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन करते हैं। दीपावली की वजह से इस बार 29 अक्टूबर यानि 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन किया जायेगा। भाजपा अध्यक्ष ने कहा, 'मेरा आग्रह है, ज्यादा से ज्यादा संख्या में इसमें हिस्सा लीजिए देश की एकता के मंत्र के साथ ही फिटनेस के मंत्र को भी हर तरफ फैलाईये। पार्टी कार्यकर्ता 29 अक्टूबर को ÷रन फॉर यूनिटी÷ का कार्यक्रम सफल बनाने के लिए कार्य करें। मैं भाजपा के सांसदों एवं विधायकों सहित सभी जनप्रतिनिधियों तथा पार्टी के सभी पदाधिकारियों से भी अनुरोध है कि वे भी 'रन फॉर यूनिटी' सहित सभी कार्यक्रमों में भाग लें और सरदार पटेल को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करें। भारत की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने में सरदार पटेल की अद्वितीय भूमिका हम सभी के लिये सदैव प्रेरणा का अक्षय स्रोत रहेगी।

माधवी बुच के खिलाफ हम करेंगे कार्रवाई : राहुल

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कहा है कि प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड - सेबी प्रमुख माधवी बुच के खिलाफ सरकार कोई कार्रवाई नहीं कर रही है एवं ना ही इस मामले की जांच की जा रही है लेकिन कांग्रेस ने जांच की है तथा समय आने पर कार्रवाई भी की जाएगी। श्री गांधी ने कहा कि सेबी प्रमुख ने घोटाला किया है लेकिन उनसे सवाल नहीं पूछे जाते हैं और ना ही उन पर लगे आरोपों की जांच होती है। उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं होती है क्योंकि मोदी सरकार अडानी और बुच जैसे लोगों के पैसे की रक्षक बनी है और उनको बचाने में लगी है।

श्री गांधी ने कहा,÷सेबी अध्यक्ष माधबी बुच आईसीआईसीआई से किस बात के पैसे ले रही थीं। अध्यक्ष रहते हुए अनलिस्टेड कंपनियों में शेयर कैसे रख सकती थीं। उस कंपनी को स्टार्टअप इंडिया के करोड़ों रुपए क्यों मिले। सरकार किस डर से इस पर कार्रवाई नहीं कर रही। उन्होंने

कहा, साफ है बुच अडानी के पैसे, उनका मूल्यांकन और प्रतिष्ठा की रक्षा कर रही है मगर बुच को कौन और क्यों बचा रहा है। कांग्रेस नेता ने कहा कि उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो रही है लेकिन कांग्रेस करेगी। उन्होंने कहा,÷एजेंसियों ने जांच नहीं की, मीडिया ने सवाल नहीं किया, सरकार ने कार्रवाई नहीं की - हमने जांच भी की है, सवाल भी कर रहे हैं और वक्त आने पर कार्रवाई भी होगी।

वेद के मंत्रों के साथ तटरक्षक बल में शामिल हुए 'अदम्य' और 'अक्षर'

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय तट रक्षक ने गोवा शिपयार्ड लिमिटेड (जीएसएल) द्वारा निर्मित दो फास्ट पेट्रोल वेसल (एफपीवी) जहाज 'अदम्य' और 'अक्षर' एक साथ लॉन्च किये। भारतीय तटरक्षक के प्रवक्ता ने बताया कि ये जहाज उन आठ जहाजों का हिस्सा है जिनके लिए जीएसएल से 473 करोड़ रूपये का अनुबंध किया गया है। ये दोनों 60 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री के साथ बनाये गये हैं।

ये उन्नत जहाज सुरक्षा, निगरानी और नियंत्रण प्रणालियों से लैस हैं और इनसे तटरक्षकों को अपतटीय संपत्तियों और द्वीप क्षेत्रों की रक्षा में मदद मिलेगी। इनकी लंबाई 52 मीटर, चौड़ाई 8 मीटर, अधिकतम गति 27 समुद्री मील है और इसका वजन 320 टन है। जहाजों को अमेरिकन ब्यूरो ऑफ शिपिंग और इंडियन रजिस्टर ऑफ शिपिंग के कड़े दोहरे वर्ग

प्रमाणीकरण के तहत आईसीजी की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिजाइन और निर्मित किया गया है। जहाज का उद्घाटन और नामकरण महानिदेशक भारतीय तटरक्षक, परमेश शिवमणि की पत्नी प्रिया परमेश द्वारा 'अथर्ववेद' के मंत्रों के बीच एक समारोह में किया गया।

महानिदेशक ने सभा को संबोधित करते हुए जीएसएल और विभिन्न उद्योगों के प्रयासों की सराहना की कि सभी जहाजों के निर्माण में स्वदेशी सामग्री का जरूरत के अनुसार इस्तेमाल किया गया है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि को हासिल करने के लिए जीएसएल के कर्मचारियों को बधाई देते हुए उन्होंने उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए प्रोत्साहित किया कि रक्षा क्षेत्र में 'आत्मनिर्भरता' की दिशा में सही ढंग से आगे बढा जाना चाहिए। समारोह में जीएसएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ब्रजेश कुमार उपाध्याय और नौसेना, आईसीजी, जीएसएल और वर्गीकरण समितियों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

प्रदूषण के ख़िलाफ़ 'युद्ध' में तैनात होंगे 10 हज़ार मार्शल : आतिशी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने कहा है कि दिल्ली में एक सप्ताह के अंदर 10 हज़ार नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों और बस मार्शलों को प्रदूषण के ख़िलाफ़ 'युद्ध' में ज़मीन पर तैनात किया जाएगा।

सुश्री आतिशी ने कहा कि प्रदूषण के खिलाफ जंग में 10,000 नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों और बस मार्शलों को ज़मीन पर तैनात किया जाएगा और सप्ताह भर में इनका पंजीकरण शुरू होगा। उन्होंने कहा कि, वाहनों को गलत तरीके से प्रदूषण सर्टिफिकेट न मिलें, इसके लिए सभी जांच केंद्रों पर नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों और बस मार्शल तैनात किए जाएँगे। साथ ही ग्रैप की पाबंदियां बढ़ने के साथ दिल्ली की सीमाओं पर चेकिंग के एनफोर्समेंट टीमों के साथ बस मार्शलों की भी तैनाती होगी। उन्होंने कहा कि

प्रदूषण रोकथाम के लिए दिल्ली नगर निगम और दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की मदद के साथ-साथ जागरूकता अभियानों में भी मार्शलों की तैनाती होगी। उन्होंने कहा कि, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) चाहे जितना परेशान करे,आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल के मार्गदर्शन में हम दिल्लीवासियों की हर समस्या का समाधान जरूर निकालेंगे।

सुश्री आतिशी ने कहा कि दिल्ली में बसों में महिलाओं को सुरक्षा देने के लिए 2017-18 में दिल्ली सरकार ने बस मार्शल तैनात किए लेकिन 2023 के अप्रैल से केंद्र सरकार ने इन बस मार्शलों को हटाने की साजिश रची और इनकी तनख्वाह रोक दी। उन्होंने कहा कि आख़िरकार इन बस मार्शलों का संघर्ष रंग लाया और केंद्र सरकार को इन बस मार्शलों के संघर्ष के सामने झुकना पड़ा। दिल्ली सरकार कहती आ रही थी कि, इन बस मार्शलों को दोबारा नौकरी पर रखा जाए, उस प्रस्ताव को आख़िरकार केंद्र सरकार को मानना पड़ा।

दिल्ली में कांग्रेस की न्याय यात्रा का उद्देश्य दिल्ली वासियों को अन्याय से मुक्ति दिलाना : आलोक शर्मा

एजेंसी

द्वनई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी दिल्ली चुनाव से पहले राज्य में न्याय यात्रा शुरू करने जा रही है। पार्टी यह यात्रा आठ नवंबर से शुरू कर रही है। यह यात्रा आठ नवंबर से शुरू होकर चार दिसंबर तक चलेगी। इस पर कांग्रेस सचिव आलोक शर्मा ने प्रतिक्रिया दी है।

उन्होंने बात करते हुए कहा, मुझे लगता है कि न्याय का मतलब बहुत सरल है, जिन लोगों के साथ वर्षों से अन्याय हो रहा था, उससे उन्हें कैसे मुक्ति मिले। जिसे केजरीवाल की सरकार और मोदी की सरकार ने जो किया उससे कैसे निजात पाई जाए। आज दिल्ली प्रदूषण में नंबर वन है। कानून व्यवस्था से जुड़े अपराध में नंबर वन है। बेरोजगारी में नंबर वन है। महंगाई इस तरह से बढ़ रही है, जिस तरह से सारी समस्याएं हैं, पता ही नहीं चलता कि सड़क में गड्ढा है या गड्ढे में सड़क है। कांग्रेस पार्टी दिल्ली को न्याय दिलाने के लिए

न्याय यात्रा निकाल रही है। हम दिल्ली की जनता की आवाज भी सुनेंगे और अपने पिता की आवाज को लोगों के सामने रखेंगे। साथ ही उन्होंने कांग्रेस पार्टी द्वारा दिल्ली में 25 सीटों पर ध्यान केंद्रित करने की बात पर उन्होंने कहा, ÷नहीं, ऐसा नहीं है, ये सिर्फ मीडिया की खबरें हैं, सभी 70 सीटों पर ध्यान केंद्रित है और लड़ाई है। इसके बाद प्रियंका गांधी द्वारा वायनाड में भाजपा द्वारा लगाए गए संपत्ति छिपाने के आरोप पर उन्होंने कहा, ÷चुनाव आयोग इसकी जांच करेगा, भाजपा का काम हमें भटकाना है, असली मुद्दों पर बात करना नहीं है। वायनाड में इतनी त्रासदी हुई, भाजपा ने क्या किया, केंद्र सरकार ने क्या किया, यह हमें बताएं। बता दें कि कांग्रेस पार्टी दिल्ली चुनाव से पहले राज्य में न्याय यात्रा शुरू करने जा रही है। पार्टी यह यात्रा आठ नवंबर से शुरू कर रही है। यह यात्रा आठ नवंबर से शुरू होकर चार दिसंबर तक चलेगी। इस न्याय यात्रा का आयोजन पार्टी चार चरणों में करेगी। इस यात्रा के दौरान प्रत्येक चरण एक सप्ताह का होगा। इसमें 16 विधानसभा क्षेत्रों को शामिल करने का लक्ष्य रखा गया है। कांग्रेस पार्टी इस यात्रा के माध्यम से अपने वादों और मुद्दों को जनता तक पहुंचाने का प्रयास करेगी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत जेपी नड्डा ने सत्यनिष्ठा की ली शपथ, पारदर्शिता पर दिया जोर

एजेंसी

नई दिल्ली। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के भाग के रूप में निर्माण भवन में केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याणा मंत्री जेपी नड्डा ने मंत्रालय के अधिकारियों और डॉक्टरों के साथ सत्यनिष्ठा की शपथ के लिए आयोजित समारोह में भाग लिया। जेपी नड्डा ने सोशल मीडिया एक्स पर तस्वीरें साझा करते हुए कहा कि यह उत्सव हम सभी को शासन में पारदर्शिता और नैतिक आचरण बनाए रखने की हमारी साझा जिम्मेदारी की याद दिलाता है।

जेपी नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के गतिशील नेतृत्व में हमारी सरकार भ्रष्टाचार मुक्त भारत के लिए प्रतिबद्ध है। सार्वजनिक जीवन से भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए हर आवश्यक कदम उठा रही है। यह सुनिश्चित करने के लिए हाथ मिलाएं ताकि ये मूल्य हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बनें, क्योंकि हम विकसित भारत-सभी के लिए एक विकसित और समृद्ध भारत- के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में काम कर रहे हैं। शपथ समारोह में ऑनलाइन रूप से राममनोहर लोहिया अस्पताल के निदेशक और चिकित्सा अधीक्षक डॉ. अजय शुक्ला ने अस्पताल के चिकित्सकों और प्रशासनिक कर्मचारियों के साथ भाग लिया। राष्ट्र की समृद्धि के लिए अखंडता की संस्कृति विषय पर शपथ समारोह का उद्देश्य कर्मचारियों को पारदर्शिता, जवाबदेही और अखंडता की आवश्यकता के बारे में संवेदनशील बनाना है।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने अवैध भुगतान गेटवे के खिलाफ अलर्ट जारी किया

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्रालय के भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) ने अंतरराष्ट्रीय संगठित साइबर अपराधियों द्वारा म्यूल बैंक खातों का इस्तेमाल करके बनाए गए अवैध भुगतान गेटवे के खिलाफ़ एक नोटिस जारी किया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में एमएचए सभी कानून प्रवर्तन एजेंसियों (एलडब्ल्यूए) के सहयोग से साइबर सुरक्षित भारत बनाने के लिए सभी कदम उठा रहा है।

गुजरात पुलिस (एफआईआर 0113/2024) और आंध्र प्रदेश पुलिस (एफआईआर 310/2024) द्वारा हाल ही में किए गए राष्ट्रव्यापी छापों से पता चला है कि अंतरराष्ट्रीय अपराधियों ने म्यूल व किराए के खातों का इस्तेमाल करके अवैध डिजिटल भुगतान गेटवे बनाए हैं। मनी लॉन्ड्रिंग को एक सेवा के रूप में सुविधाजनक बनाने वाले इन अवैध बुनियादी ढांचों का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार के साइबर अपराधों की आय को लूटने के लिए किया जाता है।

एमएचए के अनुसार, ऑपरेशन के दौरान पहचाने गए कुछ भुगतान

गेटवे में पीसपे, आरटीएक्स पे, पोकोपे, आरपीपे आदि शामिल हैं। पता चला है कि ये गेटवे मनी लॉन्ड्रिंग को एक सेवा के रूप में उपलब्ध कराते हैं और विदेशी नागरिकों द्वारा संचालित होते हैं। आई4सी ने नागरिकों को सलाह दी है कि वे अपने बैंक खाते, कंपनी पंजीकरण प्रमाणपत्र, उद्यम आधार पंजीकरण प्रमाणपत्र किसी को न बेचें और किराए पर न दें। ऐसे बैंक खातों में जमा अवैध धनराशि के लिए गिरफ़्तारी सहित कानूनी परिणाम हो सकते हैं। बैंक उन बैंक खातों के दुरुपयोग की पहचान करने के लिए जांच कर सकते हैं जिनका उपयोग अवैध भुगतान गेटवे स्थापित करने के लिए किया जाता है। नागरिकों को किसी भी साइबर अपराध की तुरंत हेल्पलाइन नंबर 1930 या www.cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करनी चाहिए और सोशल मीडिया पर 'साइबरदोस्त' चैनल व अकाउंट को फ़ॉलो करना चाहिए।

प्रियंका गांधी वाड्रा के चुनाव अभियान पर भाजपा का तंज, बताया राजनीतिक पर्यटक

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रियंका गांधी वाड्रा ने सोमवार से वायनाड लोकसभा के उपचुनाव में प्रचार -प्रसार अभियान की शुरुआत कर दी। इस पर भारतीय

जनता पार्टी ने तंज कसते हुए प्रियंका गांधी को राजनीतिक पर्यटक बताया है। एक वीडियो जारी करते हुए भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता सीआर केसवन ने कहा कि वायनाड के मतदाताओं को राहुल गांधी के विश्वासघात का बहुत कड़वा अनुभव हुआ है। भाई की तरह प्रियंका गांधी वाड्रा भी पूरी तरह से अवसरवादी और अविश्वसनीय है। प्रियंका गांधी वाड्रा एक राजनीतिक पर्यटक हैं। केसवन ने कहा कि नेहरू-गांधी राजवंश अहंकार के साथ वायनाड को अपने सामंती राजनीतिक खेल के मैदान के रूप में उपयोग करने की कोशिश कर रहा है। इसे वायनाड के लोग बहुत अच्छी तरह से जान चुके हैं। राहुल गांधी ने वायनाड के मतदाताओं को दिखा दिया कि उन्हें इस स्थान से कोई लगाव नहीं है। वे लोगों को गुमराह करने की कोशिश कर रहे थे कि वायनाड के दो सांसद होंगे। लेकिन जब वे वायनाड के सांसद थे, तब उन्होंने वहां के लिए कुछ नहीं किया। जब वे सांसद थे, तब भी एक अनौपचारिक सांसद बनना भूल गए और उन्होंने वायनाड को छोड़ना सही समझा।

पंजाब में पराली जलाने की वजह से दिल्ली में बढ़ रहा प्रदूषण : मनोज तिवारी

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली में प्रदूषण के बढ़ते स्तर को लेकर भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने दिल्ली सरकार पर हमला बोला। उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि दिल्ली में बढ़ रहे प्रदूषण की एक वजह पंजाब भी है, जहां पराली जलाने के मामले लगातार बढ़े हैं।

भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कहा, दिल्ली के प्रदूषण में एक बहुत बड़ा कारण पंजाब की पराली है। आप देखेंगे तो पता चलेगा कि दो दिन पहले पंजाब में पराली जलाने की 108 घटनाएं दर्ज की गई हैं, जबकि उत्तर प्रदेश में 11 और हरियाणा में 16 मामले सामने आए हैं। उन्होंने पंजाब के मुख्यमंत्री पर सवाल उठाते हुए कहा, निश्चित रूप से भगवंत मान को हम लोगों से मिलना चाहिए था, लेकिन अब हम निराश होकर जा रहे हैं। आज उनसे मुलाकात नहीं होना बताता है कि वह दिल्ली की हालत को लेकर कितने गंभीर हैं। इससे पहले दिल्ली के भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने एक्स पर एक पोस्ट शेयर करते हुए आम आदमी पार्टी और उसके संयोजक अरविंद केजरीवाल पर सवाल उठाए थे। उन्होंने एक्स पर लिखा, दिल्ली की मूलभूत समस्याओं में वायु प्रदूषण का स्थान प्रमुख है, जिसका कारण पराली का जलना और उससे होने वाला धुआं ही है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि आम

आदमी पार्टी के नेतृत्व वाली भ्रष्टाचारी पंजाब सरकार पराली जलाने को रोकने में पूर्णतः विफल रही है। वायु प्रदूषण जैसी प्रमुख समस्या से दिल्ली को बचाने के प्रयास में आज दिल्ली स्थित कपूरथला हाउस में हमारे एक प्रतिनिधिमंडल ने पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान तक जनहित की मांग पहुंचाने का प्रयास किया। भाजपा का उद्देश्य केवल मुख्यमंत्री से मिलकर सामूहिक विमर्श कर स्थायी समाधान हेतु संवाद करना था, लेकिन आम आदमी पार्टी और केजरीवाल के चरित्र के अनुरूप ही पंजाब के मुख्यमंत्री ने भी अपनी विश्वासघाती कार्यशैली दिखाई और जनहित की अनदेखी कर प्रतिनिधिमंडल से मिलने तक का समय नहीं निकाला। हमेशा की तरह आज पुनः स्पष्ट हो गया है कि आप और केजरीवाल का चरित्र केवल धोखा, भ्रष्टाचार, घोटाला और स्वार्थ सिद्धि प्रधान ही है।

जेपीसी की बैठक में जोरदार हंगामा, विपक्षी दलों ने किया वॉकआउट

एजेंसी

नई दिल्ली। वक्फ (संशोधन) विधेयक - 2024 पर विचार- विमर्श करने के लिए बुलाई गई जेपीसी की बैठक में भी जबरदस्त हंगामा हुआ। विपक्षी दलों के सांसदों ने आरोप लगाया कि बैठक में फर्जी प्रजेंटेशन दिया जा रहा है और इसी पर चर्चा भी कराई जा रही है।सूत्रों के मुताबिक, दिल्ली वक्फ बोर्ड के प्रजेंटेशन के दौरान विपक्षी दलों ने उसकी वैधता पर ही सवाल उठाते हुए हंगामा शुरू कर दिया। विपक्षी सांसदों की तरफ से तर्क दिया गया कि दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी पहले ही जेपीसी अध्यक्ष जगदंबिका पाल को पत्र लिखकर यह अनुरोध कर चुकी हैं कि दिल्ली वक्फ बोर्ड की रिपोर्ट का संज्ञान नहीं लिया जाए। बताया जा रहा है कि दिल्ली वक्फ बोर्ड की रिपोर्ट में वक्फ संपत्तियों को लेकर कई तरह की गड़बड़ियों का जिक्र किया गया है। विपक्षी दलों के इन आरोपों पर सत्ता पक्ष और विपक्ष के सांसदों के बीच जोरदार बहस हुई। इसके बाद विपक्षी सांसदों ने बैठक से वॉकआउट कर दिया। हालांकि थोड़ी देर बाद विपक्षी सांसद फिर से बैठक में शामिल हो गए। आपको बता दें कि, जेपीसी ने वक्फ संशोधन कानून पर सुझाव देने के लिए सोमवार को दिल्ली वक्फ बोर्ड, हरियाणा वक्फ बोर्ड, पंजाब वक्फ बोर्ड, उत्तराखंड वक्फ बोर्ड, सुप्रीम कोर्ट एवं हाई कोर्ट के पूर्व न्यायाधीशों के समूह कॉल फॉर जस्टिस और वक्फ किराएदार कल्याण संघ को बुलाया है। अब जेपीसी की बैठक 29 अक्टूबर को भी होगी। केंद्रीय अल्पसंख्यक मंत्रालय के प्रतिनिधि मंगलवार को एक बार फिर से जेपीसी की बैठक में मंत्रालय की तरफ से अहम प्रजेंटेशन देंगे। आपको बता दें कि, जेपीसी की बैठक में सत्ता पक्ष और विपक्ष के सांसदों के बीच लगातार तीखी बहस हो रही है। विपक्षी सांसद जहां सत्ता पक्ष के सांसदों के रवैए पर सवाल उठा रहे हैं, तो वहीं दूसरी तरफ सत्ता पक्ष के सांसद विपक्षी सांसदों के रवैए पर सवाल खड़ा कर रहे हैं। इससे पहले , 22 अक्टूबर को हुई जेपीसी की बैठक के दौरान तृणमूल कांग्रेस के सांसद कल्याण बनर्जी ने बैठक में हंगामे के माहौल के बीच टेबल पर रखी कांच की पानी की बोतल को टेबल पर पटक कर फोड़ दिया था। इससे कल्याण बनर्जी को चोट भी लग गई।

जस्टिस चंद्रचूड़ : एक विरासत जिसे भुला देना ही बेहतर होगा

>> विचार

“ जस्टिस चंद्रचूड़ के कार्यकाल का सबसे दुखद व निराशाजनक पहलू संभवतः यह रहा कि इस दौरान हजारों सामाजिक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों, असहमति जताने वालों, शिक्षाविदों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को बिना मुकदमे के सालों से जेल में डाल दिया गया है। उमर खालिद की जमानत अर्जी पर सुनवाई लगातार टलती रही है। कई बार जजों ने इस मामले से बिना कोई कारण बताए खुद को अलग कर लिया है।

अभय शुक्ला

देश के वर्तमान मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ इन दिनों अकसर ऐसी बातें कर रहे हैं और चिंचित हैं कि अगले महीने जब वे अपने पद से रियाटर होंगे वे अपने पीछे क्या विरासत छोड़कर जाएंगे। और हो सकता है कि वे कोई विरासत जरूर छोड़कर जाएं। चंद्रचूड़ सीजेआ के पद पर उस समय आसीन हुए थे जब देश के हाल के इतिहास के शायद सबसे महत्वपूर्ण दौर में था। ऐसा दौर जिसमें हर लोकतांत्रिक और मानवतावादी सिद्धांत को एक अबाध चुनावी मशीन और मनमानी करने वाली सरकार द्वारा कुचला जा रहा था। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण दौर था क्योंकि उनके पहले इस पद पर रहे लोगों ने देश को न सिर्फ निराश किया था बल्कि रिटायरमेंट के बाद के लाभों के लिए अपमानजनक तौर-तरीका अपनाया था। हालांकि इससे पहले कभी भी देश ने मुख्य न्यायाधीश के पद और उसके उत्तराधिकारी से बहुत अधिक उम्मीदें नहीं रखीं थीं। लेकिन, तो चंद्रचूड़ की विरासत यही होगी कि उन्होंने भी देश को निराश ही किया। शेक्सपेयर ने कहा था, 'ईमानदारी सबसे बेहतक विरासत होती है', लेकिन दुखद पहलू हैं कि माननीय मुख्य न्यायाधीश ईमानदार नहीं रहे, न हमारे साथ और न ही अपने साथ। अदालत के बाहर सम्मेलनों में, भाषणों में, कार्यक्रमों में, दीक्षांत समारोहों और यहां तक कि कुछ फैसलों में की गई उनकी निजी टिप्पणियों में भी चंद्रचूड़ कुछ अहम बातें कहते रहे हैं। मसलन, इनमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धार्मिक बहुलवाद, संवैधानिक सुरक्षा उपायों, कार्यपालिका की जवाबदेही के लिए न्यायालय की जिम्मेदारियों पर जोर देना आदि शामिल है ।दिया है। लेकिन अपनी अदालत की चाहरदीवारी के अंदर वे अपने इस इन दृढ़ विश्वास और साहस से दूर रहे। कई बार लोगों को आश्चर्य भी होता रहा कि क्या उनके पास कोई दृढ़ विश्वास है भी या नहीं। अलेक्जेंडर पोप के शब्दों में: वह किसी को जख्मी करने को तो तैयार थे, लेकिन हमला करने से डरते थे। किसी न्यायाधीश की विरासत की यह बुनियाद तो नहीं हो सकती। आने वाले वक्तों में सुप्रीम कोर्ट के रिकॉर्ड अपनी कहानी खुद ही बयां करेंगे। जस्टिस चंद्रचूड़ के पास बहुत से ऐसे मौके थे जब वह चीजों को दुरुस्त कर सकते थे, या संस्थाओं की स्वायत्ता बहाल करने (चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति का मामला), बेलगाम राज्य सरकारों की मनमानी (यूपी, उत्तराखंड और हरियाणा जैसे राज्यों में बुलडोजर एक्श), नागरिकों की गैरकानूनी निगरानी (पेगासस मामला), राज्यों की दर्जा बहाली (जम्मू-कश्मीर), गैरकानून तरीके से गिराई गई वैध तरीके से चुनी गई सरकारों की बहाली (महाराष्ट्र), चुनावी प्रक्रिया में भरोसा और विश्वसनीयता स्थापित करना (ईवीएम, वीवीपैट के मुद्दे), चुनाव आयोग की उसके संदिग्ध कदमों और फैसलों पर गैर-जवाबदेही, डाले गए वोट और गिने गए वोटों में अंतर, आदर्श चुनाव संहिता के उल्लंघन पर पक्षपात आदि पर जस्टिस चंद्रचूड़ कुछ कर सकते थे। मगर यह हो न सका। जस्टिस चंद्रचूड़ के कार्यकाल का सबसे दुखद और निराशाजनक पहलू संभवतः यह रहा कि इस दौरान हजारों सामाजिक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों, असहमति जताने वालों, शिक्षाविदों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं को बिना मुकदमे के सालों से जेल में डाल दिया गया है। उमर खालिद की जमानत अर्जी पर सुनवाई लगातार टलती रही है। कई बार जजों ने इस मामले से बिना कोई कारण बताए खुद को अलग कर लिया है। भीमा-कोरेगांव मामले में जेल भेजे गए लोगों को किस्तों में जमानत दी जा रही है, मानो इंसाफ बांटी जाने वाली कोई शय हो। कुछ की तो जेल हिरासत में ही मौत हो गई। फादर स्टैन स्वी और प्रोफेसर जी एन साईबाबा की मिसालें हमारे सामने हैं। और, अयोध्या के राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद मामले पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को कौन इतिहासकार भूल सकता है जिसमें सबूतों के आधार पर नहीं, बल्कि सिर्फ बहुसंख्य समुदाय की आस्था के आधार पर फैसला सुना दिया गया। क्या इससे देश और न्यायपालिका का सिर शर्म से नहीं झुक जाना चाहिए? इस फैसले के बाद सामने आई वह तस्वीरें जिसमें हिंदू पक्ष के हक में फैसला सुनाने वाले जज एक फाइव स्टार होटल में वाइन के साथ डिनर कर जश्न मनाते हुए दिखे थे। यह भी देश के दुखद इतिहास में इसी दौर में दर्ज हुआ है। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ की ही नाक के नीचे ही केंद्र सरकार को कॉलेजियम को और भी कमजोर करने की छूट दी गई, जिसमें जजों की नियुक्ति में देरी, चयन और चुने गए या सिफारिश किए गए नामों पर रणनीतिक चुप्पी साध लेना आदि शामिल है। यही हश्र दर्जनों बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिकाओं (हैबियस कॉर्पस) का हुआ है जो अब अदालत की रजिस्ट्री में दफून हैं। सेबी (हिंडेनबर्ग) और पेगासस जांच कभी भी तार्किक निष्कर्ष तक नहीं पहुंची। एक जबरन वसूली रैकेट की तरह चलने वाले चुनावी बांड के फैसले के साथ खुले समस्याओं के एक पिटारे को फिर से जल्दबाजी में बंद कर दिया गया। लंबे-लंबे भाषण और चटकीले जुमलों के बावजूद किसी सरकारी अधिकारी को सही मायनों में किसी दोष के लिए सजा नहीं दी गई। यहां तक कि चंडीगढ़ के मेयर चुनाव में खुलेआम धांधली के सबूतों के बावजूद उसे कोई सजा माननीय चीफ जस्टिस ने नहीं सुनाई। न किसी एनकाउंटर स्पेशलिस्ट, न किसी बुलडोजर ब्यूरोक्रेट या किसी सरकारी एजेंसी को किसी गलती के लिए जिम्मेदार ठहराया ही नहीं गया। जबकि कई मामलों में दूसरी अदालतों ने इन्हें जवाबदेह माना था। यह सच है कि श्री चंद्रचूड़ खुद इन सभी खामियों और गलतियों के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार नहीं थे, क्योंकि कई फैसले और मामले दूसरी बेंचों ने तय किए थे। लेकिन मुख्य न्यायाधीश के नाते दोष तो उन्हें साझा करना ही होगा। आखिरकार, वह संस्था के प्रमुख, इसके मुख्य प्रशासक, सर्वोच्च न्यायालय के अध्यक्ष और सबसे महत्वपूर्ण, मास्टर ऑफ रोस्टर हैं। कहावत है कि अगर तारीफें आप हासिल करते हैं, तो फिर आलोचना भी आपको ही सहनी चाहिए। चीफ जस्टिस कुछ हाईकोर्ट्स में धीरे-धीरे बढ़ते राजनीतिकरण, जजों द्वारा खुलेआम धर्मों के प्रति निष्ठा व्यक्त करने, उनके फैसलों में धार्मिक पूर्वाग्रह, न्यायाधीशों के राजनीतिक दलों में शामिल होने और यहां तक कि सेवानिवृत्त होने के तुरंत बाद चुनाव में खड़े होने और सेवानिवृत्त न्यायाधीशों के धार्मिक सम्मेलनों में हिस्सा लेने को खामोशी से निहारते रहे। यह मुद्दा इन पूर्वाग्रहों की वैधता का नहीं बल्कि संवैधानिक मूल्यों की भावना का है, जिसे बनाए रखना न्यायपालिका की जिम्मेदारी है। जैसा कि जस्टिस चंद्रचूड़ खुद हमें अक्सर याद दिलाते रहे हैं कि, किसी कानून की भावना उसके शब्दों जितनी ही महत्वपूर्ण होती है। और इसलिए उनके लिए यह ज़रूरी था कि वे ज़ोर के साथ स्पष्ट रूप से बोलते, अपने साथी जजों को उनके रवैये पर टोकते और सुप्रीम कोर्ट द्वारा 1997 में जारी न्यायपालिका के न्यायिक जीवन के मूल्यों की याद दिलाते। भारत के मुख्य न्यायाधीश का दर्जा देश के नैतिक पायदान पर कहीं अधिक ऊंचा है- उनके हर शब्द का वजन और अर्थ होता है और देश के विमर्श को प्रभावित करता है। उन्हें तो उपदेश देने का शौक रहा है, ऐसे में उनका फर्ज था कि वे न्यायाधीशों के आचरण के लिए तय नैतिक सीमाओं को दोहराते। ऐसा न करके, वे अपने कार्यकाल के दौरान न्यायपालिका के पतन में स्वयं भागीदार बन गए हैं। वैसे उन्होंने कुछ ऐसे फैसले भी दिए हैं जिनकी तारीफ होनी चाहिए। मसलन, समलैंगिकता के अपराधीकरण को निरस्त करना या ट्रांसजैंडर के अधिकारों की बहाली आदि। लेकिन एक असली जज की असली परीक्षा तब होती है जब वह सरकार की मनमानी के खिलाफ खड़ा होता है, और इस मोर्चे पर उनके फैसले बहुत अधिक नहीं दिखते। काफी कोशिश करने पर भी ऐसे फैसले याद नहीं आते। बहुत से ऐसे मामलों पर काफी समय खर्च किया गया जिसमें अदालत का कुछ लेना-देना नहीं था, जैसेकि किसानों का आंदोलन या कोलकाता के आर जी कर मेडिकल कॉलेज का मामला। ये दोनों ऐसे मामले हैं जिनमें लगा कि अदालत सरकार की तरफ से खड़ी है। दोनों ही केसों में अदालत की छवि को धक्का पहुंचा है। किसानों ने अदालत का सुझाव मानने से इनकार कर दिया था और कोलकाता के डॉक्टरों ने भी काम पर लौटने का सुझाव नहीं माना। शायद किसी को मुख्य न्यायाधीश को लोक प्रशासन के उस पहले नियम की याद दिलानी चाहिए थी - कि अपने प्रभाव क्षेत्र से बाहर अपने कार्य क्षेत्र का विस्तार करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। और अब जब जस्टिस चंद्रचूड़ रिटायर होने वाले हैं, तो भी वे अपने खोखले प्रतीकात्मक उपदेश देने के शौक को जारी रखेंगे। अभी हाल ही में उन्होंने न्याय की देवी की नई प्रतिमा का उद्घाटन किया है, जिसमें देवी की आंखों पर अब कोई पट्टी नहीं है, यानी कानून अब अंधा नहीं है, और तलवार की जगह अब वह भारतीय संविधान की एक प्रति पकड़े हुए हैं। मुझे इस नाटकीयता से कोई दिक्कत नहीं है, क्योंकि मेरे लिए महात्मा गांधी के तीन बंदर आज भी हमारी न्याय प्रणाली की स्थिति को बेहतर तरीके से दर्शाते हैं-जोकि न देख सकता है, न सुन सकता है और न बोल सकता है। यह लेख किसी उल्लास में नहीं लिखा गया है, बल्कि एक अफसोस और निराशा के साथ लिखा गया है कि क्या कुछ हो सकता था। एक व्यक्ति था, एक न्यायाधीश था, जो विद्वान था, एक सभ्य इंसान था, एक दयालु व्यक्ति था, एक मर्मज्ञ कानूनी कौशल वाला था जो देश को उस दलदल से बाहर निकालने के लिए बहुत कुछ कर सकता था जिसमें उसे धकेला जा रहा है। त्रासदी यह नहीं है कि वह ऐसा करने में विफल रहा, बल्कि यह है कि उसने ऐसा नहीं करने का फैसला किया। काश, उस व्यक्ति ने मदर टेरेसा जैसी पुण्य सेवा के उन आदर्श शब्दों से सीखा होता, जिनकी विरासत पीढ़ियों तक जीवित रहेगी। मदर टेरेसा ने कहा था:

दुनिया आपकी मिसालों से बदलती है, न कि आपकी राय से।
अलविदा योर लॉर्डशिप
आपको शुभकामनाएं

संपादकीय

नये धोखाधड़ी के हथकंडे

इन दिनों जगह से जगह नये धोखाधड़ी का समाचार मिल रहा है। खुद को सीबीआई अधिकारी बताने वाले एक अंतर्राज्यीय गिरोह ने पद्मभूषण से सम्मानित और वर्धमान समूह के चेयरमैन एसपी ओसवाल से सात करोड़ रुपये की ठगी की थी। उन्हें दो दिनों तक डिजिटल भयचक्रमें रखा गया। उन्हें किसी को फोन करने या संदेश भेजने से रोका गया। इतना ही नहीं जालसाजों ने वीडियो कॉल के जरिये सुप्रीम कोर्ट की फर्जी सुनवाई आयोजित की। कल्पना कीजिए इतने प्रभावशाली व्यक्ति को जब साइबर अपराधियों ने असहाय बना दिया, तो आम आदमी की क्या गति होगी? निस्संदेह, इससे बचने के लिये लोगों को सतर्क रहने की जरूरत है। खासकर उन बुजुर्गों को जो ऑनलाइन व्यवहार के प्रति ज्यादा जागरूक नहीं हैं। हालांकि, साइबर अपराधी नित नये धोखाधड़ी के हथकंडे अपना रहे हैं,लेकिन फिर भी जागरूकता बेहद जरूरी है। साइबर सुरक्षा एजेंसियों को सतर्कता, सजगता व तत्परता से ऐसे अपराधियों पर शिकंजा कसना होगा। नागरिक अनजान लोगों के फोन कॉल, ई-मेल या संदेश के प्रति सचेत रहें। उन्हें धैर्य के साथ सोचना होगा कि जिस कथित काल्पनिक अपराध के लिये उन्हें डराया-धमकाया जा रहा है क्या उससे वास्तव में उनका कोई लेना -देना है? यूं तो भय-आशंका का काल्पनिक चित्रण करके साइबर अपराधी लोगों की सोचने-समझने की क्षमता पर प्रहार करते हैं। लेकिन ध्यान रहे कि कोई कोर्ट या सरकारी एजेंसी तत्काल ऑनलाइन कार्रवाई नहीं करती और न ही पैसे की मांग करती है। भारतीय साइबर सुरक्षा एजेंसियों की आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम को उन तथ्यों से आम लोगों को जागरूक करना चाहिए, जिनके जरिये लोगों के खाते खाली किये जा रहे हैं। लोगों को बताये जा रहे विभागों से सीधे संपर्क करके वस्तुस्थिति का संज्ञान लेना चाहिए। यदि अपराधी भयाक्रांत करते हैं तो घबराना नहीं चाहिए। किसी अपराधी को पैसे ट्रांसफर करने से पहले, इस बारे में परिवार के लोगों, मित्रों व पुलिस को सूचित करना चाहिए। लोगों को अपराधियों के संदेश का स्क्रीन शॉट लेना चाहिए, फोन कॉल रिकॉर्ड आदि सबूत सुरक्षित रखने चाहिए। साथ ही साइबर हेल्पलाइन 1930 पर डायल करें व स्थानीय पुलिस को सूचित करें।

समुद्र-मंथन से अवतरित लक्ष्मी के रूप में समाई प्रकृति

प्रमोद भार्गव

समुद्र-मंथन के दौरान जिस स्थल से कल्पवृक्ष और अप्सराएं मिलीं, उसी के निकट से महालक्ष्मी मिलीं। ये लक्ष्मी अनुपम सुंदरी थीं, इसलिए इन्हें भगवती लक्ष्मी कहा गया है। श्रीमद् भागवत में लिखा है कि 'अनिंद्य सुंदरी लक्ष्मी ने अपने सौंदर्य, औदार्य, यौवन, रंग, रूप और महिमा से सबका चित्त अपनी ओर खींच लिया।' देव-असुर सभी ने गुहार लगाई कि लक्ष्मी हमें मिलें। स्वयं इंद्र अपने हाथों पर उठाकर एक अद्भुत व अनूठा आसन लक्ष्मी को बैठने के लिए ले आए। उनकी कटि बहुत पतली थी। वक्षस्थल परस्पर सटे व उभरे हुए थे। उन पर चंदन और केसर का लेप लगा था। जब वे चलती थीं, तो उनकी पायजेब से मधुर ध्वनि प्रस्फुटित होती थी। ऐसे में ऐसा लगता था, मानो कोई सोने की लता इधर-उधर घूम रही है। इस लक्ष्मी को विष्णु ने अपने पास रख लिया। समुद्र-मंथन में लक्ष्मी मिलीं, इसे हम यूं भी ले सकते हैं कि लक्ष्मी के मायने धन-संपदा या सोने-चांदी की विपुलता से भी होता है। समुद्र-मंथन के क्रम में जब देव-दानव समुद्र पार कर गए तो सबसे पहले हिरण्यकशिपु दैत्य को सोने की खदान मिली थी। इसे हिरकेनिया स्वर्ण-खान आज भी कहा जाता है। इस खदान पर वर्चस्व के लिए भी देव और असुरों में विवाद व संग्राम छिड़ा था। अंततः हिरण्यकषिपु का इस पर अधिकार माना गया, क्योंकि इसे ही यह खान दिखाई दी थी। इसे यूं भी कह सकते हैं, कि इस सोने की खान को खोजने में हिरण्यकषिपु की ही प्रमुख भूमिका रही थी। दरअसल लक्ष्मी के विलक्षण रूप का वर्णन प्रकृति के रहस्यों से भी जुड़े हैं। वैसे तो देवी लक्ष्मी के अनेक रूप हैं, परंतु उनका सर्वाधिक प्रचलित रूप वह है, जिसमें देवी पूर्ण रूप से खिले हुए पद्म-प्रसून पर अविचल मुद्रा में बैठी हुई हैं। उनके दोनों हाथों में नालयुक्त कमल हैं। साथ ही उनके दोनों तरफ कमल-पुश्प पर ही दो हाथी अपनी ऊपर उठाई सूंडों में घड़े लिए हुए लक्ष्मी का जल से अभिशेक कर रहे हैं। लक्ष्मी के इस रूप और इससे भिन्न रूपों का कौतुक-वृत्तांत रामायण से लेकर अधिकांष पुराणों में अंकित है। इन लक्ष्मी का जलाभिषेक करते गजों से घनिष्ठ संबंध है। जब देवों ने असुरों के साथ मिलकर सागर-मंथन किया तो उसमें से चौदह प्रकार के रत्नों की प्राप्ती हुई। इन्हीं रत्नों में ऐरावत नाम का हाथी और लक्ष्मी भी थीं। समुद्र-मंथन से उत्पन्न होने के कारण लक्ष्मी और गज का जन्मजात संबंध स्वाभाविक है। लक्ष्मी को पृथ्वी के प्रतीक के रूप में भी माना गया है। इस नाते उन्हें भूदेवी भी कहा जाता है। वैसे भी विष्णु की दो पत्नियां थीं। एक लक्ष्मी और दूसरी पत्नी श्रीदेवी हैं। यजुर्देव में कहा भी गया है,

श्रीष्च ने लक्ष्मी श्रीश्च पतन्यो।

भूदेवी होने के कारण लक्ष्मी पृथ्वी की प्रतीक हैं। इस नाते गज जलद अर्थात मेघों के प्रतीक हैं। इसीलिए वर्षा पूर्व बादलों के गरजने की क्रिया को मेघ-गर्जना कहा जाता है। जब तक धरती पर बादल बरसते नहीं हैं, तब तक फसलों के रूप में अन्न-धान्य पैदा नहीं होते हैं। लक्ष्मी का जल से अभिषेक करते गजों का प्रतीक भी यही है कि गज बरसकर पृथ्वी को अभिसिंचित कर रहे हैं, जिससे पृथ्वी से सृजन संभव हो सके। इस कारण लक्ष्मी को सृजन की देवी भी कहा जाता है। सौभाग्य लक्ष्मी को उपनिषद में 'सकल भुवन माता' कहा गया है। सृजन अर्थात सृष्टि माता-पिता दोनों के संसर्ग से संभव है। अस्तु लक्ष्मी मातृशक्ति की और गज पितृषक्ति के प्रतीक हैं। गज को पुरुषार्थ का प्रतीक भी माना गया है। गोया, लक्ष्मी और गगन के समतुल्य गज संसार के माता-पिता माने जा सकते हैं। गज दिषाओं के प्रतीक भी हैं, इसलिए इन्हें दिग्गज भी कहा जाता है। इस कारण वे राज्य की चतुर्दिक सीमाओं के भी प्रतीक हैं। वैसे भी पुरातन काल में जो चतुरंगी सेनाएं हुआ करती थीं, उनमें गज-सेना भी होती थी, जो सीमांत प्रांतरों में चारों दिशाओं में तैनात रहती थी। कमल पर आरूढ़ लक्ष्मी से कमल का गहरा व आत्मीय रिष्ता है। सृश्टि के कर्ता ब्रह्मा स्वयं कमलभव हैं, जो भगवान विष्णु की नाभि से प्रस्फुटित कमल पर ही विराजमान हैं। इसी कारण विश्णु को 'पद्मनाभ' और 'पद्माक्षी' कहा गया है। कमल पर बैठी होने के कारण लक्ष्मी को 'कमला' भी कहा जाता है। कमल की यह विषेशता है कि वह कीचड़ में पैदा होने के पष्चात भी स्वच्छ है, स्वछंद है एवं निर्मल है। जल में जीवन-यापन करते हुए भी वह निर्लिप्त है। अनेक पांखुरियों से युक्त व खिला होते हुए भी वह एकात्मता का द्योतक है। कमल की जड़, नाल, पंखुड़ियां व बीज सब मानव उपयोगी हैं, इसलिए कमल को समश्टिगत गुणों वाले पुश्पों में सर्वश्रेश्ठ माना जाता है। व्यश्टि में समश्टि का समन्वयात्मक संदेष देता हुआ कमल लोकमंगल का आवाहन कराता है, इसलिए ऋशि-मुनियों ने कमल को सांस्कृतिक प्रधानता व सर्वोच्चता की पहचान से निरुपित किया है। लक्ष्मी का जल से अभिशेक करते हुए कलष, पूर्ण-कलष अर्थात लोक मंगलकारी कलषों के प्रतीक हैं। जल जीवन का आरंभिक उद्गम स्थल होने के साथ, जीवन का प्रमुख आधार भी है। जल से ही पद्म उत्पन्न हुआ है और पद्म से ब्रह्मा और ब्रह्मा से संपूर्ण सृश्टि। इसी कारण कलश को हिरण्यगर्भ की संज्ञा से विभूषित किया गया है। कलश के संदर्भ में सांस्कृतिक मान्यता है कि इसमें त्रिदेव अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और महेश का वास है। कलश के मुख पर ब्रह्मा, ग्रीवा में शिव और मूल में विष्णु तथा मध्य में मातृगणों का निवास होता है। अर्थात ये सभी देव-गण कलष में प्रतिष्ठित होकर किसी मांगलिक कार्य को सकारात्मक गति देने का काम करते हैं। इस कारण कलष भी लक्ष्मी के समान ही सृष्टि और महाशक्ति का प्रतीक माना गया है। मूर्ख और अशुभ का प्रतीक माने जाने के बावजूद उल्लू धन की देवी भगवती का वाहन है। हालांकि ऋग्वेद के श्री-सूक्त में वैभव की देवी लक्ष्मी की विस्तार से चर्चा है, लेकिन इस वृत्तांत में उल्लू को लक्ष्मी के वाहन के रूप में कहीं नहीं दर्शाया गया है। समुद्र-मंथन से लक्ष्मी तो प्रकट हुईं, लेकिन उल्लू के प्रकट होने का विवरण नहीं है। कहते हैं कि जब लक्ष्मी को धन की देवी के रूप में प्रतिष्ठा मिल गई, तो उनकी स्थान-स्थान पर पूजा होने लग गई। इस कारण उन्हें अलग वाहन की आवष्यकता अनुभव होने लगी। उन्हें भगवान विश्णु के व्यस्त रहने के कारण भी अपने उपासकों के पास जाने में विलंब होने लगा। ऐसे में लक्ष्मी के लिए ऐसे वाहन की खोज षुरू हुई, जो विश्णु के वाहन गरुड़ की तुलना में उड़ान भरने में दक्ष तो हो ही, रात में भी उड़ान भरने में समर्थ हो। क्योंकि लक्ष्मी के भक्त धन-वैभव की पूजा रात्रिकाल में ही दीपों की रोशनी में करते हैं। अब हम सब जानते ही हैं कि जीव-जगत के अधिकांश प्राणी रात में आहार-भक्षण के बाद निद्रा में लीन हो जाते हैं। केवल उल्लू ही रात में जागता है और आहार के लिए शिकार को भटकता है। गोया, निषाचर उल्लू रात में विचरण करने के कारण लक्ष्मी के वाहन के रूप में उपयुक्त ठहरा दिए गए और उल्लू लक्ष्मी के वाहन के रूप में उपयोग में आने लग गए। इन वृत्तांतों से भगवती लक्ष्मी के प्रकृति से जुड़े रूप का स्पश्ट आभास होता है।

गदर 2' फेम अनिल शर्मा की नई फिल्म 'वनवास' का टीजर रिलीज देख फैंस भावुक

संगीता तोमर

'गदर 2' फेम अनिल शर्मा की नई फिल्म 'वनवास' का टीजर रिलीज कर दिया गया, जिसे काफी पसंद किया जा रहा है। फिल्म में नाना पाटेकर और अनिल शर्मा के बेटे उत्कर्ष शर्मा हैं। यह 20 दिसंबर को रिलीज होगी। 'गदर 2' जैसी ब्लॉकबस्टर फिल्म के बाद अनिल शर्मा अब नई फिल्म 'वनवास' लेकर आए हैं, जिसका कुछ समय पहले ही ऐलान किया गया था। अब इस फिल्म का टीजर रिलीज कर दिया गया है। नाना पाटेकर स्टारर इस फिल्म में अनिल शर्मा के बेटे और एक्टर उत्कर्ष शर्मा भी हैं। उत्कर्ष 'गदर' और 'गदर 2' में तारा सिंह के बेटे जीते के रोल में थे। फिल्म की की रिलीज डेट भी सामने आई है। मेकर्स का कहना है कि कुछ कहानियां ऐसी होती हैं, जो हमें अपनों के करीब ले जाती हैं। 'वनवास' की कहानी ऐसी ही है। 'वनवास' के टीजर में नाना पाटेकर की एंट्री होती है। वह बर्फ से घिरे पहाड़ों के बीच चल रहे हैं। साथ में उनका वॉइसओवर है, जिसमें कह रहे हैं, 'पिता

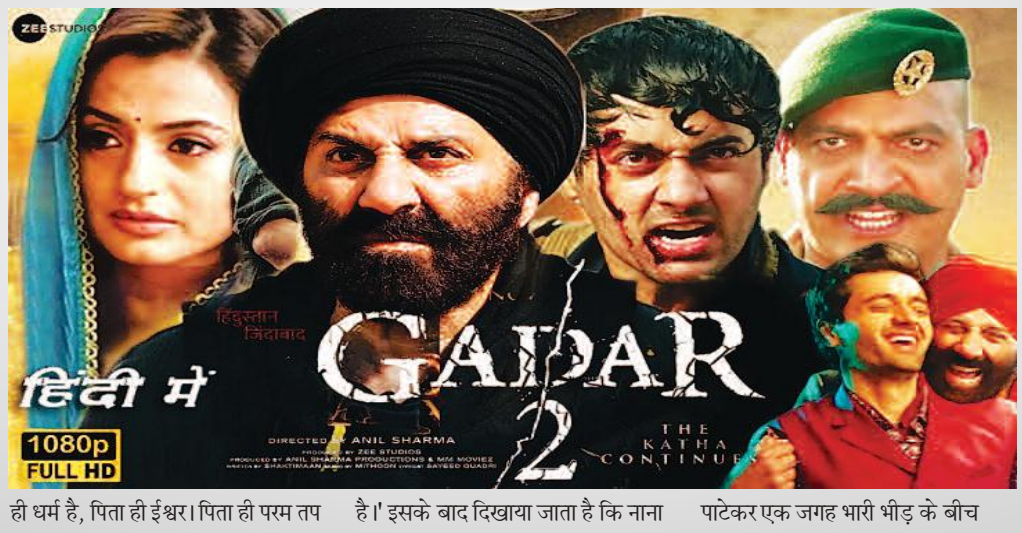

ही धर्म है, पिता ही ईश्वर। पिता ही परम तप है।' इसके बाद दिखाया जाता है कि नाना पाटेकर एक जगह भारी भीड़ के बीच फंस जाते हैं, और फिर आंखों में आंसू लिए एकटक उदासी से देखते रहते हैं। सीन कट होता है और फिर उत्कर्ष शर्मा नजर आते हैं, जो हाथ जोड़े खड़े हैं। अगले सीन में नाना पाटेकर हैं, जो बेटे को सुना रहे हैं, 'पूरी जिंदगी दी बाप ने। डेढ़ बित्ते के थे, जब पैदा हुए। उसी वक्त फेंक देता कूड़े के ढेर में तो? 'वनवास' का टीजर फैंस का दिल छू गया है और वो इसकी तारीफ कर रहे हैं। एक फैन ने लिखा है, 'अनिल साहब इस बार कुछ हटकर लेकर आ रहे हैं।' एक और फैन ने लिखा, 'एक बार फिर बॉक्स ऑफिस पर धमाका होगा।' एक और कमेंट है, 'यार इमोशनल कर दिया।' फिल्म की रिलीज डेट की बात करें, तो यह 20 दिसंबर को रिलीज होगी।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक और प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा विजय प्रेस, नया टोला पटना से मुद्रित तथा 302, मां तारा कंपलेक्स, नारायण मूर्ति पथ, नागेश्वर कॉलोनी, बोरिंग रोड पटना से प्रकाशित! संपादक सरोज चौधरी, R.N.I. No:- BIHHIN/ 2016/72168

समाधान शिविर में जिले से आई 27 शिकायतें, मौके पर 7 का किया समाधान

एजेंसी

हिसार। प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार नगर निगम से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए समाधान शिविर लगाकर समस्याएं सुनने का क्रम जारी है। निगम में जिलेभर से 27 शिकायतें आई, जिनमें से सात का समाधान हो पाया। नगर निगम के मुख्य सभागार में आयोजित समाधान शिविर के पांचवे दिन निगमायुक्त डॉ. वैशाली शर्मा सहित अन्य अधिकारीगण मौजूद रहे। समाधान शिविर सुबह 9 बजे शुरू हुआ जो कि 11 बजे तक चला। इसमें शहरवासियों ने प्रॉपर्टी टैक्स, सफाई, तहबाजारी, जन्म-मृत्यु व तकनीकी शाखा से संबंधित शिकायतें दी। निगमायुक्त डॉ. वैशाली शर्मा ने बताया कि प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार नगर निगम से संबंधित शिकायतों के समाधान के लिए समाधान शिविर एक माह तक प्रतिदिन लगाया जाएगा। निगमायुक्त डॉ. वैशाली शर्मा ने बताया कि समाधान शिविर के पांचवे दिन नगर निगम हिसार में 17 शिकायतें व पूरे जिले में 27 शिकायतें आई। इनमें से जिले से मिली 7 शिकायतों का समाधान मौके पर कर दिया गया। शेष शिकायतों के समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों व कर्मचारियों को समाधान करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने बताया कि अधिकतर शिकायतें प्रॉपर्टी टैक्स से संबंधित हैं। इसके अलावा जन्म-मृत्यु, तकनीकी, सफाई शाखाओं से संबंधित शिकायतें भी प्राप्त हुई हैं। नगर निगम हिसार में 17 शिकायतें आई जिनमें 3 का मौके पर निपटान किया गया।

गुरु दक्ष कुम्हार शिक्षण संस्थान में मंत्री रणवीर सिंह गंगवा किया स्वागत

हिसार। नजदीकी गांव आर्यनगर स्थित गुरु दक्ष आईटीआई में पहुंचने पर शिक्षण समिति व संस्थान के पदाधिकारियों ने लोक निर्माण विभाग भवन व सडक़ तथा जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणवीर सिंह गंगवा का स्वागत किया। पदाधिकारियों ने मंत्री को उनके आगामी कार्यकाल के लिए शुभकामनाएं दी। शिक्षण समिति के वर्तमान प्रधान कृष्ण कुमार वर्मा ने बताया कि शिक्षण समिति के पूर्ण कालिक व प्रथम प्रधान रहे मंत्री रणबीर गंगवा के कर कमलों से ही इस संस्थान की नींव रखी गई थी। उनके द्वारा लगाए गई इस शिक्षण संस्थान रूपी पौधे से आज हर समाज के छात्र-छात्राएं प्रशिक्षण प्राप्त कर कुशलतापूर्वक हर क्षेत्र में सफलता रूपी फल प्राप्त कर रहे हैं।

विधायक रणधीर पनिहार ने मंडी पहुंचकर लिया फसल खरीद का जायजा

हिसार। नलवा के विधायक रणधीर पनिहार ने अनाज मंडी में पहुंचकर फसल उठान का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने किसानों एवं आढ़तियों से मंडियों में पहुंच रही ग्वार, बाजरा, धान, मुंगफली एवं अन्य फसलों के बारे में बातचीत की। विधायक रणधीर पनिहार ने सोमवार को अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि अनाज मंडी में फसल लाने और बेचने तक के दौरान किसानों को किसी तरह की कोई समस्या नहीं आनी चाहिए। विधायक ने अनाज मंडी में फसल की आवक, उठान कार्य, सुविधाओं बारे चर्चा की तथा आढ़तियों, किसानों व मंडी में काम करने वाले मजदूरों से भी बातचीत की और उनकी समस्याएं सुनी। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का सही निर्वहन करें और खरीद प्रक्रिया की निगरानी लगातार करते रहें। रणधीर पनिहार ने मंडी में सफाई व्यवस्था व अन्य मूलभूत सुविधाएं भी उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। उन्होंने आढ़तियों से कहा कि वे खरीद प्रक्रिया में अपना पूरा सहयोग दें ताकि किसानों को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। रणधीर पनिहार ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सैनी के निर्देशानुसार हर अनाज मंडी में समय पर किसानों की फसल खरीद एवं उठाने की व्यवस्था की गई है और भाजपा नेता व कार्यकर्ता अनाज मंडियों का दौरा करके पता लगा रहे हैं कि किसानों को किसी भी प्रकार की समस्या का सामना न करना पड़े।

महिला आयोग की उपाध्यक्ष ने किया हॉस्टल का निरीक्षण

सोनीपत। हरियाणा राज्य महिला आयोग की वाईस चेयरपर्सन सोनिया अग्रवाल ने बीपीएस महिला मेडिकल कॉलेज, खानपुर का दौरा कर वहां पढ़ने वाली छात्राओं को मिलने वाली सभी सुविधाओं का निरीक्षण किया। उन्होंने छात्राओं के हॉस्टल का भी जायजा लिया और पाया कि कुछ कमरों में सुधार की जरूरत है। कॉलेज के निदेशक को निर्देश दिए कि छात्राओं के हॉस्टल में मौजूद खामियों को जल्द से जल्द ठीक किया जाए, ताकि उनकी पढ़ाई में कोई रुकावट न आए। सोनिया अग्रवाल ने बताया कि हाल ही में कॉलेज की कुछ छात्राओंने उनसे मिलकर समस्याओं की जानकारी दी थी, जिसके बाद उन्होंने कॉलेज का दौरा करने का निर्णय लिया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने हॉस्टल में मिलने वाले भोजन की भी जांच की और यह सुनिश्चित करने को कहा कि सभी छात्राओं को शुद्ध और पौष्टिक भोजन मिलना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि अगर इस दिशा में कोई लापरवाही बरती गई तो संबंधित अधिकारियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि कॉलेज और हॉस्टलों में पढ़ने वाली छात्राओं के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएं। दौरे के दौरान सोनिया अग्रवाल ने छात्राओं से भी बातचीत की और उन्हें अनुशासन के साथ पढ़ाई करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि महिला आयोग 24 घंटे महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए तत्पर है और यदि किसी छात्रा को किसी प्रकार की समस्या होती है।

पिहोवा से यमुनानगर तक बनेगी फोरलेन और कुरुक्षेत्र व लाडवा में बनेगा बाईपास : नायब सिंह सैनी

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रदेश में तेज गति के साथ कई हजार करोड़ रुपये की परियोजनाओं को अमलीजामा पहनाया जाएगा। सरकार पिहोवा, कुरुक्षेत्र, लाड़वा के साथ-साथ हरिद्वार जाने वाले लाखों लोगों की पुरानी मांग को पूरा करते हुए पिहोवा से यमुनानगर तक सड़क को फोरलेन बनाएगी। इसके साथ ही कुरुक्षेत्र और लाडवा में भी बाईपास बनाकर लोगों को ट्रैफिक जाम की समस्या से निजात दिलाई जाएगी।

मुख्यमंत्री सैनी जिला कुरुक्षेत्र में कार्यकर्ताओं की ओर से आयोजित स्वागत समारोह में बोल रहे थे। मुख्यमंत्री ने इस मौके पर कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों व क्षेत्र की जनता को हाथ जोड़कर शीश नवाकर कमल का फूल खिलाने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। दीपावली, भैया दूज, छठ पूजा व

विश्वकर्मा जयंती की सभी को बधाई देते हुए नायब सिंह सैनी ने कहा कि कार्यकर्ताओं की मेहनत का ही परिणाम है कि भाजपा की प्रदेश में तीसरी बार सरकार बनी है। उन्होंने कहा कि हमें मिलकर लाडवा को विकास की दृष्टि से बेहतर बनाना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में मेट्रो व लोकल ट्रेनों का विस्तार किया जाएगा ताकि लोगों को अपने आवागमन में आसानी हो। प्रदेश में जल्द ही ऐसे बहुत सी सड़क परियोजनाओं व अन्य परियोजनाओं को गति देने का काम किया जाएगा जिससे इंफ्रास्ट्रक्चर बेहतर हो और लोगों को इन सुविधाओं का लाभ मिले। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि नागरिकों की जो भी समस्याएं एवं कार्य हैं उन्हें प्राथमिकता के आधार पर करवाना सुनिश्चित किया जाए। नायब सिंह सैनी ने कहा कि अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि लाडवाविधानसभा क्षेत्र के तहत जहां पर भी सड़कों से संबंधित पैच वर्क या सड़कों को दुरुस्त किया जाना है, उस कार्य को जल्द से जल्द करवाना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि हर नागरिक की समस्या का समाधान करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है और जनता के लिए 24 घंटेहमारे दरवाजे खुले रहेंगे। उन्होंने कहा कि जैसे ही समय मिलेगा वह लाडवा के हर वार्ड, गांव, मोहल्ले में जाकर जनता का यहां से कमल का फूल खिलाने के लिए धन्यवाद भी करेंगे। उन्होंने सभी कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, मंडल प्रमुख को कहा कि भाजपा द्वारा ऑनलाइन भाजपा की प्राथमिक सदस्य बनाने की मुहिम चलाई गई है। हर बूथ पर समाज के हर वर्ग को ध्यान में रखते हुए कम से कम 300 लोगों को इस मुहिम से जोड़ना है। इस मौके पर पूर्व मंत्री सुभाष सुधा, उपायुक्त राजेश जोगपाल, पुलिस अधीक्षक वरूण सिंगला सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद थे।

जीटी रोड पर खुली पहली ट्रैफिक पुलिस चौकी

एजेंसी

सोनीपत। गन्नौर शहर में ट्रैफिक व्यवस्था को सुधारने के लिए गन्नौर जीटी रोड पर पहली ट्रैफिक चौकी शुरू हो गई है। पुलिस आयुक्त सतेंद्र कुमार गुप्ता के आदेश पर गन्नौर में बंद पड़ी जीटी रोड चौकी में ट्रैफिक पुलिस चौकी खोली गई है। ट्रैफिक चौकी खुलने से अब गलत लेन में घुसने, वाहनों की ओवर स्पीड और शहर में ट्रैफिक व्यवस्था को सुधारना की जिम्मदारी अब चौकी में तैनात प्रभारी व उनके स्टाफ की होगी। एसआई शमशेर सिंह को चौकी इंचार्ज की जिम्मदारी सौंपी गई है। उन्होंने कहा कि वह शहर में ट्रैफिक व्यवस्था को सुधारने का सार्थक प्रयास करेंगे। उन्होंने लोगों से अपील करी है कि वे यातायात के नियमों का पालन करें और ट्रैफिक व्यवस्था को बनाए रखने में पुलिस का सहयोग दें।

केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने भतीजे के निधन पर जताया शोक

एजेंसी

रोहतक। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल स्थानीय प्रीत विहार कॉलोनी में पहुंचे और अपने भतीजे वैभव खट्टर के निधन पर शोक प्रकट किया। करीब 30 वर्षीय वैभव खट्टर का गत 23 अक्टूबर को बीमारी के चलते अचानक निधन हो गया था। वे गुरुग्राम स्थित मेदांता अस्पताल में उपचाराधीन थे। वैभव के निधन पर दुख प्रकट करते हुए केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल ने कहा कि जिस भी इंसान ने इस धरती पर जन्म लिया है, उसका इस दुनिया से जाना निश्चित है लेकिन मौत के समय के बारे में किसी को कुछ पता नहीं होता, यह सब विधाता ही जानता है।

मौत को हमें स्वीकार करना पड़ता है। उन्होंने अपने भाई एवं वैभव के पिता चरणजीत खट्टर, माता पुष्पा खट्टर और बहन हिमांशी, जगदीश खट्टर, विजय खट्टर, केशव खट्टर, रमित खट्टर, अमित खट्टर, नीरज खट्टर, ईशान खट्टर सहित अन्य परिवार के लोगों का ढांढस बंधाया। इस दौरान करनाल से विधायक जगमोहन आनंद, पूर्व मंत्री

मनीष कुमार ग्रोवर, राजीव जैन, भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सतीश नांदल, कोषाध्यक्ष अजय बंसल, जिला अध्यक्ष रणबीर ढाका, जिला मीडिया प्रभारी तरूण सन्नी शर्मा, राजकुमार शर्मा, रेनू डाबला, प्रतिभा सुमन, विजय आर्य, सन्नी हंस, नरेंद्र खट्टर, कुलविंद्र सिंह सिक्का के अलावा जिला प्रशासन से उपायुक्त अजय कुमार, पुलिस अधीक्षक हिमांशु गर्ग, उपमंडलाधीश आशीष कुमार सहित अन्य गणमान्य नागरिक मौजूद रहे। वहीं केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल जवाहर नगर में पहुंचे और पार्टी के जिला कोषाध्यक्ष सतीश आहूजा के निधन पर शोक प्रकट किया। सतीश आहूजा का अचानक निधन हो गया, वे कुछ समय से बीमार थे।

हरियाणा और राजस्थान रोडवेज के बीच मामला खत्म हो गया है : अनिल विज

एजेंसी

अम्बाला। हरियाणा और राजस्थान रोडवेज के बीच चालान को लेकर हुए विवाद पर हरियाणा के परिवहन मंत्री अनिल विज ने कहा कि यह एक मसला बन गया था मगर, हरियाणा रोडवेज और राजस्थान रोडवेज के बीच वो सेटल कर लिया गया है। उन्होंने कहाकि अधिकारियों से बात करके वो मामला खत्म हो गया है। विज आज पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। आम आदमी पार्टी के आरोप कि अगर केजरीवाल को कुछ होता है तो उसका जिम्मेवार भाजपा होगी पर पलटवार करते हुए कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने कहा कि ये लोग घर बैठ के ऐसे ही गुब्बारे छोड़ते रहते है। कोई कारण तो बताओं उसके बाद जवाब देगे।वहीं, दिल्ली में वायु प्रदूषण को लेकर आम आदमी पार्टी द्वारा हरियाणा पर लगाए गए आरोपों पर कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने आम आदमी पार्टी को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि दूसरों पर दोषारोपण करने से

पहले अपनी असफलताओं को नहीं देखते यह आम आदमी पार्टी का चरित्र बन गया है। उन्होंने कहा आप की सरकार को दिल्ली में आए 10 साल हो गए क्यों यमुना साफ नहीं हुई, जो नाले यमुना में गिर रहे है।उन्होंने कहा जितनी यमुना दिल्ली में प्रवेश करने से पहले हरियाणा में बहती है उसका बीओडी चेक कर लो और दिल्ली में प्रवेश करने के बाद ओखला तक उसका पीओडी चेक कर लें पता चल जाएगा कि गंदगी कौन फला रहा है। उन्होंने कहा कि अब दिल्ली वालों की गंदगी हम थोड़ा साफ करेंगे। उधर, कैबिनेट मंत्री अनिल विज ने कहा कि अम्बाला छावनी बस स्टैंड पर रिपेयर के लिए लगभग 93 लाख रुपए की प्रशासनिक मंजूरी दिलवाई गई है।

हरियाणा में मेट्रो के विस्तार के लिए कराई जाएगी मैपिंग

एजेंसी

चंडीगढ़। केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में मेट्रो विस्तार को लेकर कवायद शुरू कर दी है। एनसीआर में हरियाणा के कई नगरों की दिल्ली की दूरी घटाने और आमजन के सफर को सुगम बनाने के लिए मेट्रो विस्तार की मैपिंग कराई जाएगी। खासकर गुरुग्राम, फरीदाबाद, रेवाड़ी और झज्जर में मेट्रो विस्तार की कार्य योजना तैयार होगी।

इसके साथ ही रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) का दिल्ली से पानीपत की बजाय करनाल तक विस्तार किया जाएगा, इसको लेकर भी केंद्र सरकार ने कदम बढ़ाया है। हरियाणा में मेट्रो लाइन के विस्तार और रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) कॉरिडोर को दिल्ली से पानीपत की बजाय करनाल तक विस्तार करने को लेकर मैपिंग होगी। केंद्रीय आवासन एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल तथा हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी के बीच हुई बैठक के बाद मनोहर लाल के ओएसडी मीडिया सुदेश कटारिया ने पूरी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मेट्रो रेल लाइन और आरआरटीएस की सुविधा बढ़ाने को लेकर अधिकारियों को कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए हैं। इनमें मेट्रो को गुरुग्राम के पालम विहार से एयरपोर्ट को जोड़ने का रोडमैप तैयार होगा, दो अलग-अलग लाइन बिछाने पर भी संभावनाओं को तलाशा जाएगा। मेट्रो कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के लिए गुरुग्राम के पालम विहार को एयरपोर्ट लाइन से दो रूट पर जोड़ने पर अध्ययन होगा। दिल्ली एयरपोर्ट से गुरुग्राम-फरीदाबाद-जेवर एयरपोर्ट को जोड़ने के लिए आरआरटीएस की संभावनाओं को तलाशा जाएगा और इसका अध्ययन किया जाएगा। कटारिया ने बताया कि गुरुग्राम के सेक्टर-56 से पंचगांव तक की प्रस्तावित मेट्रो लाईन को बिछाने का खर्च हरियाणा सरकार वहन करेगी और इसकी परियोजना की डीपीआर प्राप्त होने के बाद मंजूरी केंद्रीय मंत्रालय द्वारा 15 दिन के भीतर दे दी जाएगी।

धान व बाजरा की खरीद के लिए किसानों को अब तक 8931 करोड़ का भुगतान

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा में धान और बाजरा की फसलों की खरीद प्रक्रिया सुचारू रूप से जारी है। अब तक धान और बाजरा किसानों को 8931 करोड़ रुपये का भुगतान किया जा चुका है। जिसमें 8084 करोड़ रुपये धान किसानों को और 847 करोड़ रुपये बाजरा किसानों को भुगतान किया जा चुका है।

खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि खरीद सीजन के दौरान मंडियों में धान व बाजरे की खरीद हो रही है। अब तक विभिन्न मंडियों में 4550473 मीट्रिक टन धान की आवक हो चुकी है। कुल आवक में से 4302418 मीट्रिक टन धान की खरीद एजेंसियों ने एमएसपी पर की है। मंडियों से धान का निरंतर उठान भी सुनिश्चित किया जा रहा है। वहीं, अब तक विभिन्न मंडियों में 430193 मीट्रिक टन बाजरा की आवक हो चुकी है, जिसमें से 41,7771 मीट्रिक टन बाजरा को एमएसपी पर खरीदा भी जा चुका है।

प्रवक्ता ने बताया कि इस बार किसानों को फसल बेचने में कोई परेशानी न आए तथा उन्हें मंडियों में प्रवेश के लिए अनावश्यक इंतजार न

करना पड़े, इसके लिए विभाग ने ऑनलाइन गेट पास की सुविधा उपलब्ध करवाई है। सरकार सामान्य धान के लिए 2,300 रुपये प्रति क्विंटल तथा ग्रेड-ए धान के लिए 2,320 रुपये प्रति क्विंटल न्यूनतम समर्थन मूल्य दे रही है। वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पूरी खरीद प्रक्रिया पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है। उन्होंने बताया कि कुरुक्षेत्र जिले की मंडियों में 962575 मीट्रिक टन धान की आवक हुई है, जिसमें से 935432 मीट्रिक टन धान की खरीद हो चुकी है। इसी प्रकार करनाल जिले की मंडियों में 808728 मीट्रिक टन धान की आवक हुई है और 7,94,323 मीट्रिक टन की खरीद हुई है। कैथल जिले में 7,86,955 मीट्रिक टन धान मंडियों में आया है जिसमें से 772039 मीट्रिक टन खरीदा गया है। अंबाला जिले में 519087 मीट्रिक टन आवक में से 474075 मीट्रिक टन धान की खरीद हुई है। यमुनानगर जिले की मंडियों में 513520 मीट्रिक टन में से 480191 मीट्रिक टन और फतेहाबाद जिले में 459677 मीट्रिक टन में से 409851 मीट्रिक टन धान की खरीद की गई है। इसके अलावा, जींद जिले की मंडियों में 173479 मीट्रिक टन में से 158599 मीट्रिक टन, सिरसा जिले में 141838 मीट्रिक टन में से 115694 मीट्रिक टन तथा पंचकूला जिले में 82021 मीट्रिक टन में से 71091 मीट्रिक टन धान की खरीद की जा चुकी है।

महेंद्रगढ़ में बाजरे की सबसे ज्यादा आवक व खरीद

खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि महेंद्रगढ़ जिले की विभिन्न मंडियों में 106732 मीट्रिक टन बाजरा आ चुका है, जिसमें से 105841 मीट्रिक टन की खरीद हो चुकी है। इसी प्रकार, रेवाड़ी जिले की विभिन्न मंडियों में 95130 मीट्रिक टन बाजरा आ चुका है, जिसमें से 94,115 मीट्रिक टन की खरीद की जा चुकी है। भिवानी में 68545 मीट्रिक टन की आवक में से 65780 मीट्रिक टन की खरीद की जा चुकी है।

पर्यावरण प्रदूषण कम करने को सरकार गंभीरता से कर रही काम: राव नरबीर

एजेंसी

गुरुग्राम। हरियाणा के उद्योग, पर्यावरण, वन एवं वन्य जीव मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि बढ़ता हुआ पर्यावरण प्रदूषण हम सभी के लिए चिंता का विषय है और सभी को प्रदूषण नियंत्रण के लिए अपना सहयोग देना चाहिए। कैबिनेट मंत्री सिविल लाइंस क्षेत्र में नगर निगम गुरुग्राम द्वारा शुरू की गई 4 एंटी स्मॉग गन का शुभारंभ कर रहे थे।उन्होंने कहा कि वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग द्वारा दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (ग्रैप) का दूसरा चरण लागू कर दिया गया है तथा इसके तहत लगाए गए प्रतिबंधों की पालना सभी को करनी चाहिए, ताकि हमें स्वच्छ वातावरण मिल सके। उन्होंने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार गंभीरता से कार्य कर रही है। इसके तहत सडक़ों की सफाई मैकेनाइज्ड करवाई जा रही है। इसके अलावा, धूल को उडऩे से रोकने के लिए सडक़ों व पेड़ों पर पानी का छिडक़ाव लगातार जारी है। उन्होंने कहा कि ग्रैप नियमों की पालना सुनिश्चित करने के लिए टीमें अलग-अलग क्षेत्रों में निगरानी कर रही हैं। प्रतिबंधित गतिविधियां करने वालों पर कार्रवाई भी की जा

रही है। नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त डा. नरहरि सिंह बांगड़ ने कहा कि नगर निगम गुरुग्राम प्रदूषण को कम करने का भरसक प्रयास कर रहा है। इसी दिशा में निगम क्षेत्र में धूल को उडऩे से रोकने व प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए 4 एंटी स्मॉग गन मशीन ट्रायल आधार पर शुरू की गई हैं। ये मशीन 320 डिग्री तोप रोटेशन के साथ 20 मीटर तक पानी का छिडक़ाव कर सकती है। मशीन पर 1000 लीटर क्षमता का स्टेनलेस स्टील टैंक लगा हुआ है। इस मशीन की विशेषता यह है कि यह छोटी गलियों व बाजारों में भी जा सकती है। एक मशीन की कीमत लगभग 18 लाख रुपए है। इस प्रकार चारों मशीनों पर लगभग 72 लाख रुपए का खर्च आने का अनुमान है। निगम द्वारा पहले से ही ट्रैक्टर माउंटिड एंटी स्मॉग गन क्षेत्र में चलाई जा रही हैं।

खेलों की आउटपुट रिपोर्ट तैयार करेगा खेल विभाग

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के खेल राज्यमंत्री गौरव गौतम ने प्रदेश के सभी अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वह खेलों की आउटपुट रिपोर्ट तैयार करें। जिला खेल अधिकारी अपने-अपने क्षेत्र के स्टेडियम का दौरा करके खेल सुविधाओं को बढ़ाने के लिए मैपिंग कराने के निर्देश जारी किए हैं।

खेल राज्यमंत्री गौरव गौतम ने सोमवार को खेल विभाग की समीक्षा बैठक की। इस दौरान जिलेवार चल रही खेल नर्सरियों और खेल प्रोजेक्टों की प्रगति की जानकारी ली। राज्यमंत्री गौतम ने जिला खेल अधिकारियों को कड़ी हिदायत दी कि अपने जिले में सभी खेल स्टेडियम, नर्सरियों व अन्य खेलकूद गतिविधियों के आयोजन स्थलों का निरीक्षण करें। इन स्थानों पर जो खिलाड़ी कोचिंग ले रहे हैं, उनको मिलने वाली सुविधाओं का विशेष ध्यान रखें। खेल राज्यमंत्री ने निर्देश दिए हैं कि आउट पुट रिपोर्ट में खिलाड़ियों से लेकर खेल सुविधाओं से संबंधित सुझाव सम्मलित किए जाएंगे। रजिडेंशल अकादमी में खिलाड़ियों के रहने की सुविधा, साफ-सफाई की व्यवस्था और खाने की व्यवस्थाओं की जांच करें और इन अकादमियों का माहौल कैसा है और खिलाड़ियों को अभ्यास के दौरान कौन सी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, उनकी तमाम समस्याओं को रिपोर्ट में समाहित किया जाए। खेल राज्यमंत्री ने खेल नर्सरियों व स्टेडियमों में तैनात कोच के व्यवहार भी आपत्ति जताते हुए स्पष्ट हिदायत जारी की है कि कोचों का खिलाड़ियों और उनके परिजनों के साथ अच्छा व्यवहार होना चाहिए।

बाजारो में अतिक्रम के खिलाफ पुलिस ने चलाया अभियान, व्यापारियों ने किया रोड जाम

एजेंसी

रोहतक। त्यौहरी सीजन को लेकर शहर के बाजार पूरी तरह से गुजलार हो चुके है, वहीं पुलिस प्रशासन द्वारा बाजारो में अतिक्रम को लेकर विशेष अभियान चलाया गया। इस दौरान पुलिस की टीम ने रेलेव रोड स्थित बाजारों में सडक़ों पर व्यापारियों द्वारा लगाई फडियां हटाई तो व्यापारी विरोध में उतर आए और रोड़ जाम कर दिया। व्यापारियों का आरोप है कि पुलिस अक्सर त्यौहारी सीजन में उन्हें परेशान करने का काम करती है, जबकि वह प्रशासन का हर समय सहयोग करने पर तैयार रहते है, जबकि पुलिस अधिकारियों का कहना है कि नियमों के खिलाफ जाकर व्यापारी सडक़ पर फडी लगाते है, जिसके कारण बाजारों में जाम की स्थिति पैदा हो जाती है।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आमजन को परेशानी ना हो, इसी लिए बाजारो में अतिक्रमण अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही अलग अलग स्थानों पर वाहनों के लिए पार्किंग भी बनाई गई है। करीब आधा घंटे तक पुलिस व व्यापारियों के बीच तानातनी बनी रही। बाद में व्यापारियों ने उचित कारवाई का आश्वासन

मिलने पर जाम खोल दिया। साथ ही पुलिस द्वारा बाजारों में फडियां हटाने के विरोध में व्यापारियों का एक प्रतिनिधिमंडल पुलिस अधीक्षक से भी मिला और अपनी समस्याओं बारे अवगत कराया। पुलिस अधीक्षक ने कहा कि व्यापारियों को किसी प्रकार की परेशानी नही आने दी जाएगी, पुलिस प्रशासन पूरी तरह से उनके साथ है। जिले में कानून व्यवस्था बनाए रखना और आमजन को किसी प्रकार की परेशानी ना हो, इसके लिए पुलिस पूरी तरह से अलर्ट है।

व्यापारियों ने भी पुलिस अधीक्षक को आश्वासन दिलाया कि नियमों के तहत ही शहर के बाजारों में फडियां लगाई जाएगी और अगर कोई व्यापारी नियमों का उल्लघंन करेगा तो व्यापारी के खिलाफ जुर्माना भी लगाया जाएगा।

ईवीएम जैसी निर्जीव चीज का बहाना लेती है कांग्रेस: ओमप्रकाश धनखड़

एजेंसी

गुरुग्राम। भाजपा के राष्ट्रीय सचिव ओमप्रकाश धनखड़ अपनी हार पर कांग्रेस ईवीएम जैसी निर्जीव चीज का बहाना लेती है जो जवाब नहीं दे सकती। भाजपा मजबूती के साथ चुनाव लड़ती है और जीत दर्ज करती है। भविष्य में भी होने वाले निकाय चुनावों में भाजपा की जीत जय है। यह बात उन्होंने गुरुग्राम में भाजपा के सदस्यता अभियान को लेकर पार्टी कार्यालय में कार्यशाला के बाद पत्रकार वार्ता में कही। जिलाध्यक्ष कमल यादव की अध्यक्षता में हुई कार्यशाला में विधायक बिमला चौधरी, तेजपाल तंवर, मुकेश शर्मा व महिला मोर्चा की प्रदेशाध्यक्ष उषा प्रियदर्शी भी उपस्थित रहीं। कार्यशाला में ओमप्रकाश धनखड़ ने कहा कि गुरुग्राम जिला में 4 लाख 50 हजार नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा। सदस्यता अभियान को कैसे आगे बढ़ाया जाए, इसके बारे में राष्ट्रीय सचिव ओमप्रकाश धनखड़ ने कार्यकर्ताओं को विस्तार से जानकारी दी। संगठन मंत्री फणीन्द्रनाथ शर्मा ने बूथ और मंडल स्तर पर कार्यशाला करके नए सदस्य जोडऩे के बारे में बताया। ओम प्रकाश धनखड़ ने कहा कि हरियाणा में भाजपा ने 50 लाख नए सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा है। हरियाणा में 20 हजार 629 बूथ हैं और हर बूथ पर 250 सदस्य बनाए जाने हैं। उन्होंने कहा कि गुरुग्राम जिला में 4 लाख 50 हजार नए सदस्य बनाने का लक्ष्य कार्यकर्ताओं को दिया है। गुरुग्राम विधानसभा में 1 लाख 25 हजार, बादशाहपुर विधानसभा में भी 1 लाख 25 हजार व पटौदी तथा सोहना विधानसभा में 1-1 लाख नए सदस्य बनाए जाएंगे। कार्यकर्ताओं को उत्साहित करते हुए धनखड़ ने कहा कि यह सदस्यता अभियान नगर निगम चुनाव को भी सरल बना देगा और चुनाव में भाजपा का परचम लहराएगा। संगठन मंत्री फणीन्द्रनाथ शर्मा ने सभी कार्यकर्ताओं को भाजपा की जीत व तीसरी बार सरकार बनाने की बधाई दी। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं की मेहनत से ही स्पष्ट बहुमत की सरकार बनी है। भाजपा जिला अध्यक्ष कमल यादव ने कार्यशाला में गुरुग्राम जिला की चारों विधानसभाओं में जीत का श्रेय कार्यकर्ताओं को दिया। कमल यादव ने कहा कि जल्द ही नगर निगम चुनाव होने हैं, इसलिए कार्यकर्ता अधिक से अधिक मेहनत करें और नए लोगों को भाजपा के साथ जोड़ें। कार्यशाला में महेश चौहान, बोधराज सीकरी, समय सिंह भाटी, महेश यादव, हरविंद्र कोहली, जिला महामंत्री रामबीर भाटी, सर्वप्रिय त्यागी, जिला मीडिया प्रमुख पवन यादव, सह प्रमुख राकेश राणा, नीरज यादव, प्रदेश और जिले के पदाधिकारी, प्रकोष्ठ, विभाग और मंडलों के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

बेहतर सीट बंटवारा महायुति या एमवीए का? जानें किसका पलड़ा भारी

इस खेल से साफ़ पता चलता है कि शरद पवार ने चुनाव के बाद के लिए खुद को किंगमेकर बना लिया है। टूटने के बाद शरद पवार के पास केवल 12 विधायक बचे थे और उनकी हैसियत 60 सीट से ज़्यादा की नहीं थी तब भी वो 85 सीट लेने में कामयाब हो गये। इससे उनको दो फायदे होंगे। पहला तो ये कि वो ज़्यादा से ज़्यादा नये उम्मीदवार को टिकट दे पायेंगे। वो ऐसे लोगों को भी टिकट दे रहे हैं जो जीत सकते हैं लेकिन गठबंधन के कारण उनको टिकट नहीं मिल रही। पवार अपने पास से सीट देकर ऐसे लोगों को जिता सकते हैं। इनमें इंदापुर के हर्षवर्धन पाटिल, अकलूज के मोहिते पाटिल, राजेश टोपे, राजेंद्र शिंगणे, संदीप नाईक शामिल हैं। शरद पवार को उम्मीद है कि उनकी पार्टी कम से कम 45 सीट जीतेगी और चुनाव के बाद अजित पवार के विधायक भी उनके पास वापस आ सकते हैं।

संदीप सोनवलकर

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए महायुति और एमवीए दोनों पूरी तरह तैयार हैं। दोनों गठबंधनों का क़रीब-क़रीब सीट बँटवारा फाइनल हो चुका है। पढ़िए, सीट बँटवारे में किस गठबंधन में कौन सा दल फायदे में और कौन से गठबंधन का पलड़ा चुनाव में भारी हो सकता है।

महाविकास आघाड़ी : महाविकास आघाड़ी से सीट बँटवारे में सीनियर नेता शरद पवार का असर साफ़ दिखाई देता है। शरद पवार ने लोकसभा चुनाव के बाद भी 96, 96, 96 का फार्मूला रखा था लेकिन कांग्रेस को लोकसभा सीट पर बढ़त मिली थी इसलिए उसने इसे नहीं माना। खींचतान के बाद आखिरकार कांग्रेस प्रभारी रमेश चेन्नीथला और उद्धव ठाकरे के कहने पर शरद पवार ने सीधे राहुल गांधी से बात की और फिलहाल 85, 85, 85 का फार्मूला बन गया। इसके अलावा 18 सीट सहयोगियों को देने की बात कही गई और 15 सीटें बाद में बांटी जायेगी। कहा जा रहा है कि कांग्रेस और शिवसेना को 92-92 सीटें मिलेंगी।

शरद पवार का खेल : इस खेल से साफ़ पता चलता है कि शरद पवार ने चुनाव के बाद के लिए खुद को किंगमेकर बना लिया है। टूटने के बाद शरद पवार के पास केवल 12 विधायक बचे थे और उनकी हैसियत 60 सीट से ज़्यादा की नहीं थी तब भी वो 85 सीट लेने में कामयाब हो गये। इससे उनको दो फायदे होंगे। पहला तो ये कि वो ज़्यादा से ज़्यादा नये उम्मीदवार को टिकट दे पायेंगे। वो ऐसे लोगों को भी टिकट दे रहे हैं जो जीत सकते हैं लेकिन गठबंधन के कारण उनको टिकट नहीं मिल रही। पवार अपने पास से सीट देकर ऐसे लोगों को जिता सकते हैं। इनमें इंदापुर के हर्षवर्धन पाटिल, अकलूज के मोहिते पाटिल, राजेश टोपे, राजेंद्र शिंगणे, संदीप नाईक शामिल हैं। शरद पवार को उम्मीद है कि उनकी पार्टी कम से कम 45 सीट जीतेगी और चुनाव के बाद अजित पवार के विधायक भी उनके पास वापस आ सकते हैं जिससे उनकी संख्या 65 तक जा सकती है। चुनाव के बाद शरद पवार अपनी बेटी सुप्रिया सुले को सीएम के तौर पर सामने ला सकते हैं।

कांग्रेस को निराशा : कांग्रेस ने अब तक सीट सही बांटी है और उसके उम्मीदवार

जीत भी सकते हैं लेकिन बंटवारे में कांग्रेस पीछे रह गयी। अगर कांग्रेस को 110 या उससे ऊपर सीट मिलती तो वह कम से कम 75 सीट लेकर सबसे बड़ी पार्टी बनती लेकिन अब कांग्रेस को कम सीट मिलने के कारण उनका अनुमान 60 से 65 सीट तक ही रह गया है। लेकिन असल में ये 55 के आसपास रह सकता है। ऐसे में सबसे बड़े दल बनने का उसका सपना पूरा नहीं होगा। कांग्रेस को विदर्भ में सबसे ज्यादा सीट मिलनी थी लेकिन शरद पवार और शिवसेना दोनों ने ही वहां पर कई सीट पर खेल बिगाड़ दिया। इससे अब कांग्रेस को विदर्भ में अधिकतम 26 सीट ही मिलने का अनुमान है, जबकि ये पहले 39 तक जा रहा था। अभी के हिसाब से कांग्रेस को विदर्भ में 26, मराठवाड़ा में 9, पश्चिम महाराष्ट्र में 8, उत्तर महाराष्ट्र में 6, मुंबई में 5 और कोंकण में तीन सीट मिलने की संभावना है। शिवसेना यूबीटी की हालत पतली :शिवसेना उद्धव ठाकरे ने जिद करके 85 सीट ले ली है लेकिन उनके पास सही उम्मीदवार नहीं हैं इसलिए उनकी बहुत सी सीट गिरेंगी। शिवसेना के ज्यादातर जीतने वाले विधायक अभी एकनाथ शिंदे के साथ हैं और नये उम्मीदवार पर शिवसेना ठाकरे ने बहुत काम नहीं किया इसलिए उसके पास जीतने वाले उम्मीदवार कम ही दिख रहे हैं। शिवसेना को कुल मिलाकर 35 से 40 सीट मिलने का अनुमान है।

महायुति में भी झगड़ा : सीट बँटवारे को लेकर महायुति में भी हालत बहुत अच्छी नहीं है उसमें तीनों दलों को ही बेहतर चुनावी उम्मीदवार नहीं मिल रहे। असल में अभी तीनों दल मिलाकर 180 के ऊपर सिटिंग विधायक हैं जिनमें से किसी का टिकट काटना संभव नहीं दिख रहा। ऐसे में विधायक के खिलाफ नाराजगी और गद्दारी जैसे आरोप के चलते बड़ा नुकसान हो सकता है।

बीजेपी : महायुति में बीजेपी के पास 155 सीट आ रही है और वो सबसे बड़ा दल होने की उम्मीद कर रही है लेकिन इस बार उसके साथ शिवसेना ठाकरे नहीं है। ऐसे मे तीनों दलों के वोट आपस में कितने ट्रांसफर होते हैं, ये कहना कठिन है। बीजेपी ने 102 में से अपने 96 कैंडिडेट को रिपीट किया है और साथ ही कुछ बड़े नेताओं के बेटों को टिकट दिया है। बीजेपी के विधायकों को शिकायत है कि सरकार में उनका काम नहीं हुआ और उनके कार्यकर्ता चाहते हैं कि बीजेपी का सीएम बने, वो एकनाथ शिंदे के लिए काम नहीं करना चाहते। इस कारण से बीजेपी को अपने कार्यकर्ता में जोश भरना होगा। उनको उम्मीद है कि लाडकी बहना का फायदा मिलेगा लेकिन कितना मिलेगा, कहना मुश्किल है। बीजेपी के पास नये जिताउ उम्मीदवार नहीं आ रहे हैं। पिछली बार 102 में से 37 ऐसे लोग थे जो दूसरी पार्टी से आकर चुनाव जीते थे लेकिन इस बार ज्यादातर शरद पवार के पास जा रहे हैं। इसका संदेश ठीक नहीं है। बीजेपी के सर्वे के हिसाब से 58 से 67 सीट तक मिलने का अनुमान है। बीजेपी वोट बांटने की रणनीति पर काम कर रही है, लेकिन इस बार विदर्भ, मराठवाड़ा और आदिवासी इलाक़ों वाले उत्तर महाराष्ट्र में नुकसान हो सकता है।

शिंदे की शिवसेना : शिंदे की शिवसेना के हिस्से में 74 सीटें आईं हैं जिसमें से 52 सीट उसको उन लोगों को देनी पड़ रही है जो शिवसेना के विधायक रहे और निर्दलीय होकर भी सरकार के साथ आये। ऐसे लोगों के खिलाफ पचास खोके का आरोप लगता रहा है। विधायकों के खूब माल कमाने की चर्चा है, इसलिए वर्कर उसमें हिस्सा मांग रहा है। साथ ही मतदाता नाराज है कि पार्टी बदल ली, इसका नुकसान हो सकता है। हालांकि शिंदे अपने उम्मीदवारों को सबसे ज्यादा मदद दे रहे हैं लेकिन चुनावी मुद्दा उनके पास कुछ नहीं है सिवाय इसके कि सत्ता में आये तो काम करायेंगे। शिंदे सेना के खिलाफ ज्यादातर इलाकों में उद्धव ठाकरे के उम्मीदवार हैं। ऐसे में वोट बंटेगा तो परिणाम चौंकाने वाले आ सकते हैं। शिंदे सेना को 26 से 35 सीट मिलने का अनुमान है।

अजितपवारएनसीपी : महायुति में सबसे कमजोर अजित पवार की एनसीपी है। उनके अपने विधायक टूटकर चाचा शरद पवार के पास जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि चाचा जीता नहीं सकते तो हरा तो सकते ही हैं इसलिए कोई विधायक शरद पवार से दुश्मनी मोल नहीं लेना चाहता। सिटिंग विधायक के खिलाफ नाराजगी के अलावा सबसे बड़ा मुद्दा मुस्लिम वोटरों की नाराजगी है। एनसीपी को ये वोट मिलता रहा है लेकिन अजित पवार के बीजेपी में जाने के बाद उनके साथ मुस्लिम वोटर जाना नहीं चाहता। इसके अलावा मराठा वोटर भी नाराज है कि आरक्षण के सवाल पर अजित पवार ने कुछ नहीं किया। ऐसे में वो सबसे ज्यादा नुकसान में रह सकते हैं। अजित पवार गुट को 15 से 22 सीट मिल सकती है। कुल मिलाकर अभी राज्य में किसी की भी अपने दम पर सरकार बनते नहीं दिख रही है। चुनाव में कम से कम 15 निर्दलीय चुनकर आ सकते हैं। चुनाव में हर जगह पर बागी उम्मीदवार रहेंगे, इससे वोट बंटेंगे और जीत का अंतर बहुत कम होगा।

महा विकास अघाड़ी और महायुति में घमासान, बोरीवली कोलाबा, मुलुंड समेत मुंबई की इन सीटों पर बगावत के सुर

शशि मिश्रा

मुंबई : महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए मंगलवार को नामांकन पत्र भरने की आखिरी तारीख है, फिर भी महायुति और महाविकास आघाडी के प्रमुख घटक दलों के बीच कुछ सीटों पर बंटवारे को लेकर बात नहीं बन पाई। दोनों तरफ टकराव की स्थिति बनी हुई है। दूसरी ओर, बीजेपी में बगावत के सुर बुलंद हो रहे हैं। बोरीवली विधानसभा सीट से टिकट की आस लगाए बैठे पूर्व सांसद गोपाल शेट्टी ने ऐलान किया है कि वह मंगलवार को नामांकन भरेंगे। बीजेपी ने यहां से विधायक सुनील राणे का टिकट काटकर संजय उपाध्याय को दिया है। घाटकोपर-पूर्व से पराग शाह को फिर से उम्मीदवारी देने से पूर्व विधायक प्रकाश मेहता के सुर बदले हुए हैं। महायुति में अब तक धारावी और शिवाजी-मानखुर्द सीट से उम्मीदवारों के नाम की घोषणा नहीं हुई है, जबकि महाविकास आघाडी में कोलाबा, बोरीवली, मुलुंड सीट पर फैसला नहीं हो सका है। अब कांग्रेस आरोप लगा रही है कि उद्धव सेना ने अधिकांश सीटों पर कब्जा कर लिया

है। इस पर उद्धव सेना के नेता अनिल परब ने कहा कि उनकी पार्टी ने योग्यता और जीतने की क्षमता के आधार पर सीटें हासिल की हैं।

मुंबई की सीटों पर विवाद : वैसे, कांग्रेस ने मुंबई की 36 में से 18 सीटों पर दावा किया, लेकिन उसे अब तक 9 सीटें ही मिली हैं। सोमवार देर रात तक महाविकास आघाडी के बीच कोलाबा, मुलुंड और बोरीवली पर कोई निर्णय नहीं हुआ। सीट बंटवारे मामले पर मुंबई कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष भाई जगताप ने कहा कि उद्धव सेना का रुख गठबंधन की राजनीति के अनुरूप नहीं था। हमने बातचीत के लिए उद्धव गुट के नेताओं के साथ बैठक की। चर्चा के दौरान सर्वसम्मति से निर्णय लेने की बजाय उद्धव सेना ने एकतरफा उम्मीदवारों की घोषणा कर दी। कांग्रेस को हल्के में लिया गया। वहीं, कांग्रेस के मधु चव्हाण ने भायखला सीट से नामांकन पत्र दाखिल किया है। पुलिस अधिकारी प्रदीप शर्मा की पत्नी स्वीकृत शर्मा को मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने अपनी पार्टी में शामिल करने समय वादा किया था कि उन्हें विधानसभा की उम्मीदवारी देंगे। इसके बाद उन्होंने प्रचार प्रसार शुरू किया। अंतिम समय में उन्हें टिकट नहीं दिया, बल्कि उस क्षेत्र से बीजेपी नेता मुरजी पटेल को पार्टी में शामिल कर अंधेरी-पूर्व से उम्मीदवारी दे दी। इससे खफा होकर स्वीकृत निर्दलीय चुनाव मैदान में कूद पड़ी हैं।

वसीवा विधानसभा में घमासान : वसीवा विधानसभा सीट से बीजेपी ने भारती लवेकर और उद्धव सेना ने हारून खान को उम्मीदवार घोषित किया। दोनों ही दलों की ओर से दोनों उम्मीदवार का विरोध हो रहा है। दरअसल, इस सीट पर महाविकास आघाडी की ओर से कांग्रेस ने दावा किया था, लेकिन उद्धव सेना ने अचानक ही हारून को उम्मीदवार घोषित कर दिया। इसे लेकर कांग्रेस ने नाराजगी व्यक्त की। कांग्रेस के कुछ लोग बगावत करने के लिए तैयार हैं। बीजेपी की लवेकर का भी विरोध हो रहा है।

गया के बेलागंजऔर इमामगंज विधानसभा में होगी कांटे की टक्कर

इंज़माम वाहिदी

बिहार की चार विधानसभा सीटों पर 13 नवंबर को उपचुनाव होने वाला है। इसी क्रम में गया जिला के दो विधानसभा क्षेत्र इमामगंज और बेलागंज में प्रत्याशियों ने आवेदन किया, जिसमें कुछ के आवेदन रद्द किए गए हैं। गया जिला के बेलागंज विधानसभा क्षेत्र में प्रत्याशियों द्वारा किए गये नामांकन की संविक्षा तीन प्रत्याशियों के आवेदन रद्द किया गया है। कुल 17 प्रत्याशियों 173 प्रत्याशियों का आवेदन रद्द किया गया, जिनमें पीपुल्स पार्टी ऑफ इंडिया के जितेंद्र यादव और निर्दलीय उम्मीदवार सुरेंद्र यादव और शंभू कुमार का नामांकन रद्द हुआ है। गया के बेलागंज विधानसभा क्षेत्र से त्रिकोणिया मुकाबला होने की उम्मीद है। इसमें एनडीए की तरफ़ से जदयू की टिकट पर मनोरमा देवी चुनावी मैदान में हैं। ग़ौरतलब है कि मनोरमा देवी जदयू की पूर्व एमएलसी रह चुकी हैं। वहीं उनका मुकाबला बेलागंज से 6 बार विधायक रहे राजद सांसद सुरेंद्र यादव के पुत्र

विश्वनाथ कुमार सिंह से होगा। बेलागंज विधानसभा सीट से प्रशांत किशोर की पार्टी जनसुराज के बैनर पर मुस्लिम उम्मीदवार प्रोफेसर खिलाफत हुसैन चुनावी मैदान में हैं। इन 3 उम्मीदवारों की वजह से बेलागंज में त्रिकोणीय मुकाबला होने की उम्मीद है। इसी प्रकार इमामगंज विधानसभा क्षेत्र में कुल 10 प्रत्याशियों में से एक प्रत्याशी सीमा कुमारी, राष्ट्रीय जनतंत्र मोर्चा का आवेदन को रद्द किया गया है। इमामगंज विधानसभा क्षेत्र पर भी चुनावी मुकाबला काफी दिलचस्प होने वाला है। इस सीट से हिंदुस्तानी आवाम मोर्चा के संरक्षक और केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने अपनी बहू दीपा मांझी को एनडीए के बैनर तले हम से चुनावी मैदान में उतारा है। वहीं प्रशांत किशोर ने जनसुराज की तरफ़ से जितेन्द्र पासवान पर चुनावी दांव खेला है। इसके अलावा राजद की तरफ़ से रौशन कुमार चुनावी मैदान में हैं।

राजस्थान उपचुनाव में सरकारी कर्मचारी कर रहे थे खुलेआम राजनीति, अब इन पर गिरी गाज

सरकार सूत्रों के अनुसार, विधानसभा उपचुनाव में लागू आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन पर जिला निर्वाचन अधिकारी रामावतार मीणा ने एएनएमटीसी के वरिष्ठ सहायक रवि दीवान को निलंबित कर दिया है। सीएमएचओ की रिपोर्ट के आधार पर किए गए इस निलंबन में उनका मुख्यालय सीएमएचओ ऑफिस झुंझुनूं रहेगा। इसी प्रकार एक अन्य आदेश में सोमवार देर शाम को को चुनाव आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन करने पर न्याय अनुभाग के वरिष्ठ सहायक राकेश कुमार को निलंबित किया गया।

अमित भारद्वाज

राजस्थान में झुंझुनूं उपचुनाव के दौरान आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन के आरोप में दो सरकारी कर्मचारियों को निलंबित किया गया है। इनमें एएनएमटीसी के वरिष्ठ सहायक रवि दीवान और न्याय अनुभाग के वरिष्ठ सहायक राकेश कुमार शामिल हैं। स्थानीय ग्रामीणों ने निलंबन को रंजिश के तहत बताया है। जानते हैं क्या है पूरा मामला।

झुंझुनूं: राजस्थांन में उपचुनाव को लेकर आचार संहिता चल रही है। ऐसे में झुंझुनूं जिले में सरकारी कर्मचारी होने के बाद भी कुछ अधिकारी खुले आम राजनीति कर रहे थे। इस आरोप को लेकर शिकायतबाजी हुई। लिहाजा जिला स्तरीय इलेक्शन कमीशन ने अपने स्तर पर जांच करवाई। प्रारंभिक जांच के बाद झुंझुनूं विधानसभा उपचुनाव में जिला निर्वाचन अधिकारी रामवतार मीणा की ओर से अब तक दो सरकारी कर्मचारियों पर निलंबन की गाज गिर चुकी है। सरकार सूत्रों के अनुसार, विधानसभा उपचुनाव में लागू आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन पर जिला निर्वाचन अधिकारी रामावतार मीणा ने एएनएमटीसी के वरिष्ठ सहायक रवि दीवान को निलंबित कर दिया है। सीएमएचओ की रिपोर्ट के आधार पर किए गए इस निलंबन में उनका मुख्यालय सीएमएचओ ऑफिस झुंझुनूं रहेगा। इसी प्रकार एक अन्य आदेश में सोमवार देर शाम को को चुनाव आदर्श आचार संहिता का

उल्लंघन करने पर न्याय अनुभाग के वरिष्ठ सहायक राकेश कुमार को निलंबित किया गया। जिला निर्वाचन अधिकारी रामावतार मीणा ने वरिष्ठ सहायक राकेश कुमार को राजकीय कार्मिक का पदीय दायित्वों के वितरीत आचरण मानते हुए राजस्थान सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्राण व अपील) नियम 1958 के नियम के उप नियम (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करने हुए तुरन्त प्रभाव से निलम्बित किया गया। जिला कलेक्टर रामावतार मीणा ने बताया कि निलम्बन काल में राकेश का मुख्यालय झुंझुनूं जिले में तहसील कार्यालय बुहाना रहेगा। इधर, झुंझुनूं में चुनावी सभा में शामिल होने के आरोप में जिला निर्वाचन अधिकारी ने एएनएम ट्रेनिंग सेंटर के वरिष्ठ सहायक रवि दीवान मेघवाल को निलंबित मामले में आक्रोशित सारी गांव के लोग कलेक्ट्रेट पहुंचे। ग्रामीणों ने जिला निर्वाचन अधिकारी ज्ञापन देकर कर्मचारी को बहाल करने की मांग की है। ज्ञापन में बताया गया है कि कार्मिक रवि को रंजिश के तहत फंसाया गया है। उसका सभा से कोई लेना देना नहीं था। ग्रामीणों का कहना है कि रवि के खिलाफ जो शिकायत की गई है वह रंजिश एवं द्वेष के कारण की गई है। फोटो को एडिट एवं कांट छांट कर पेश की गई है। सरपंच उम्मेद सिंह के मुताबिक, रवि निदोष है। उसे झूठा फंसाया जा रहा है। ऐसे रवि को बहाल किया जाएं।

आशीष कचोलिया और कैप्री ग्लोबल होल्डिंग्स ने क्वाड्रेंट फ्यूचर टेक के प्री-आईपीओ में किया निवेश

एजेंसी

मुंबई/नई दिल्ली। ट्रेन नियंत्रण और सिग्नलिंग सिस्टम विकसित करने वाली अनुसंधान-उन्मुख नई पीढ़ी की कंपनी क्वाड्रेंट फ्यूचर टेक लिमिटेड ने आशीष कचोलिया, कैप्री ग्लोबल और अन्य प्रमुख व्यक्तिगत निवेशकों से 48 करोड़ रुपये जुटाए हैं। क्वाड्रेंट फ्यूचर टेक लिमिटेड ने बताया कि कंपनी ने अपने प्री-आईपीओ दौर में आशीष कचोलिया, कैप्री ग्लोबल होल्डिंग्स और अन्य उल्लेखनीय व्यक्तिगत निवेशकों से 48 करोड़ रुपये जुटाए हैं। कंपनी के मुताबिक ये लेन-देन कंपनी के प्रमोटरों द्वारा निवेशकों को इक्विटी शेयरों की बिक्री अर्थात द्वितीयक बिक्री है। यह कोई नया निर्गम या प्राथमिक बिक्री नहीं है। कंपनी ने बताया कि 275 करोड़ रुपये का मूल आईपीओ आकार अभी भी बरकरार है। कंपनी ने 26 अक्टूबर, 2024 को की गई एक सार्वजनिक घोषणा में कहा कि अपने प्रमुख बैंकरों के परामर्श से, उसने व्यक्तिगत और संस्थागत निवेशकों को 240 रुपये प्रति शेयर (230 रुपये के प्रीमियम सहित) के निर्गम मूल्य पर 2,000,000 इक्विटी शेयर जारी किए हैं, जिसका कुल योग 48 करोड़ रुपये होता है। इस इन्वेस्टमेंट राउंड में प्रमुख रूप से हिस्सा लेने वालों में सूर्यवंशी कमोट्रेड प्राइवेट लिमिटेड (आशीष कचोलिया) शामिल हैं, जिसने 765,000 इक्विटी शेयर हासिल किए हैं, जबकि प्लांटिफाई कैपिटल लिमिटेड ने 125,000 शेयर प्राप्त किए हैं।

8वें एफआईआई में भाग लेने रियाद जाएंगे केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल, लुलु हाइपरमार्केट में दिवाली उत्सव का करेंगे उद्घाटन

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल 29-30 अक्टूबर तक आर्थिक संबंधों को बढ़ाने और 8वें फ्यूचर इन्वेस्टमेंट इनिशिएटिव (एफआईआई) में भाग लेने के लिए सऊदी अरब के दौरे पर जाएंगे। मंत्री गोयल रियाद के लुलु हाइपरमार्केट में दिवाली उत्सव का उद्घाटन भी करेंगे। इसके साथ ही वे भारतीय दूतावास में एक जिला, एक उत्पाद (ओडीओपी) दीवार का अनावरण भी करेंगे। वाणिज?य एवं उद्योग मंत्रालय से जारी एक बयान में कहा गया है कि केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल 29-30 अक्टूबर तक सऊदी अरब की यात्रा पर रहेंगे। गोयल के इस यात्रा का उद्देश्य भारत-सऊदी अरब रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करना तथा व्यापार, निवेश और आर्थिक सहयोग के नए रास्ते तलाशना है, जो भारत की बढ़ती वैश्विक आर्थिक उपस्थिति को रेखांकित करता है। मंत्रालय के मुताबिक गोयल इस दौरान रियाद में फ्यूचर इन्वेस्टमेंट इनिशिएटिव (एफआईआई) के 8वें संस्करण में भाग लेंगे, जो एक महत्वपूर्ण मंच है और वैश्विक नेताओं, निवेशकों और नवोन्मेषकों को एक साथ लाता है। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल इस दौरान रियाद के लुलु हाइपरमार्केट में दिवाली उत्सव का उद्घाटन करेंगे। इसके अलावा केंद्रीय मंत्री भारतीय दूतावास में एक जिला, एक उत्पाद (ओडीओपी) दीवार का अनावरण करेंगे, जिससे वैश्विक स्तर पर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और स्थानीय शिल्प कौशल को बढ़ावा मिलेगा।

वारी एनर्जीज का शेयर करीब 70 फीसदी प्रीमियम के साथ सूचीबद्ध

मुंबई/नई दिल्ली। सोलर पीवी मॉड्यूल निर्माता वारी एनर्जीज लिमिटेड का शेयर अपने निर्गम मूल्य 1503 रुपये से करीब 70 फीसदी उछाल के साथ शेयर बाजार में सूचीबद्ध हुआ। कंपनी ने 4,321.44 करोड़ रुपये के आईपीओ के लिए मूल्य का दायरा (प्राइस बैंड) 1,427-1,503 रुपये प्रति शेयर तय किया था। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) पर कंपनी का शेयर 2,550 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ है, जो निर्गम मूल्य से 69.66 फीसदी की बढ़त को दर्शाता है। इसके बाद यह 72.98 फीसदी चढ़कर 2,600 रुपये पर पहुंच गया। वहीं, नेशनल स्टॉक एक्सचे (एनएसई) पर कंपनी का शेयर 66.33 फीसदी की बढ़त के साथ 2,500 रुपये पर सूचीबद्ध हुआ। कंपनी का बाजार मूल्यांकन (मार्केट कैप) 67,866.35 करोड़ रुपये रहा। वारी एनर्जीज लिमिटेड के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) को बोली के अंतिम दिन 76.34 गुना अभिदान मिला था। ये आईपीओ 21 से 23 अक्टूबर तक निवेश के लिए खुला हुआ था। कंपनी का आईपीओ तीन दिनों में कुल 79.44 गुना सब्सक्राइब हुआ। खुदरा कैटेगरी में ये इश्यू 11.27 गुना, क्वालीफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) में 215.03 गुना, जबकि नॉन-इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) कैटगरी में 65.25 गुना सब्सक्राइब हुआ था।

एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस का मुनाफा 12 प्रतिशत बढ़ा

मुंबई। आवास ऋण प्रदान करने वाली प्रमुख कंपनी एलआईसी हाउसिंग फाइनेंस ने चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में 1329 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ कमाया है जो पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही के 1188 करोड़ रुपये की तुलना में 12 प्रतिशत अधिक है। कंपनी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी त्रिभुवन अधिकारी ने निदेशक मंडल की बैठक के बाद संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी देते हुये कहा कि इस तिमाही में कंपनी का कुल राजस्व 6926 करोड़ रुपये रहा है जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के 6753 करोड़ रुपये की तुलना में करीब तीन प्रतिशत अधिक है।

सांची का नया उत्पाद नेचुरल नारियल पानी लॉन्च, मंत्री पटेल ने किया शुभारंभ

एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश के सहकारी दुग्ध संघ सांची ने नया उत्पाद पाश्चरीकृत नेचुरल नारियल पानी लॉन्च किया है। पशुपालन एवं डेयरी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) लखन पटेल ने भोपाल सहकारी दुग्ध संघ के मुख्य डेयरी प्लांट में इस नेचुरल नारियल पानी की बिक्री का शुभारंभ किया। इस अवसर पर वेटरनरी कौंसिल ऑफ़ इंडिया के अध्यक्ष डॉ उमेश शर्मा, संचालक पशुपालन एवं डेयरी डॉ. पीएस पटेल आदि उपस्थित थे। मंत्री पटेल ने स्वयं भी नारियल पानी पिया और उसकी सराहना की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी ने सांची नारियल पानी का सेवन किया और उसे गुणवत्ता एवं स्वाद युक्त बताया।

इस अवसर पर मंत्री पटेल ने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए दुग्ध उत्पादन से बड़ा कोई रास्ता नहीं है। मध्य प्रदेश सहकारी दुग्ध संघ अपने सांची ब्रांड के माध्यम से नए नए गुणवत्तापूर्ण उत्पाद बाजार में ला रहा है। आज सांची ने

नेचुरल नारियल पानी लॉन्च किया है, जो कि अत्यंत गुणवत्तापूर्ण और स्वास्थ्य वर्धक है। भविष्य में दुग्ध संघ की माइनर मिलेट्स कोदो-कुटकी के उत्पाद भी बाजार में लाने की योजना है। मंत्री पटेल ने कहा कि भोपाल दुग्ध संघ की आय निरंतर बढ़ रही है। इस वर्ष अभी तक लगभग 700 करोड़ का लाभ दुग्ध संघ को हुआ है। दुग्ध संघ निरंतर किसानों के लाभ के लिए कार्य तो कर ही रहा है, संघ के कर्मचारियों के कल्याण में भी पीछे नहीं है। अब किसानों के साथ ही कर्मचारियों का भी बीमा कराया जाएगा। मंत्री पटेल ने कहा कि सहकारिता का मूल सिद्धांत है पारदर्शिता और जुड़े हुए हर व्यक्ति तक लाभ पहुंचाना। हमारी सरकार इसी सिद्धांत पर कार्य कर रही है। हमारा उद्देश्य है दुग्ध उत्पादक किसानों को अधिक से अधिक आमदनी हो और हम इसके लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व इस वर्ष हमारी सरकार गौ-संरक्षण एवं गौ-संवर्धन वर्ष मना रही है। गायों की सुरक्षा और उनके समुचित पालन पोषण के प्रति जन-सामान्य में जागरूकता लाने के लिए इस वर्ष सरकार गोवर्धन पूजा पर 2 नवंबर को बड़ी गौ-शालाओं में गो संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित कार्यक्रम आयोजित करने जा रही है। इन कार्यक्रमों में अधिक से अधिक संख्या में भाग ले और इस पावन कार्य में अपना योगदान दें।

एयर इंडिया को विमान के अंदरूनी हिस्सों में बदलाव के लिए डीजीसीए की मंजूरी

एजेंसी

नई दिल्ली। टाटा की अगुवाई वाली एयर इंडिया को विमान के अंदरूनी हिस्सों में खुद सुधार या बदलाव करने के लिए नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) की मंजूरी मिल गई है। एयर इंडिया ने एक जारी एक बयान में कहा कि एयर इंडिया पहली भारतीय एयरलाइन कंपनी है, जिसे विमानन नियामक डीजीसीए का डिजाइन ऑर्गनाइजेशन अप्रूवल मिला है, जो हमें विमान के अंदरूनी हिस्सों को इन-हाउस संशोधित करने की अनुमति देता है। कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) एवं प्रबंध निदेशक एमडी कैम्पबेल विल्सन ने कहा टाटा टेक्नोलॉजीज के साथ साझेदारी में यह पहल एयर इंडिया के विश्व स्तरीय एयरलाइन बनने के अपने प्रयास में आत्मनिर्भर बनने की दिशा में एक और मील का पत्थर है। उल्लेखनीय है कि टाटा समूह के स्वामित्व वाली एयरलाइन कंपनी एयर इंडिया अपने बेड़े को नया रूप देने और परिचालन का विस्तार करने पर काम कर रही है। कंपनी ने अपने बेड़े में शामिल विमान के अंदरूनी हिस्सों को बेहतर बनाने के लिए टाटा टेक्नोलॉजीज के साथ सहयोग किया है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टैक्स प्रैक्टिशनर्स के लिए नया अवसर : नारायण जैन

एजेंसी

कोल्हापुर। ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ टैक्स प्रैक्टिशनर्स (एआईएफटीपी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट नारायण जैन ने कोल्हापुर में आयोजित राष्ट्रीय कर सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) भारत के टैक्स प्रैक्टिशनर्स, अधिवक्ताओं और चार्टर्ड अकाउंटेंट्स के लिए एक नया अवसर प्रस्तुत कर रहा है। उन्होंने बताया कि भारत पहले से ही सूचना प्रौद्योगिकी में अग्रणी है और अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से यह क्षेत्र कर प्रैक्टिस के क्षेत्र में नए दरवाजे खोल सकता है। एआईएफटीपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एडवोकेट जैन ने इस बात पर जोर दिया कि भारत के कानून मंत्री को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के सही उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए जल्द से जल्द कानूनी ढांचे को स्थापित करने पर ध्यान देना चाहिए, ताकि इसका दुरुपयोग न हो सके। उन्होंने एनवीआईडिया के संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी जेन्सेन हुआंग के बयान का भी उल्लेख किया, जिसमें एआई के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला गया था। जैन ने बताया कि यह सम्मेलन 26 और 27 अक्टूबर को कोल्हापुर में एआईएफटीपी द्वारा जीएसटीपीएएम, एमसीसीआईए और अन्य कई कर संघों के सहयोग से आयोजित किया गया। दो दिवसीय इस सम्मेलन को डिप्टी प्रेसिडेंट समीर जानी ने भी संबोधित किया और आयोजकों की विशेष सराहना की। सम्मेलन के आयोजन में विनायक पाटकर (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) और अरुण बाहेती की महत्वपूर्ण भूमिका की भी

तारीफ की गई। सम्मेलन में महाराष्ट्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, इंडस्ट्री एंड एग्रीकल्चर (एमसीसीआईए) के अध्यक्ष ललित गांधी ने कर पेशेवरों की भूमिका की प्रशंसा की और आयकर के साथ-साथ जीएसटी के अनुपालन के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कर सुधारों के लिए प्रतिनिधित्व करने और कर प्रणाली को सरल बनाने में अपने चैंबर और एआईएफटीपी की सक्रिय भागीदारी का सुझाव दिया।

केंद्र को एचएएल, एसपीएमसीआईएल और यूसीआईएल से मिला 1013 करोड़ रुपये का लाभांश

एजेंसी

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल), सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल) और यूरेनियम कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) ने केंद्र सरकार को लाभांश किश्तों के रूप में कुल 1,013 करोड़ रुपये का भुगतान किया है। वित?त मंत्रालय के तहत निवेश और सार्वजनिक परिसंपत्ति प्रबंधन विभाग (दीपम) के सचिव ने 'एक्स' पोस्ट पर जारी बयान में कहा कि केंद्र सरकार को लाभांश किश्तों के रूप में एचएएल, एसपीएमसीआईएल और यूसीआईएल से क्रमशः 623 करोड़ रुपये, 364 करोड़ रुपये और 26 करोड़ रुपये रुपये प्राप्त हुए हैं। दीपम सचिव ने कहा कि इन कंपनियों ने इस तरह सरकार को कुल 1,013 करोड़ रुपये का भुगतान किया है। उल्लेखनीय है कि हिंदुस्तान

एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) एक सार्वजनिक क्षेत्र की एयरोस्पेस रक्षा कंपनी है, जिसका मुख्यालय बेंगलुरु में है। सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल) वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग के सिक्का और मुद्रा प्रभाग के तहत एक संगठन है। यूरेनियम कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (यूसीआईएल) यूरेनियम खनन और प्रौद्योगिकी के लिए परमाणु ऊर्जा विभाग के तहत भारत सरकार का एक सार्वजनिक उपक्रम है।

लगातार 1 हफ्ते की गिरावट के बाद शेयर बाजार में लौटी तेजी, सेंसेक्स और निफ्टी उछले

नई दिल्ली। पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान लगातार कमजोरी का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार ने आज दिवाली वाले सप्ताह की जोरदार शुरुआत की। आज के कारोबार की शुरुआत भी बढ़त के साथ हुई थी। शुरुआती 1 घंटे के कारोबार में उतार-चढ़ाव भी होता हुआ नजर आया लेकिन इसके बाद खरीदारी के सपोर्ट से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने जोरदार तेजी दिखाई। सेंसेक्स जहां इंट्रा-डे में 1,137 अंक चढ़ गया, वहीं निफ्टी ने भी 311 अंक से अधिक की छलांग लगाई। हालांकि दिन के दूसरे सत्र में मुनाफा वसूली होने की वजह से ये दोनों सूचकांक ऊपरी स्तर से फिसल गए। पूरे दिन के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.76 प्रतिशत और निफ्टी 0.65 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए।आज दिन भर के कारोबार के दौरान मेटल, बैंकिंग, रियल्टी और फार्मास्यूटिकल सेक्टर के शेयरों में सबसे अधिक खरीदारी होती रही। इसके साथ ही आईटी, ऑटोमोबाइल, कंज्यूमर ड्यूरेबल, एफएमसीजी, ऑयल एंड गैस, टेक और पीएसई इंडेक्स भी मजबूती के साथ बंद हुए। कैपिटल गुड्स सेक्टर के शेयरों में बिकवाली का दबाव बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में भी आज लगातार खरीदारी होती रही, जिसके कारण बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.69 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इसी तरह स्मॉलकैप इंडेक्स ने 1.11 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया।

प्रह्लाद जोशी ने चावल मिलर्स की शिकायतों के समाधान के लिए मोबाइल ऐप किया लॉन्च

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय उपभोक्ता, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मामलों के मंत्री प्रह्लाद जोशी ने नई दिल्ली में चावल मिलर्स के लिए भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) के शिकायत निवारण प्रणाली (एफसीआई-जीआरएस) मोबाइल ऐप को लॉन्च किया। इस नए ऐप के माध्यम से चावल मिलर्स की चिंताओं को दूर करने में पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाना है।

चावल मिलर्स के लिए एफसीआई की शिकायत निवारण प्रणाली मोबाइल ऐप एफसीआई-जीआरएस ऐप की लॉन्चिंग के अवसर पर प्रहलाद जोशी ने कहा कि मुझे बहुत खुशी हो रही है। उन्होंने कहा कि हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता एक प्रभावी शिकायत निवारण तंत्र स्थापित करना है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के

डिजिटल इंडिया विजन के अनुरूप इस उल्लेखनीय कदम का उद्देश्य एफसीआई के साथ सीधे संपर्क स्थापित करके देशभर में हमारे मेहनती चावल मिलर्स को सशक्त बनाना है, जिससे शिकायत निवारण प्रणाली को सुव्यवस्थित और पारदर्शी बनाया जा सके। जोशी ने प्रेस को संबोधित करते हुए कहा कि यह एक ऐसी शासन प्रणाली बनाने की हमारी प्रतिबद्धता को भी रेखांकित करता है, जो वास्तव में समावेशी, जवाबदेह और नागरिकों की जरूरतों में निहित हो। उपभोक्ता, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मामलों के मंत्री ने कहा कि यह ऐप चावल मिलर्स को सीधे अपनी शिकायतें दर्ज करने की अनुमति देता है। एक बार शिकायत दर्ज होने के बाद तीन दिनों के भीतर जांच करने के लिए तीन सदस्यीय टीम भेजी जाएगी, जो मिलर्स से बातचीत करेगी और उसी अवधि के भीतर समाधान की सिफारिश करेगी। भारतीय खाद्य निगम मुख्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में अधिकारियों ने ईमानदारी, पारदर्शिता और जवाबदेही के उच्चतम मानकों को बनाए रखने की शपथ भी ली। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री के 'डिजिटल इंडिया' विजन के अनुरूप ये ऐप चावल मिलर्स को शिकायत दर्ज करने, स्थिति को ट्रैक करने और एफसीआई से प्रतिक्रिया और टिप्पणियां प्राप्त करने के लिए एक सहज मंच प्रदान करता है। इस प्रकार एंड-टू-एंड डिजिटल तरीके से जवाबदेही और पारदर्शिता को बढ़ाया जा रहा है।

अंबुजा सीमेंट का मुनाफा 52 प्रतिशत लुढ़का

मुंबई। विभिन्न क्षेत्रों में कारोबार करने वाले दिग्गज अडानी समूह की सीमेंट निर्माता कंपनी अंबुजा सीमेंट का चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में सकल शुद्ध मुनाफा इसके पिछले वित्त वर्ष के 987.24 करोड़ रुपये के मुकाबले 52 प्रतिशत लुढ़ककर 472.89 करोड़ रुपये रह गया। कंपनी ने निदेशक मंडल की बैठक के बाद शेयर बाजार को बताया कि वित्त वर्ष 2024-25 की जुलाई-सितंबर तिमाही में उसे 472.89 करोड़ रुपये का सकल शुद्ध मुनाफा हुआ, जो, वित्त वर्ष 2023-24 की समान तिमाही के 987.24 करोड़ रुपये के मुकाबले 52 प्रतिशत कम है। आलोच्य अवधि में कंपनी की कुल आय में 0.12 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई और यह 7899.99 करोड़ रुपये से घटकर 7890.14 करोड़ रुपये रह गया। हालांकि इस अवधि में उसका कुल व्यय 6564.28 करोड़ रुपये के मुकाबले करीब सात प्रतिशत बढ़कर 7023.49 करोड़ रुपये पर पहुंच गया।

लिस्टिंग के जरिये 2 कंपनियों की स्टॉक मार्केट में एंट्री, मजबूत शुरुआत के बाद लिस्टिंग लेवल से नीचे लुढ़के

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में आज दो कंपनियों ने लिस्टिंग के जरिए दस्तक दी। इन दोनों कंपनियों के शेयर आज प्रीमियम के साथ लिस्ट हुए, लेकिन दिन के कारोबार में बिकवाली के दबाव की वजह से दोनों कंपनियों के शेयर लिस्टिंग प्राइस से नीचे गिर कर बंद हुए। लिस्टिंग लेवल से गिर कर बंद होने के बावजूद इन दोनों में से एक कंपनी वारी एनर्जीज के आईपीओ निवेशक 55.62 प्रतिशत के फायदे में रहे, वहीं दूसरी कंपनी प्रीमियम प्लास्ट के निवेशकों को 0.20 प्रतिशत के नुकसान का सामना करना पड़ा।सोलर पैनल बनाने वाली कंपनी वारी एनर्जीज के शेयरों की आज में घरेलू शेयर बाजार में शानदार एंट्री हुई। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज पर कंपनी के शेयर 69.66 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 2,550 रुपये के स्तर पर लिस्ट हुए। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर कंपनी के शेयर 66.33 प्रतिशत

प्रीमियम के साथ 2,500 रुपये के स्तर पर लिस्ट हुए। लिस्टिंग के थोड़ी देर बाद ही खरीदारी के सपोर्ट से कंपनी के शेयर उछल कर 2,624.40 रुपये के स्तर तक पहुंच गए। इस तेजी के बाद मुनाफा वसूली शुरू हो गई, जिसकी वजह से इस शेयर की चाल में भी गिरावट आ गई। बिकवाली के दबाव में ये शेयर 2,300 रुपये के स्तर तक लुढ़क गया। हालांकि इसके बाद हुई खरीदारी के सपोर्ट से ये शेयर 2,338.90 रुपये के स्तर पर बंद होने में सफल रहा। लिस्टिंग लेवल से करीब 160 रुपये गिर कर बंद होने के बावजूद कंपनी के आईपीओ निवेशक आज ओवरऑल 55.62 प्रतिशत का मुनाफा कमाने में सफल रहे।आज ही कमर्शियल गाड़ियां बनाने वाली कंपनियों को प्लास्टिक पार्ट्स की सप्लाई करने वाली कंपनी प्रीमियम प्लास्ट के शेयर ने भी लिस्टिंग के जरिए घरेलू शेयर बाजार में एंट्री की। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 49 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग 5 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 51.45 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के तुरंत बाद खरीदारी के सपोर्ट से इस शेयर की कीमत 51.75 रुपये तक पहुंची, लेकिन इसके बाद बिकवाली के दबाव में थोड़ी देर में ही ये शेयर 48.90 रुपये के लोअर सर्किट लेवल पर पहुंच गया। इस तरह कंपनी के आईपीओ निवेशकों को पहले दिन ही 0.20 प्रतिशत के नुकसान का सामना करना पड़ा।

एनटीपीसी ग्रीन और अवांसे फाइनेंशियल को आईपीओ लाने की मंजूरी, सेबी ने जारी किया ऑब्जर्वेशन लेटर

एजेंसी

नई दिल्ली। मार्केट रेगुलेटर सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) ने एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी और अवांसे फाइनेंशियल सर्विसेज को आईपीओ लाने के लिए हरी झंडी दे दी है। सेबी ने इन दोनों कंपनियों के नाम से ऑब्जर्वेशन लेटर भी जारी कर दिया है। इन कंपनियों को अब ऑब्जर्वेशन लेटर जारी होने के बाद 1 साल की अवधि में अपना आईपीओ लॉन्च करना होगा। देश की सबसे बड़ी बिजली उत्पादक कंपनी एनटीपीसी की सब्सिडियरी कंपनी एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी ने 18 सितंबर को मार्केट रेगुलेटर सेबी के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रोस्पेक्टस (डीआरएचपी) जमा कराया था। कंपनी अपने पब्लिक इश्यू के माध्यम से 10,000 करोड़ रुपये जुटाना चाहती है। कंपनी की ओर से उपलब्ध कराई गई जानकारी में बताया गया है कि पब्लिक इश्यू के जरिए सिर्फ फ्रेश इक्विटी शेयर जारी किए जाएंगे। इसमें ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) के जरिए कोई बिक्री नहीं होगी। आईपीओ द्वारा जुटाए जाने वाले

पैसे के 75 प्रतिशत हिस्से का इस्तेमाल कंपनी के पुराने कर्ज को चुकाने में किया जाएगा जबकि शेष राशि का इस्तेमाल सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों में किया जाएगा। इसी तरह नॉन बैंकिंग फाइनेंस कंपनी अवांसे फाइनेंशियल सर्विसेज ने 31 जुलाई को सेबी के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रोस्पेक्टस (डीआरएचपी) जमा कराया था। कंपनी ने अपने आईपीओ में नए इश्यू के जरिए 1,000 करोड़ रुपये और ऑफर फॉर सेल के जरिए 2,500 करोड़ रुपये जुटाने का लक्ष्य तय किया है। मुंबई की ये कंपनी एसेट अंडर मैनेजमेंट के मामले में देश की दूसरी सबसे बड़ी एजुकेशनल फोकस्ड एनबीएफसी है।

देश का आर्थिक प्रदर्शन संतोषजनक, मांग पर नजर रखने की जरूरत: वित्त मंत्रालय रिपोर्ट

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन चालू वित्त वर्ष 2024-25 की पहली छमाही के दौरान संतोषजनक रहा है लेकिन आगे मांग की स्थिति को लेकर चिंता बनी हुई हैं। अर्थव्यवस्था में मांग की स्थिति पर नजर रखने की जरूरत है। वित्त मंत्रालय की ओर से सितंबर महीने की जारी एक समीक्षा रिपोर्ट में यह बात कही गई है। वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग ने जारी मासिक आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट के सितंबर संस्करण में कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था का परिदृश्य अच्छा है। इसका कारण रुपये समेत बाह्य मोर्चे पर स्थिरता, सकारात्मक कृषि परिदृश्य, त्योहारों की मांग में सुधार और सरकारी खर्च में वृद्धि की संभावना है। रिपोर्ट के मुताबिक कुल मिलाकर उम्मीद है कि इससे निवेश गतिविधियों में तेजी आएगी। हालांकि, रिपोर्ट में कहा गया है कि अर्थव्यवस्था में मांग की स्थिति पर नजर रखने की जरूरत है। मंत्रालय के इस आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट के मुताबिक उपभोक्ता धारणा में नरमी, सामान्य से अधिक बारिश के कारण सीमित ग्राहक संख्या और विभिन्न मौसमी अवधियों में लोगों के नई खरीदारी से बचने को देखते हुए ऐसा जान पड़ता है कि शहरी मांग में नरमी है।सितंबर की मासिक आर्थिक समीक्षा रिपोर्ट के मुताबिक महंगाई दर दो महीने की नरमी के बाद सितंबर महीने में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित खुदरा मुद्रास्फीति दर बढ़ी है। इसकी वजह अनियमित मानसून के चलते मुख्य

रूप से कुछ सब्जियों की आपूर्ति पर असर पड़ना था। रिपोर्ट के अनुसार कुछ सब्जियों की कीमतों में तेज वृद्धि को छोड़ दिया जाए तो महंगाई काफी हद तक काबू में नजर आ रही है। रिपोर्ट के अनुसार देश में प्रत्यक्ष रूप से और पोर्टफोलियो निवेशकों के बीच भारत के प्रति धारणा सकारात्मक है। इन भावनाओं को वास्तविक प्रत्यक्ष और पोर्टफोलियो निवेश में बदलने के लिए आर्थिक वृद्धि की गति को बनाए रखना जरूरी है। हालांकि, विदेशी निवेशक सितंबर माह में शेयरों से 85,790 करोड़ रुपये (करीब 10.2 अरब डॉलर) की भारी निकासी की है। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने अक्टूबर में सर्वाधिक निकासी की गई। इससे पहले मार्च, 2020 में एफपीआई ने 61,973 करोड़ रुपये शेयर बाजार से निकाले थे। इसकी वजह चीन में प्रोत्साहन उपाय, आकर्षक शेयर मूल्यांकन और घरेलू शेयर बाजार में शेयरों का मूल्यांकन अधिक होना है।वित्त मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक बाह्य क्षेत्र लगातार बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। यह बढ़ते पूंजी प्रवाह, स्थिर रुपये और संतोषजनक विदेशी मुद्रा भंडार से पता चलता है। इस साल सितंबर में विदेशी मुद्रा भंडार 700 अरब डॉलर का आंकड़ा पार कर गया था। इसके साथ ही भारत सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा भंडार वाले टॉप चार देशों में शामिल हो गया। इस रिपोर्ट में नौकरी बाजार के संबंध में कहा गया है कि विनिर्माण क्षेत्र में नौकरियों में वृद्धि जारी है। यह वित्त वर्ष 2022-23 के लिए उद्योगों के वार्षिक सर्वेक्षण से भी पता चलता है। वहीं, कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) के तहत नए लोगों के जुड़ने, क्रय प्रबंधकों के रोजगार उप-सूचकांक और नौकरी जॉब स्पीक इंडेक्स संगठित क्षेत्र में रोजगार सृजन का संकेत देते हैं। हालांकि, कुछ रिपोर्ट में कृत्रिम मेधा (एआई) से कर्मचारियों के नौकरी जाने की बात आई है। ऐसे में इस पर नजर रखने की जरूरत है।

रूही की नई मैम

रुही नाइंथ क्लास में पढ़ती है और स्टडीज के अलावा वो स्पोर्ट्स में भी बहुत अच्छी है। वो इसी स्कूल में नर्सरी से पढ़ रही है। इसलिए उसे यहां के टीचर्स भी अच्छी तरह जानते हैं। इस साल स्कूल में एक नई टीचर आई हैं 'वैशाली मैम' जो रुही की क्लास टीचर भी हैं। वैशाली मैम ही उसे साइंस भी पढ़ाएंगी। रुही को पता नहीं क्यों कुछ ही दिनों में ऐसा लगने लगा जैसे वैशाली मैम उसे पसंद नहीं करतीं। उसे और भी यकीन हो गया जब क्लास में उसकी 'खास' फ्रेंड्स ने भी उसे यही कहा। इतने में ही स्कूल में एक इंटर स्कूल कॉम्पिटीशन आयोजित हुई। रुही ने सारी ही प्रतियोगिताओं में अपना नाम लिखवा दिया।

इस बार साधना मैम प्रोग्राम की इंचार्ज नहीं थीं जो कि ज्यादातर होती थीं और वे बिना पूछे ही रुही का नाम भी हर कॉम्पिटीशन में लिख देती थीं। इस बार इंचार्ज वैशाली मैम थीं। फिर अचानक कॉम्पिटीशन के कुछ दिन पहले असेंबली में प्रिंसीपल मैम ने बताया कि कोई भी स्टूडेंट ज्यादा से ज्यादा दो प्रतियोगिताओं में भाग ले सकता है और उन्होंने इस आइडिया के लिए वैशाली मैम को थैंक्स कहा। रुही को लगा जरूर वैशाली मैम ने उसके खिलाफ ये चाल चली होगी। रुही को इस बात से और भी बुरा लगा कि क्लास में सबसे पीछे बैठने वाली आंजना और सबसे मस्तीखोर पीयूष को वैशाली मैम ने स्ट्रिक्टली इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए कहा था। जबकि वो दोनों तो कभी किसी चीज में पार्टिसिपेट करते ही नहीं। रुही की 'खास' फ्रेंड्स ने इस बार भी उसके साथ मिलकर वैशाली मैम को बहुत बुरा-भला कहा।

अभी कॉम्पिटीशन शुरू होने में चार-पांच दिन बाकी थे कि एक दिन वैशाली मैम ने रुही को लंच ब्रेक में स्टाफ रूम में मिलने को कहा। बेमन से वह स्टाफ रूम में दाखिल हुई। वहां मैम के साथ पीयूष और आंजना भी थे। अब तो रुही का शक पक्का हो गया। उसने बहुत गुस्से में कहा- 'मे आय कम इन मैम।'

'ओह.रुही, प्लीज कम इन।'' वैशाली मैम मुस्कुराते हुए बोलीं और उसका चेहरा देखकर उन्होंने तुरंत पूछा भी- 'क्या बात है रुही, तुम्हारी तबियत तो ठीक है न? कोई प्रॉब्लम तो नहीं?' रुही को लगा मैम उसे और चिढ़ा रही हैं। वह गुस्से में कुछ बोल नहीं पाई तो मैम आगे बोलीं। 'रुही मैं चाहती हूं कि पीयूष और आंजना को तुम गाइड करो। क्योंकि इस मामले में तुम स्कूल में सबसे ज्यादा एक्सपीरियंस्ड और टैलेंटेड हो।' रुही का गुस्सा और भी बढ़ था। 'मुझे लगता है तुमसे बेहतर गाइडेंस इन्हें किसी का भी नहीं मिल सकता.'क्यों नहीं मैम। आप कहें तो मैं बाकी कॉम्पिटीशन्स में से भी अपना नाम हटा लेती हूं। फिर इनको चीटिंग करके प्राइज दिलाने के लिए तो आप हैं ही।' मैम की बात के बीच में ही गुस्से में चिल्लाते हुए रुही ने कहा।

'रुही- ये तुम क्या बोल रही हो बेटा?' चौंकते हुए वैशाली मैम ने कहा। 'रहने दीजिए मैम, मैं सब जानती हूं। पहले दिन से ही आपको मैं पसंद नहीं हूं। आप मेरे टैलेंट से जलती हैं। इसलिए मेरे हर काम में हर्डल्स खड़े कर रही हैं.पहले आपने मेरा नाम कॉम्पिटीशन्स में से हटवाया और अब इस बेवकूफ आंजना और स्टूपिड पीयूष को मेरे अगेंस्ट खड़ा कर रही हैं.जबकि.रुही और भी आगे बोलती लेकिन मैम ने उसे थोड़ी कड़क आवाज में टोकते हुए कहा- 'रुही.पहले शांत हो जाओ और यहां बैठो।' मैम की आवाज और आंखें देखकर रुही एकदम सकपका गई लेकिन चेयर पर बैठने की बजाय खड़ी रही।

यहां बैठो रुही।'' मैम ने फिर कहा। रुही बैठ गई। 'देखो रुही, तुमने मुझे गलत समझा है बेटा।' मैम की आवाज अब पहले की ही तरह शांत थी। उन्होंने पानी का गिलास रुही की ओर बढ़ाया। रुही अब थोड़ी शांत हो गई थी। 'तुम्हें ऐसा पता नहीं क्यों लगा बेटा कि मैं तुम्हें नापसंद करती हूं। जबकि इस स्कूल में आने के कुछ दिनों बाद से ही मैं तुम्हारी फैन बन चुकी हूं।' 'पप़्पर फिर आपने क्लास में हमेशा मुझे इग्नोर क्यों किया मैम?' रुही ने पूछा।

'नहीं बेटा मैंने कभी तुम्हें इग्नोर नहीं किया। हां, मैं इस बात से चिंतित जरूर थी कि तुम्हारे अचीवमेंट्स और 'खास' फ्रेंड्स कहीं तुम्हारे अंदर ओवरकॉन्फिडेंस और घमंड न भर दें। इसलिए मैं क्लास के बीच में तुम्हें इंडायरेक्टली वॉर्न करती थी। ताकि तुम सही और गलत फ्रेंडशिप को समझ सको। दो कॉम्पिटीशन में पार्ट लेने का नियम बनाने की सलाह मैंने इसलिए दी ताकि ज्यादा स्टूडेंट्स को मौका मिल पाए। इसके लिए मुझे तुम जैसे हर बच्चे की मदद लेनी है ताकि हम बाकी बच्चों को भी अच्छी चीजों में इन्वॉल्व कर पाएं। क्या तुम अब भी मुझे गलत समझती हो?' वैशाली मैम ने सवाल किया और इतने में प्यून रमेश भाई ने आकर बताया कि मैम को प्रिंसीपल मैम बुला रही हैं। वैशाली मैम पीयूष और आंजना के साथ रुही को छोड़कर क्लास से बाहर चली गईं।

सोच में डूबी रुही जैसे अचानक गहरी नींद से जागी। उसके दिमाग में चल रहा कन्फ्यूजन अब खत्म हो चला था। उसने घबराई सी खड़ी आंजना और भौंचक खड़े पीयूष की ओर देखा और कहा- 'मैम ने सही कहा है। ये हमारे स्कूल की रेप्यूटेशन का सवाल है। और अब मेरी भी। इसलिए आज छुट्टी के बाद तुम दोनों मुझे रिक्रिएशन रूम में मिलोगे। हम जमकर प्रैक्टिस करेंगे.लेकिन उससे पहले मुझे वैशाली मैम को सॉरी बोलना है।' इतना कहकर खुश-खुश सी रुही स्टाफ रूम से बाहर निकल कर तेजी से प्रिंसीपल मैम के रूम की तरफ बढ़ गई।

वैशाली मैम मुस्कुराते हुए बोलीं और उसका चेहरा देखकर उन्होंने तुरंत पूछा भी- 'क्या बात है रुही, तुम्हारी तबियत तो ठीक है न? कोई प्रॉब्लम तो नहीं?' रुही को लगा मैम उसे और चिढ़ा रही हैं।

इंडोनेशिया में लाशों के साथ मनाया जाता है त्योहार

दुनिया के अलग-अलग देशों में लोग कई तरह के रीति-रिवाज को मानते हैं और अजीबोगरीब तरीकों से उत्सव मनाते हैं। लेकिन आज हम आपको एक ऐसे त्योहार के बारे में बताएंगे, जो लाशों के साथ मनाया जाता है। जी हां, इस त्योहार के बारे में जानकर आपको थोड़ा अजीब जरूर लगेगा, लेकिन यह बात बिल्कुल सही है। इंडोनेशिया की एक खास जनजाति इस त्योहार को मनाती है, जिसे मानेने फेस्टिवल के तौर पर जाना जाता है।

मानेने फेस्टिवल की शुरुआत आज से लगभग 100 साल पहले हुई थी। इसे मनाने के पीछे बरप्पू गांव के लोग एक बहुत ही रोमांचक कहानी सुनाते हैं। लोगों के मुताबिक, सौ साल पहले गांव में टोराजन जनजाति का एक शिकारी जंगल में शिकार के लिए गया था। पोंग रुमासेक नाम के इस शिकारी को बीच जंगल में एक लाश दिखी। सड़ी-गली लाश को देखकर रुमासेक रुक गया। उसने लाश को अपने कपड़े पहनाकर अंतिम संस्कार किया।

इसके बाद से रुमासेक की जिंदगी में काफी अच्छे बदलाव आए और उसकी बदहाली भी खत्म हो गई। इस घटना के बाद से ही इसके बाद से रुमासेक की जिंदगी में काफी अच्छे बदलाव आए और उसकी बदहाली भी खत्म हो गई। इस घटना के बाद से ही टोराजन जनजाति के लोगों में अपने पूर्वजों के लाश को सजाने की प्रथा शुरू हो गई। मान्यता है

कि लाश की देखभाल करने पर पूर्वजों की आत्माएं आशिर्वाद देती हैं।

इस त्योहार को मनाने की शुरुआत किसी के मरने के बाद ही हो जाता है। परिजन के मौत हो जाने पर उन्हें एक ही दिन में न दफना कर, बल्कि कई दिनों तक उत्सव मनाया जाता है। यह सब चीजें मृत व्यक्ति के खुशी के लिए की जाती हैं और उसे अगली यात्रा के लिए तैयार किया जाता है। इस यात्रा को पुया कहा जाता है। इस त्योहार के दौरान परिजन बैल और भैंसें जैसे जानवरों को मारते हैं और उनके सींगों से मृतक का घर सजाते हैं।

मान्यता है कि जिसके घर पर जितनी सींगें लगी होंगी, अगली यात्रा में उसे उतना ही सम्मान मिलेगा।

इसके बाद लोग मृतक को जमीन में दफनाने की जगह लकड़ी के ताबूत में बंद करके गुफाओं में रख देते हैं। अगर किसी शिशु या 10 साल से कम उम्र के बच्चे की मौत हो तो उसे पेड़ की दरारों में रख दिया जाता है। मृतक के शरीर को कई दिन तक सुरक्षित रखने के लिए कई अलग-अलग तरह के कपड़ों में लपेटा जाता है। मृतक को कपड़े ही नहीं फैशनेबल चीजें भी पहनाई जाती हैं। सजाने-धजाने के बाद लोग मृतक को लकड़ी के ताबूत में बंदकर पहाड़ी गुफा में रख देते हैं। साथ में लकड़ी का एक पुतला रखा रक्षा करने के लिए रखा जाता है, जिसे ताउ-ताउ कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि ताबूत के अंदर रखा शरीर मरा नहीं है, बल्कि बीमार है और जब तक वो सोया हुआ है, उसे सुरक्षा चाहिए होगी।

इसके बाद हर 3 साल पर लाशों को फिर से बाहर निकाला जाता है और उसे दोबारा नए कपड़े पहनाकर तैयार किया जाता है। इतना ही नहीं लोग लाशों के साथ बैठकर खाना भी खाते हैं। लाशों से उतरे हुए कपड़ों को परिजन पहन भी लेते हैं। कई सालों के बाद जब लाश हड्डियों में बदलने लगती है, तो उसे जमीन में दफनाया जाता है।

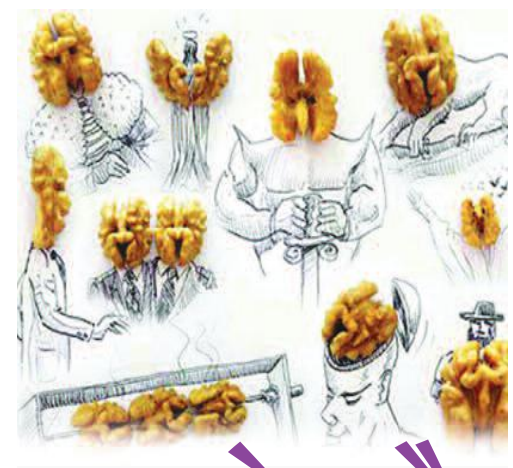

अखरोट और पॉपकॉर्न के आर्ट पीस बनाता एक कलाकार

अपने आस-पास मौजूद साधनों से कलाकृतियां बना डालना हमेशा से आर्टिस्ट्स का शौक रहा है।

अपने आस-पास मौजूद साधनों से कलाकृतियां बना डालना हमेशा से आर्टिस्ट्स का शौक रहा है। पेड़ों की पत्तियों, फूलों, लकड़ियों, मिट्टी, सब्जियों, बेकार पड़े वायर के पीस, फलों, छिलकों, और ऐसी न जाने कितनी ही चीजों से कलाकार आर्ट पीस बना डालते हैं। ऐसे ही एक कलाकार हैं विक्टर न्यूनेस, जो पॉपकॉर्न, अखरोट, पत्तागोभी और न जाने कितनी ही चीजों से रच डालते हैं खूबसूरत तस्वीरें।

पत्ते, फल और ब्रेड

विक्टर के आर्ट की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वो हमें अपने आस-पास मौजूद छोटी-छोटी चीजों में भी कला का रूप देखने की सीख देते हैं और वो भी बहुत ही सरल तरीके से। विक्टर की पेंटिंग्स या आर्ट पीस में मुख्यत: सामान्य पेन्सिल से बने स्केच होते हैं जिनके साथ वो अपने आस-पास मौजूद चीजों को जोड़कर पूरी कहानी बना डालते हैं। जैसे पॉपकॉर्न से ही सिर, मुंह, बाल और दाढ़ी बनाकर। उनके बनाए स्केचेस जितने दमदार होते हैं उतने ही प्रॉप्स का यूज करने पर वो अनूठे बन जाते हैं। ब्रेड से लेकर बिस्किट, काजू, नूडल्स, कॉफी का फोम, आटे की लोई, चिप्स, वेफर्स आदि खाने की चीजों से लेकर कैंची, पेन के ढक्कन, कागज के खाली ग्लास और प्लेट, पेन्सिल को छीलकर निकली पंखुड़ियां, नट-बोल्ट्स, ड्रॉइंग पिंस,धागे और पौधों के पत्ते जैसे कई ऑब्जेक्ट्स को विक्टर कमाल के तरीके से यूज कर मन मोह लेते हैं।

आर्ट से है गहरा नाता

यूं 60 साल के विक्टर ब्राजील के एक रिटायर आर्ट डायरेक्टर हैं लेकिन कला के प्रति उनका पैशन हर उम्र के व्यक्ति को प्रेरणा देता है। खास बात ये है कि उन्होंने कुछ ही समय पहले फेसबुक पर अपना अकाउंट बनाया और उस पर अपने इन स्पेशल आर्ट पीसेस को पोस्ट करना शुरू किया। आज वो रोज कई सारे पीसेस ड्रॉ करते हैं और फेसबुक पर पोस्ट करते हैं। और भी मजेदार बात यह है कि विक्टर कॉफी पीते समय या खाना खाते समय भी चीजों के कलात्मक रूप के बारे में सोचते रहते हैं, इससे उन्हें रोज नए प्रयोग करने की प्रेरणा जो मिलती है।

अमेजन की रहस्यमयी नदी

पेरू में मौजूद इस रहस्यमय नदी की खोज भूवैज्ञानिक आंद्रे रूजो ने साल 2011 में की थी। मयानतुयाकू नामक इस नदी की खोज की कहानी बड़ी ही दिलचस्प है, जिसके बारे में आंद्रे रूजो ने बताया है। दरअसल, बचपन से ही रूजो ने ऐसी काल्पनिक नदियों की कहानियां सुन रखी थी, जो उन्हें आश्चर्य से भर देती थीं, लेकिन तब उन्हें इस बात का बिल्कुल भी अहसास नहीं था कि ऐसी नदी सच में होती है। आंद्रे रूजो के मुताबिक, जब वो बड़े हुए तो भी उबलती हुई नदी की कहानी हमेशा उनके दिमाग में रही। वो अक्सर ऐसा सोचते कि क्या ऐसा संभव है। यहां तक कि उन्होंने विश्वविद्यालय के अपने सहयोगियों, तेल, गैस और खनन कंपनियों से भी इस बारे में जानना चाहा, लेकिन सबका जवाब ना ही था। इसके अलावा अगर वैज्ञानिक तौर पर भी देखें तो ऐसा संभव ही नहीं है कि नदी का पानी हमेशा उबलता रहे, जब तक कि आसपास कोई सक्रिय ज्वालामुखी न हो।

निम्रत कौर

के साथ काम कर चुके हैं सुरभि ज्योति के पति, 5 साल पहले हुई थी पहली मुलाकात

सुरभि ज्योति ने अपने बॉयफ्रेंड सुमित सूरी से शादी की है. इन दोनों की मुलाकात 6 साल पहले एक म्यूजिक वीडियो की शूटिंग के दौरान हुई थी. तब से वे दोनों रिलेशनशिप में हैं. सुरभि ने कभी भी अपना रिश्ता छिपाने की कोशिश नहीं की. अक्सर अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर वो सुमित के साथ फोटो और वीडियो शेयर करते हुए नजर आती थीं. बहुत कम लोग जानते हैं कि सुरभि के पति सुमित एक एक्टर होने के साथ-साथ सफल प्रोड्यूसर भी हैं.अपने प्रोडक्शन हाउस 'द गुड हैंड्स' के तहत सुमित सूरी एडफिल्म्स, डिजिटल फिल्म्स, ब्रांड वीडियो और कॉर्पोरेट वीडियो प्रोड्यूस करते हैं. सुमित ने 11 साल पहले एरोस सिनेमा की फिल्म 'वार्निंग' से अपने करियर की शुरुआत की थी. अपने करियर फ्रेम में सुमित ने अब तक 6 फिल्में की हैं, आखिरी बार उन्हें विक्रांत मैसी और कृति खरबंदा की फिल्म '14 फेरे' में देखा गया था. अल्ट बालाजी की वेब सीरीज 'द टेस्ट केस' में सुमित निम्रत कौर के साथ नजर आए थे. ये वही निम्रत कौर हैं जिनकी अभिषेक बच्चन के साथ अफेयर की अफवाहें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं. निम्रत की 'द टेस्ट केस' में सुमित ने कैप्टन रंजीत सुजरेवाल का किरदार निभाया था.

सोशल मीडिया से दूर रहना पसंद करते हैं सुमित

सुमिल सूरी भले ही अपनी एक्टिंग से ऑनलाइन ऑडियंस का खूब मनोरंजन करते हों, लेकिन निजी जिंदगी में वो सोशल मीडिया से दूर रहना पसंद करते हैं और यही वजह है कि इंस्टाग्राम, फेसबुक और ट्विटर पर उनका कोई अकाउंट नहीं है. दरअसल सुरभि और सुमित 2024 के मार्च महीने में ही शादी करने वाले थे. सूत्रों की मानें तो दोनों ने राजस्थान के सवाई माधोपुर में शादी करने का फैसला लिया था, लेकिन फिर वेन्यू से जुड़ी दिक्कत की वजह से उन्हें अपनी शादी पोस्टपोन करनी पड़ी. फिर दोनों ने हिमाचल के जिम कॉर्बेट में शादी करने का फैसला लिया.

करण सिंह ग्रोवर के साथ सुरभि ने किया था डेब्यू

सुरभि ज्योति की बात करें तो पंजाबी इंडस्ट्री से अपने करियर की शुरुआत करने वाली सुरभि ज्योति ने करण सिंह ग्रोवर के टीवी सीरियल 'कुबूल है' से हिंदी इंडस्ट्री में अपना डेब्यू किया था. इश्कबाज, नागिन, कोई लौट के आया है जैसे कई टीवी शोज में वो अपना कमाल दिखा चुकी हैं.

अजय देवगन-कार्तिक आर्यन तो कुछ नहीं, दिवाली के असली डॉन तो अमिताभ बच्चन हैं

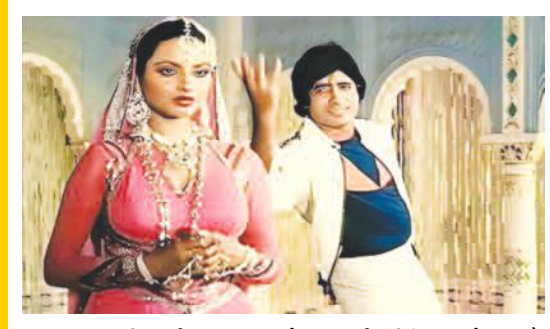

इस साल दिवाली पर अजय देवगन की 'सिंघम अगेन' और कार्तिक आर्यन की 'भूल भुलैया 3' रिलीज होने वाली है, इन दोनों फिल्मों के क्लैश को लेकर दर्शक काफी एक्साइटेड हैं. हालांकि, जहां लोग इन दोनों फिल्मों की कमाई के बारे में सोच रहे हैं, वहीं एक वक्त था जब दिवाली के मौके पर केवल अमिताभ बच्चन का ही राज चलता था. उन्होंने कई सारी बेहतरीन फिल्में दी हैं, इसके साथ ही साथ उनकी फिल्मों ने जमकर कमाई भी की है.अमिताभ बच्चन की फिल्म 'मुकद्दर का सिकंदर' दिवाली के मौके पर ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी. इस फिल्म में रेखा, विनोद खन्ना और राखी जैसे स्टार्स भी शामिल थे. इस फिल्म को प्रकाश मेहरा ने डायरेक्ट किया था, इस फिल्म के गाने भी काफी फेमस हुए थे. 'सलाम-ए-इश्क मेरी जान' भी इसी फिल्म का गाना है. यह फिल्म साल 1978 में रिलीज हुई थी, मुकद्दर का सिकंदर उस साल की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म थी. इतनी ही नहीं 'शोले' और 'बॉबी' जैसी शानदार फिल्मों के बाद ये तीसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म थी.

46 साल पहले आई 'मुकद्दर का सिकंदर'

'मुकद्दर का सिकंदर' 1.3 करोड़ रुपए की बजट पर बनी थी, जिसने 9 करोड़ रुपए की कमाई की थी. फिल्म में वर्ल्ड वाइड 22 करोड़ रुपए का कलेक्शन किया था. इस फिल्म ने कई सारे फिल्मफेयर अवॉर्ड भी जीते हैं. इस फिल्म ने 7 साल तक अपना रिकॉर्ड कायम रखा, हालांकि अमिताभ ने इतने सालों के बाद खुद ही अपना रिकॉर्ड तोड़ दिया. साल 1985 में 'मर्द' फिल्म आई जो कि 'मुकद्दर का सिकंदर' के बाद दिवाली पर सबसे ज्यादा लाभ कमाने वाली फिल्म बनी.

7 साल बाद 'मर्द' ने तोड़ दिया रिकॉर्ड

'मर्द' फिल्म के बजट की बात करें तो, ये फिल्म केवल 1 करोड़ रुपए में बनाई गई थी, जिसने बॉक्स ऑफिस पर 8 करोड़ रुपए की कमाई की थी. मर्द का रिकॉर्ड 17 साल के बाद शाहरुख खान ने तोड़ दिया.

क्या गुपचुप शुरू होने जा रही है आलिया भट्ट की फिल्म? रणबीर कपूर और विकी कौशल कहां चले?

रणबीर कपूर और विकी कौशल दूसरी बार एक साथ किसी फिल्म में दिखने वाले हैं. इस फिल्म का नाम है 'लव एंड वॉर'. इससे पहले दोनों 'संजू' में साथ दिखे थे. 'लव एंड वॉर' में आलिया भट्ट भी हैं. इसे संजय लीला भंसाली बना रहे हैं.हाल ही में रणबीर और विकी को एयरपोर्ट पर स्पॉट किया गया. दोनों मुंबई से बाहर जा रहे हैं. ऐसा कहा जा रहा है कि वो दोनों 'लव एंड वॉर' फिल्म की शूटिंग के लिए गए हैं.

क्या शुरू होने जा रही है 'लव एंड वॉर' की शूटिंग ?

दरअसल पिंकविला ने वीडियो डाला है. इसमें विकी कौशल मूछ वाले लुक में दिख रहे हैं. रणबीर अपने डेनिम लुक में हैं. लोग अंदाजा लगा रहे हैं, ये दोनों 'लव एंड वॉर' की शूटिंग के लिए जा रहे हैं. पर ये कहां जा रहे हैं, इसका किसी को अनुमान नहीं है. संभव है दोनों का एक साथ अलग-अलग जाना एक इत्तफाक हो. इसका फिल्म से कोई लेना-देना न हो. हालांकि कुछ दिन पहले खबर आई भी थी कि भंसाली फिल्म को अक्टूबर में शुरू करना चाहते हैं. लेकिन बीते दिनों कहा गया था कि फिल्म की शूटिंग पोस्टपोन कर दी गई है.

क्या पोस्टपोन हो गई है फिल्म की शूटिंग ?

बॉलीवुड हंगामा ने कुछ दिन पहले एक खबर छापी थी. इसमें बताया गया था कि 'लव एंड वॉर' की शूटिंग अब नवंबर के एंड में या फिर दिसंबर में होगी. इसका कारण फिल्म के सेट को बताया गया. ऐसा कहा गया था कि मुंबई में बारिश के चलते फिल्म का सेट डैमेज हो गया था. इसे दोबारा बनाया जा रहा है. इसके बनने तक फिल्म की शूटिंग टाल दी गई है. ऐसा कहा जा रहा है कि फिल्म 7 नवंबर को फ्लोर पर आ सकती है.

हो सकता है कि भंसाली ने सोचा हो, जब तक मुंबई वाला सेट रेडी नहीं होता, फिल्म की शूटिंग दूसरी लोकेशन्स पर कर लेते हैं. लेकिन अभी इस बात का भी अंदाजा नहीं कि फिल्म के लिए कोई दूसरी लोकेशन चुनी भी गई है या नहीं. क्या 'लव एंड वॉर' को पूरी तरह से मुंबई में शूट किया जाएगा या कहीं बाहर भी. इसलिए फिलहाल पुख्ता तौर पर कुछ कह पाना संभव नहीं है. रणबीर और विकी शूट के लिए गए हैं या नहीं, ये कह पाना बहुत मुश्किल है.बहरहाल, 'लव एंड वॉर' एक लव ट्रायंगल फिल्म है. इसकी रिलीज डेट 20 मार्च 2026 बताई जा रही है.

'जल्दी से एक नन्ही परी ले आओ'

सोनाक्षी सिन्हा

की फोटो देख फैंस कर रहे ऐसी बातें

बॉलीवुड एक्ट्रेस सोनाक्षी सिन्हा ने साल 2024 में शादी करने का फैसला लिया. उनका ये फैसला कई वजहों से चर्चा में रहा था. इसकी दो वजहें थीं. पहली वजह ये थी कि उनके घरवाले इस रिश्ते से ज्यादा खुश नजर नहीं आ रहे थे और एक्ट्रेस ने अपने परिवार के खिलाफ जाकर ये फैसला लिया. वहीं कुछ लोग इस वजह से भी शॉक्ड हुए थे क्योंकि एक्ट्रेस ने अपने अबतक के करियर में पीक पर रहकर ये फैसला लिया. फिलहाल सोनाक्षी सिन्हा अपने इस फैसले से बहुत खुश हैं और हसबेंड जहीर इकबाल संग अपनी पर्सनल लाइफ एंजॉय कर रही हैं. हाल ही में एक्ट्रेस की कुछ तस्वीरें वायरल हो रही हैं जिसमें उन्हें देखकर लोग उनकी प्रेग्नेंसी के कयास लगा रहे हैं.

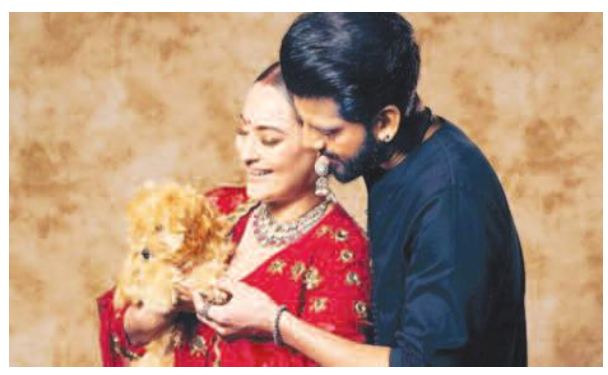

वायरल हो रही हैं सोनाक्षी सिन्हा की फोटोज

सोनाक्षी सिन्हा और जहीर इकबाल ने इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरें शेयर की हैं. ये तस्वीरें दिवाली सेलिब्रेशन की नजर आ रही हैं. फोटोज के साथ उन्होंने कैप्शन में लिखा- Guess the pookie. इस फोटो में उनके साथ पेट डॉग भी नजर आ रहा है. जहां एक तरफ कुछ लोग फोटोज पर तारीफ कर रहे हैं वहीं दूसरी तरफ कुछ लोगों का ध्यान सोनाक्षी सिन्हा की ओर गया है और वे उनके प्रेग्नेंट होने का कयास लगा रहे हैं. कुछ लोग तो सोनाक्षी को अभी से बधाई भी देते नजर आ रहे हैं. वैसे सोनाक्षी सिन्हा की बात करें तो एक्ट्रेस की ओर से इस बारे में कोई आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है. सिर्फ फोटोज देखकर ही लोग कयास लगा रहे हैं.

सोनाक्षी सिन्हा को लोगों ने दी बधाई

सोशल मीडिया पर लोग सोनाक्षी को बधाई दे रहे हैं और उनके स्वस्थ्य होने की कामना कर रहे हैं. एक शख्स ने कैप्शन में लिखा- प्रेग्नेंसी पर आपको बधाई. एक दूसरे शख्स ने लिखा- नन्हें बच्चे को जल्दी पाने की आपको बधाई. एक अन्य शख्स ने लिखा- आने वाले बच्चे की आपको बधाई. एक दूसरे शख्स ने सोनाक्षी सिन्हा की पोस्ट पर रिएक्ट करते हुए लिखा- सोना तो प्रेग्नेंट लग रही है. एक अन्य शख्स ने लिखा- गार्जियस कपल के साथ एक क्यूट पप्पी. एक शख्स ने लिखा- नजर ना लगे दोनों को.

रॉंची और दिल्ली के साथ-साथ
अब
रायपुर (छत्तीसगढ़)
से
प्रकाशित
आदिवासी एक्सप्रेस
आमजन का एक मात्र हिंदी दैनिक अख़बार

सत्य और निष्पक्ष समाचारों के लिए पढ़ें !

सम्पर्क सूत्र :-
aadivasiexpress@gmail.com
birsatimes@gmail.com
8084674042
6202611859
8084674042